नागरी संगम

(आचार्य विनोबा भावे की सत्प्रेरणा से स्थापित नागरी लिपि परिषद् की मुख्यपत्रिका)

वर्ष 33 अंक 130 अप्रैल–जून–2011

नागरी लिपि परिषद्

19, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-110002

यू. के. क्षेत्रीय हिन्दी सम्मेलन में बर्मिंघम (इंग्लैण्ड) में भारत के प्रतिनिधि विद्वान
बाएं से प्रो. कृष्णदत्त पालिवाल, डॉ. परमानन्द पांचाल तथा
श्री केसरी नाथ त्रिपाठी (पूर्व विधान सभा अध्यक्ष, उ0प्र0) पीछे बैठी है
श्रीमती उषा राजे सक्सेना (लंदन) दिनांक 25-6-2011

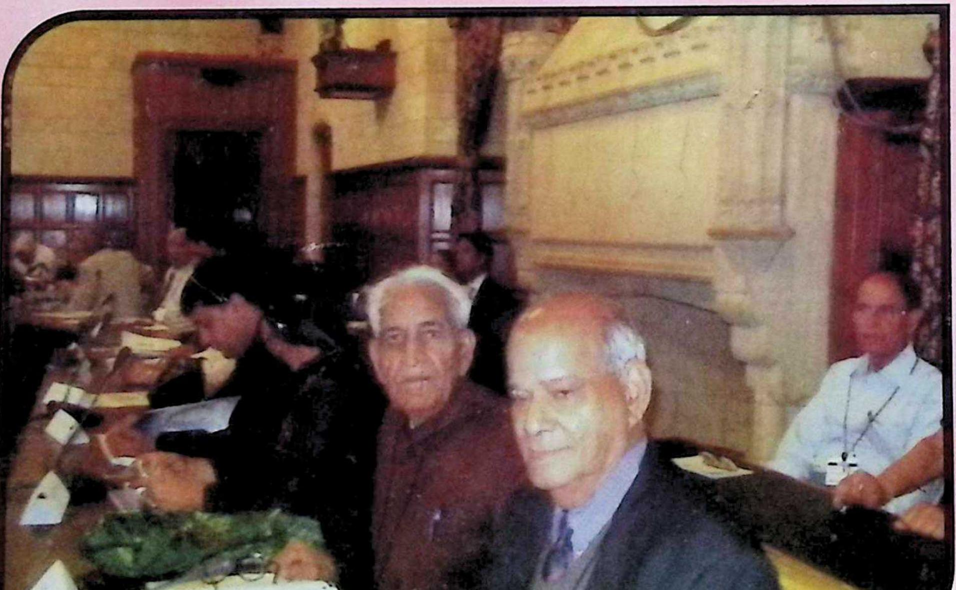

हाउस ऑफ कॉमन्स (लंदन) में कथा यू. के. द्वारा आयोजित समारोह में भाग ले रहे हैं
डॉ0 परमानन्द पांचाल तथा प्रो0 कृष्णदत्त पालिवाल (दिनांक 27-6-2011)

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय
भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

नागरी - संगम

http://dli.cdacnoida.in/nagri_sangam/

अध्यक्ष, सम्पादक मण्डल :
श्री सी. वी. चारी

प्रधान सम्पादक :
डॉ. परमानन्द पांचाल

सम्पादक :
डॉ. आनन्द स्वरूप पाठक

प्रबन्ध सम्पादक :
श्री ओम प्रकाश आचार्य

कार्यालय
नागरी लिपि परिषद
19, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-*110002*
फोन / फैक्स : ***23329841***
Email : nagarilipi@gmail.com

वार्षिक चंदा : ₹ *100/-* चंदा (विदेश के लिए *4* डालर)
एक प्रति : ₹ *25/-* रू.

आजीवन सदस्यता शुल्क : ₹ *1000/-* मात्र
(विदेश के लिए *20* डालर)

(नागरी संगम में प्रकाशित लेखों के सभी विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। वे विचार लेखक के अपने हैं।)

अनुक्रमणिका

1. नागरी संगम 2
2. सम्पादकीय 3
3. विश्व की सर्वोत्तम लिपि, देवनागरी लिपि
   –डॉ. परमानंद पांचाल 5
4. ईस्ट इंडिया कम्पनी शासन काल में देवनागरी लिपि स्थिति और विश्लेषण
   –प्रो0 रामनिरंजन परिमलेन्दु 11
5. देवनागरी की वैज्ञानिकता बनाम व्यावहारिकता
   –मोहसिन ख़ान 18
6. सामाजिक समरसता के आविर्भाव और विकास में देवनागरी लिपि की भूमिका
   –डॉ. तिलक सिंह 22
7. सूचना प्रौद्योगिकी और नागरी लिपि
   –डॉ. हाशमबेग मिर्ज़ा 26
8. विश्र्वलिपि के रूप में देवनागरी लिपि
   –प्रा. सुरेंद्र चंद्रकांत हेरकल 30
9. दक्षिण भारत की प्रादेशिक लिपियाँ
   –डॉ0 इसपाक अली 32
10. नागरी संरक्षण देश हित में
   –डॉ0 राज सक्सेना 35
11. नागरी-संगम लेखानुक्रमणिका 38
12. सूचना प्रौद्योगिकी में नागरी लिपि के फिसलते कदम
   –डॉ. ओम विकास 40
13. विश्वलिपि के रूप में देवनागरी लिपि
   –शिवाक्षमाला जानकीराम सुरंगे 45
14. आन्तर भारती 47
15. नये साथी 48
16. संगोष्ठी 49
17. पुस्तक समीक्षा 50
18. समाचार सार 52
19. आपके पत्र 55

नागरी संगम

देश की सभी भाषाएं नागरी लिपि में भी लिखी जाएँ।

वर्ष 33 अंक 130 अप्रैल-जून, 2011

राष्ट्रीय एकता का निदान – देवनागरी

विश्व लिपि के बीच
उषा सी विराजमान
भ्राजमान रूप अति आकृति उजागरी।।
भारत की शान है
निदान राष्ट्र एकता का,
भव्य पहचान जिसकी है गुण आगरी।।
आज विज्ञान भी
प्रधान मानता है जिसे
भाषाविद जानते प्रभाव शक्ति सागरी।।
'मधुरेश' मंजू मुसकान
भाषा नागरी की
सरल सौम्य लिपि देवनागरी।।1।।
आज से नहीं है,
आदिकाल से रही है यही
देवलोक में भी इसका ही नित्य नाम है।
संस्कृत हिन्दी
पालि – प्राकृत की बात नहीं
जाने कितनी ही भाषा बोलियों का धाम है।
उपमान एक भी
न ढूढे मिलता है कहीं
ध्वनि के समान होती आकृति प्रकाम है।
मंजू नागरी सी
गुण-आगरी है 'मधुरेश'
देवनागरी तो लिपि – लोक में ललाम है।2।।

भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'
सहकार संस्थान
ई-64, सिविल लाइन्स उन्नाव, उ0 प्र.

"नागरी बढ़ेगी, परिवार बढ़ जायेगा"

पूर्वोत्तर बोली यदि अपनावें नागरी को,
राष्ट्र हो समृद्ध, एक खाता जुड़ जायेगा।
कोंकणी, खासी, गारो, मूरिया, असमिया का,
कश्मीरी, बांग्ला का रूख मुड़ जायेगा।
अंगनामी, जयन्तिया, मैतई, लुसाई सभी,
तेलगू, तमिल, बोड़ो, मुण्ड़ा मुड़ जायेगा।
लेपचा, नमेतिया का जौनसिरि, खोदूबू का,
देवनागरी से नित नाता जुड़ जायेगा।

(2)

डोगरी, मलयालम, पंजाबी, नेपाली का,
इम्फाल, तिब्बत का प्यार बढ़ जायेगा।
मोनपा या किठयोली, आइमोल, चीरू, जाऊ,
कुकी, मैतई 'नेह-द्वार' बढ़ जायेगा।
अटक से कटक बीच मिजो, खारम, मोनपाका,
पुरुम का अनालका, निखार बढ़ जायेगा।
कुकी, कार्बी, नगामी, माओ, ककचिङ, राभा,
नागरी बढ़ेगी परिवार बढ़ जायेगा।

डॉ0 ब्रजपालसिंह संत
दिल्ली, मो. 9313074694

सम्पादकीय

विश्व में हिंदी बढ़ रही है और यह विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा मानी जाती हैं, फिर भी स्थिति यह है कि लेखन में हिंदी संकुचित हो रही हैं। या यूं कहिये की हिंदी बोली अधिक जाती है किंतु लिखी कम जाती है। कारण यह है कि हम अपने दैनिक कार्यों में नागरी लिपि का प्रयोग कर रहें है। वस्तुस्थिति यह है कि विज्ञापनों, साइनबोर्डो और विशेष रूप से निजी क्षेत्र के व्यवसायों में रोमन लिपि का ही अधिक प्रयोग हो रहा है। यह स्थिति विदेशी कम्पनीयों के आने से अधिक पैदा हुई। इसका एक कारण सूचना-प्रौद्योगिकी के विकास के साथ कम्प्यूटर का प्रवेश भी माना जा रहा है। जबकि कम्प्यूटर की कोई भाषा नहीं होती, वह किसी भी भाषा और लिपि में अपना काम कर सकता है। यह हमारी अपनी भाषा एवं लिपि के प्रति हीन भावना ही है, कि हम अपनी भाषा और लिपि का प्रयोग करने से कतराते है। आप भारत सरकार के किसी भी कार्यालय में जाएं या किसी व्यावसायिक प्रतिष्ठान में जाए, वहां आगन्तुकों के रजिस्टर में हस्ताक्षर और पते अधिकतर रोमन लिपि में ही मिलेंगे। क्या यह स्थिति हमारे राष्ट्रीय गौरव के अनुकूल कही जा सकती है? मुझे याद है कि ट्रिनीडाड एवं टैबेगो में आयोजित पांचवें विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर वेंजुएला में भारत के राजदूत ने मुझ से कहा था कि आप नागरी लिपि का प्रचार व्यर्थ में कर रहे है, वास्तविकता यह है कि रोमन लिपि ही बढ़ रही है। आप दिल्ली के बाजारों में साइनबोर्डो को देखिए वें 90% से अधिक रोमन लिपि में है, और वास्तविक लिपि रोमन हो गई है।

बात यही खत्म नहीं होती। पिछले दिनों "दैनिक जनसत्ता" में दिल्ली के एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष का एक लेख छपा था, जिसमें उन्होंने हिंदी को रोमन लिपि अपनाने का परामर्श दिया था। मैंने उसका उत्तर भी उसी समाचार पत्र में दे दिया था। खेद है कि हिंदी विद्वानों की ओर से अपेक्षित प्रतिक्रिया दिखाई नहीं दी। नागरी लिपि की उपेक्षा की यह प्रवृति बढ़ती दिखाई देती हैं, क्योंकि हम अपने दैनिक जीवन में अपनी भाषा और अपनी लिपि का प्रयोग नहीं करते। मोबाईल फोन पर एस.एम.एस. करते है तो रोमन लिपि में हिंदी लिखते है। लंदन की प्रसिद्ध कहानी लेखिका श्रीमती उषा राजे सक्सेना ने लिखा था कि हंगरी और ट्रिनीडाड में आयोजित हिंदी संगोष्ठियों में विद्वानों ने जो हिंदी आलेख पढ़े वे रोमन लिपि में लिखे थे।

नागरी लिपि के प्रयोग में कुछ कठिनाइयाँ अवश्य हैं जिनमें से कुछ नीति गत है। भारत में बिकने वाले सभी कम्प्यूटरों में नागरी लिपि की व्यवस्था नहीं होती। यूनिकोड की मान्यता होने पर भी विभिन्न कम्पनियों के फांट अभी भी अलग-अलग है। इससे

इंटरनेट पर काम करने में कठिनाई होती है। साथ ही यह भी सत्य है कि सरकारी कार्यालयों में कम्प्यूटर पर नागरी लिपि की व्यवस्था तो कर दी गई हैं, किंतु काम सामान्यतः अंग्रेजी और रोमन में ही हो रहा है। आज बाजार में हिंदी टाइपिस्ट बड़ी कठिनाई से मिलते हैं, क्योंकि हिंदी में पत्र आदि लिखने की मांग ही नहीं दिखाई देती। सरकारी फार्म द्विभाषिक तो होते है किंतु उन्हें भरने वाले अंग्रेजी में ही भरते है।

रोमन के प्रति बढ़ती इस प्रवृति को रोकने में सरकार उदासीन दिखाई देती है, जबकि केन्द्रीय सरकार का दायित्व हिंदी और उसकी लिपि देवनागरी का प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना है। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे पास देवनागरी के रूप में विश्व की सबसे अधिक वैज्ञानिक और पूर्ण लिपि मौजूद है फिर भी, हम रोमन के गुलाम बने हुए हैं। हम अपनी भाषा और लिपि के प्रयोग से ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भारत को समुन्नत देशों की अग्रिम पंक्ति में ला सकते हैं। आवश्यकता मनोवृति को बदलने की है।

(डॉ. परमानंद पांचाल)

'नागरी संगम' अब इन्टरनेट पर भी

विश्व में नगारी लिपि की एक मात्र पत्रिका 'नागरी संगम' अब इन्टरनेट पर भी उपलब्ध हैं। कृपया देखें http://dli.cdacnoida.in/nagri_sangam/

कृपया पत्रिका के सम्बन्ध में अपने विचारों से भी अवगत कराएं।

आभार

नागरी लिपि परिषद सी-डेक, नोएडा के प्रति आभार व्यक्त करती है जिन्होंने परिषद की पत्रिका 'नागरी संगम' को इन्टरनेट पर उपलब्ध कराने में अपना प्रशंसनीय योगदान दिया है।

नागरी लिपि परिषद दास गुप्ता एंड एसोसिएट्स बी-4, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली के प्रति हृदय से आभारी है जो राष्ट्रहित में परिषद के वार्षिक लेखों की निःशुल्क जांच करने की कृपा कर रहे हैं। नागरी लिपि के प्रचार-प्रसार के कार्य में उनका यह योगदान निश्चय ही प्रशंसनीय है।

महामंत्री, नागरी लिपि परिषद

यू. के. रीजनल हिन्दी सैमिनार, बर्मिंघम (इंग्लैंड) में दिया गया भाषण

विश्व की सर्वोत्तम लिपि, देवनागरी लिपि

-डॉ. परमानंद पांचाल

हिंदी विश्व की सबसे बड़े गणराज्य भारत की राजभाषा है। इतने बड़े लोकतंत्र की राजभाषा होने के साथ-साथ हिंदी सरल, सरस, मीठी और लचीली भाषा है। हिंदी मात्र एक भाषा ही नहीं, भारतीय संस्कृति की सबल, समर्थ संवाहिका भी है। भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गांधी ने राष्ट्रभाषा के रूप में इसकी पहचान कर इसे अपने आंदोलन का एक अंग बनाया था। हिंदी भारत में ही नहीं, भारत के बाहर भी विश्व के अनेक देशों में बोली, समझी, सराही और पढ़ाई जाती है। हिंदी आज विश्व भाषा बन चुकी है और मानें तो विश्व की सबसे बड़ी भाषाओं में इसका स्थान दूसरा है। यह भारत से बाहर **मारिशस,** फीजी, गयाना, सूरीनाम, त्रिनाडाड एवं टोबेगो तथा दक्षिण अफ्रीका आदि में भी बोली जाती है। हम भारतीय, चाहे देश में रहें या विदेश में हमारे लिए अपने देश की भाषा, संस्कृति और अपनी मातृभाषा को जानना उस पर गर्व करना स्वाभाविक हैं। गांधी जी ने कहा भी था, बच्चे के स्वाभाविक विकास के लिए जिस प्रकार माँ का दूध आवश्यक है, उसी प्रकार उसके विकास के लिए मातृभाषा का ज्ञान आवश्यक है। फिर, हमारे बच्चे अपने देश की भाषा, हिंदी की शिक्षा क्यों न ग्रहण करें।

हमारे देश की महान संस्कृति का प्राचीन साहित्य प्रायः संस्कृत, पाली और अपभ्रंश में उपलब है। बौद्ध और जैन साहित्य भी अब नागरी लिपि में है। हमारे **महाकाव्य रामायण** और महाभारत, वेद और उपनिषद, गीता और पुराण सभी इस लिपि में मिलते हैं। यदि हमने नागरी लिपि की ओर ध्यान नहीं दिया तो हम अपनी महान संस्कृति की विरासत से कट जाऐंगे। हिंदी और नागरी से दूर रहकर हम अपने रीति-रिंवाजों, जीवन मूल्यों, रिश्ते-नातों तक को सही संदर्भ में नहीं समझ सकेंगे।

यह लिपि भारत की **प्राचीन लिपि ब्राह्मी से** निकली है, जो अत्यन्त वैज्ञानिक और पूर्ण लिपि है। भारत को गर्व है कि "शून्य" का आविष्कार भारत में हुआ, जो विश्व को भारत की सबसे बड़ी देन है। वैदिक गणित की महानता जग-प्रसिद्ध ही है। दशमलव प्रणाली का ज्ञान भी सर्वप्रथम भारत ने ही विश्व को कराया था। इस तथ्य को सभी पाश्चात्य विद्वानों ने स्वीकार किया है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक **अलबर्ट आइस्टीन** ने कहा था "हम भारतीयों के बहुत ऋणी" हैं जिन्होंने हमें गिनना सिखाया "अमीर खुसरो" (1235-1325) ने भी अपनी रचना "नूह-सिपहर" में इसका उल्लेख किया है।

आज जो **अन्तरराष्ट्रीय अंक** प्रणाली हमारे सामने हैं, वह भी भारतीय अंक प्रणाली का अन्तरराष्ट्रीय रूप है, जो भारत से अरब देशों में होते हुए यूरोप पहुंचा और सारे विश्व में प्रचलित हुआ।

हमें अपने इस महान साहित्य से परिचित रहने के लिए देवनागरी लिपि का ज्ञान कितना आवश्यक हैं, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। नागरी लिपि एक प्रकार से हमारे समस्त प्राचीन

वाङमय की कुंजी है। भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी की लिपि देवनागरी ही है।

भाषा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम है। किसी भी भाषा को चिह्नों या संकेतों द्वारा अंकित करने की व्यवस्थित प्रणाली ही लिपि है। लिपि एक प्रकार से दृश्य भाषा ही है। भाषा मौखिक एवं श्रव्य है, तो लिपि अंकित एवं दृश्य हैं। नागरी लिपि, जिसे देवनागरी लिपि भी कहा जाता है, इतनी सक्षम एवं पूर्ण है कि इसमें जो लिखा जाता है वही पढ़ा जाता है और जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। विश्व की ऐसी कौन सी भाषा या बोली है जो नागरी लिपि में नहीं लिखी जा सकती? यह क्षमता अन्य किसी लिपि में शायद ही हो। इस सम्बन्ध में राम चरितमानस के किष्किन्धा कांड का यह प्रसंग नागरी लिपि पर भी चरितार्थ होता है। जामवंत हनुमान जी को उनके अपार बल का अहसास कराते हुए कहते हैं –

"कवन सो काज कठिन जग माहीं।
जो नहिं होइ तात तुम्ह पाही।।

ऐसी ही क्षमता नागरी लिपि में भी है। सभी भाषाओं को नागरी में सरलता से लिखा और पढ़ा जा सकता है।

हम यहां नागरी लिपि के वैज्ञानिक गुणों पर कुछ विचार करेंगे।

देवनागरी लिपि की विशेषता –

आज विश्व में चार बड़े लिपि समूह हैं। अरबी, चीनी, रोमन, तथा ब्राह्मी समूह। नागरी लिपि ब्राह्मी लिपि परिवार की लिपि है।

वैसे तो संसार की कोई भी लिपि पूर्ण वैज्ञानिक अथवा आदर्श होने का दावा नहीं कर सकती। फिर भी, देवनागरी लिपि में अपेक्षाकृत वे गुण हैं, जो संसार की अन्य किसी लिपि में दुर्लभ हैं अनेक विदेशी विद्वानों ने भी नागरी लिपि को सर्वश्रेष्ठ लिपि बताया हैं। ब्लूलर हार्नले, हुक्श, मैक्डानल, थामस तथा आइज़ेक टेलर आदि ने नागरी लिपि की वैज्ञानिकता की प्रशंसा की है। कहां जाता है कि रोमन लिपि की अवैज्ञानिकता से खिन्न होकर जार्ज बर्नार्ड शॉ जैसे अंग्रेजी के प्रसिद्ध विद्वान को भी अंग्रेजी की लिपि में सुधार की इतनी आवश्यकता महसूस हुई थी कि वे इसके लिए वसीयत भी करने को तैयार थे। स्वर विज्ञान (फोनो ग्राफी) के अनुसंधानकर्ता **"आईज़ेक पिटमैंन** लिखते हैं कि "संसार में यदि कोई पूर्ण अक्षर है तो देवनागरी के है" **प्रो. मोनियर विलियम्स** ने कहा था "देवनागरी अक्षरों से बढ़कर पूर्ण और उत्तम अक्षर दूसरे नहीं है"। **जॉन काइस्ट** तो यहां तक कहते हैं कि "मानव मस्तिष्क से निकली हुई वर्णमाला नागरी सबसे पूर्ण वर्णमाला है।" **सर विलियम जॉन्स,** जो रोमन के पक्षधर थे, नागरी को रोमन की अपेक्षा श्रेष्ठ बताते हुए कहते है" हमारी भाषा अंग्रेजी की वर्णमाला तथा वर्तनी अवैज्ञानिक तथा किसी रूप से हास्यास्पद भी है।

डॉ. आर्थर मैक्डॉनल ने संस्कृत साहित्य के इतिहास में लिखा है कि "400 ई. पूर्व मं पाणिनी के समय भारत ने लिपि को वैज्ञानिकता से समृद्ध कर विकास के उच्चतम सोपान पर प्रतिष्ठित किया, जबकि हम यूरोपीयन लोग इस वैज्ञानिक युग में 2500 वर्ष बाद भी उस वर्णमाला को गले लगाये हुए है, जिसे ग्रीकों ने पुराने सेमेटिक लोगों से अपनाया था जो हमारी भाषाओं के समस्त ध्वनि-समुच्चय का प्रकाशन करने में असमर्थ है तथा 3 हजार साल पुराने अवैज्ञानिक स्वर-व्यंजन मिश्रण का बोझ अब भी पीठ पर लादे हुए है।"

"टाइम्स ऑफ इंडिया" में एक समाचार प्रकाशित हुआ था कि ब्रिटिश लायब्रेरी का रिसर्च

इन्स्टीट्यूशन लोगों से कुछ अंग्रेजी शब्दों के सही उच्चारण आमंत्रित कर रहा है क्योंकि रोमन लिपि के कारण शब्दों के उच्चारण में परिवर्तन हो रहा है। भिन्न-भिन्न लोग ही एक शब्द का उच्चारण अलग-अलग रूप में करते हैं। जैसे टमाटर के लिए Tomota और कुछ लोग Tomato कहे हैं। इसी प्रकार Garage को Marriage के वज़न पर बोला जाए या Mirage के वज़न पर। eat का भूतकाल Ate हो या ett होगा। नागरी में उच्चारण की व्यवस्था निर्धारित और निश्चित है।

यहां हम इस वैज्ञानिकता की कसौटी पर कसते हुए इसके विशेष गुणों पर विचार करेंगे। सामान्यतः वैज्ञानिक लिपि में निम्नलिखित विशेषताएं होनी चाहिएः

एक ध्वनि के लिए एक ही लिपि चिह्न हो।

नागरी लिपि में एक ध्वनि के लिए एक ही लिपि चिह्न है। यह विशेषता विश्व की अन्य लिपियों, जैसे रोमन तथा फारसी आदि में नहीं है।

रोमन में "क" ध्वनि के लिए कई वर्ण प्रयुक्त होते है, जैसे : Cat में C, Kite में K, Queen में Q, Christ में Ch, Back में CK और अंशतः X भी "क" की ध्वनि देता है, जैसे OX है। इस प्रकार एक ही ध्वनि को पांच या छहः प्रकार लिख जा सकता है। रोमन में "स" ध्वनि के लिए "सी" (C) का प्रयोग है, (S) का भी है जैसे Cinema, City, Ceremony, Centuray आदि में C का प्रयोग है और six, same state में S का प्रयोग किया जाता है। Ratio और mention में tio ही "स" की ध्वनि को व्यक्त करते है। अतः रोमन में एक वर्ण को एक निश्चित् स्वनिक मूल्य नहीं दिया जा सकता, जबकि देवनागरी लिपि की विशेषता यही है कि यदि "क" लिखा गया है, तो "क" ही पढ़ा जाएगा।

उर्दू की लिपि फारसी पर आधारित है। ज़हां "ज" ध्वनि के लिए पांच वर्ण हैं ज़े (ژ) जुवाद (ض) ज़ोए (ظ) और ज़ाल (ذ) किस शब्द में "ज़" ध्वनि के लिए इन पांचों में से कौन सा वर्ण प्रयुक्त होगा, यह तय कर पाना तब तक संभव नहीं होगा, जब तक कि प्रयोक्ता उस शब्द के परम्परागत रूप से परिचित न हो। यहां "अ" ध्वनि के लिए अलिफ (ا) और ऐन (ع) है। अलिफ़ से "आदमी" लिख जाता है और ऐन से "औरत"। इसमें कोई वैज्ञानिकता नहीं है।

एक लिपि चिह्न एक ही ध्वनि को व्यक्त करें :-

नागरी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें एक लिपि चिह्न एक ही ध्वनि को व्यक्त करता है, दूसरी को नहीं। रोमन में "D" वर्ण "ड" की ध्वनि को भी व्यक्त करता है और "द" की ध्वनि को भी। इसी प्रकार "T" भी "ट" और "त" दोनों ध्वनियों को व्यक्त करता है। G, ज और ग दोनों ध्वनि को व्यक्त करता है "U" "अ" और "उ" को। जैसे But और Put। फ्रेंच में भी लेखन और उच्चारण में भिन्नता हैं। पैरिस को लिखा "Paris" जाता है और पढ़ा "पारी" जाता है। Restaurant लिखा जाता है पढ़ा "रेस्तोरां" जाता है। इटालियन में Via को "विया" पढ़ा जाता है और अंग्रेजी में "वाया"। वहां Cinema को "चिणमा" और Time को "तीएम" बोला जाता है। ध्वनि एवं लिपि में सामंजस्य किसी भी भाषा एवं लिपि के लिए महत्वपूर्ण ही नहीं, अनिवार्य भी है।

लिपिचिह्न के नाम उसकी ध्वनि के अनुरूप हों।

नागरी की एक बड़ी विशेषता यह है कि जो लिखित चिह्न की पहचान हैं, वही उच्चारण है। अर्थात् "लेखिम" ही "ध्वनिम" है। "क" को

उसी रूप मं पहचाना जाता हे और वही उसका उच्चारण है। पंतग में "प" की ध्वनि और "कलम" में "क" की ध्वनि मूल रूप में वही रहती है। रोमन लिपि में यह वैज्ञानिकता नहीं के बराबर है। जैसे "एच" (H) की मूल ध्वनि में (ए+च) की ध्वनि हैं, किंतु शब्द में प्रयुक्त होने पर यह "ह" या "अ" की ध्वनि देता है, जैसे Horse "हॉर्स" में "ह" और Hours (अवर्स) में "अ" शब्द का उच्चारण होता है। इसी प्रकार W व की और Y, य की ध्वनि देते है। कुछ स्थितियों में तो रोमन वर्ण की द्वितीय ध्वनि का उच्चारण होता है, प्रथम का नहीं जैसे Lamp में L (एल) का प्रयोग "ल" ध्वनि के रूप में होता है। प्रथम ध्वनि "ए" के रूप में नहीं। इस प्रकार Map में 'M' का प्रयोग "म" ध्वनि के रूप में ही उच्चारित होते हैं। जैसे Ball में "बी" की ध्वनि "B" ही रहती हैं।

कुछ वर्ण आपस में मिलकर अलग ही ध्वनि के रूप में उच्चारित होते हैं, जैसे Portion में (tio-श) है और Chart में (C+H) 'च' है। Champagne (शेम्पेन) में (C+h) "स" की ध्वनि देंते है और Character में Ch "क" की ध्वनि का बोध करते है। इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।

वैज्ञानिक लिपि में पर्याप्त लिपि चिह्न होने चाहिए

नागरी लिपि में लिपि चिह्नों की आवश्यक संख्या मौजूद है। आवश्कता अनुसार नए चिह्न भी शामिल कर लिए जांते रहे हैं। जो इसकी विकासशील प्रकृति का गुण है। रोमन में आज तक वही 26 वर्ण है। जबकि ध्वनियां 42 से अधिक है। चीनी जैसी चित्रात्मक लिपि के लिए तो 50 हजार से भी अधिक चित्रों को ध्यान में रखना पड़ता है। रोमन और उर्दू में महाप्राण की ध्वनि के लिए अलग से लिपि चिह्न नहीं है। उर्दू में "हे वर्ण के चिह्न को और रोमन में H वर्ण को जोड़कर महाप्राण बनाया जाता है। जैसे g+h मिलकर "घ" ध्वनि देते हैं किंतु "छ" ध्वनि के लिए (chh) लिखना पड़ता है, जो स्थान अधिक घेरता है। उच्चारण में भी कभी कभी समस्या पैदा कर देता है। हिंदी में इसके लिए प्रथक महाप्राण वर्ण है जैसे – ख, घ, छ, झ, ठ, द, थ।

प्रत्येक लिपि चिह्न को प्रयोग उच्चारण में भी हो

नागरी लिपि की यह विशेषता है कि प्रत्येक लिपि चिह्न का प्रयोग होता है। हिंदी में अब अनावश्यक स्वर चिह्न हटा दिए गए है। जैसे ॠ और ऌ ऌ आदि किंतु अंग्रेजी के कुछ शब्दों में अभी भी ऐसे लिपि चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, जिनका उनके उच्चारण में कोई स्थान नहीं है। जैसे Half में "L" का उच्चारण होता ही नहीं। इसी प्रकार Daughter में gh वर्ण अब अनावश्यक रह गए है। "Listen" और Often में "T" का क्या प्रयोग है? इसी प्रकार colonel (कर्नल) और Leightenant (लेफटीनेट) तथा Psychology और Budget में अक्षर कुछ है, और उच्चारण कुछ है। क्या यह लिपि का दोष नहीं?

फारसी और उर्दू में इनके अलावा कुछ ऐसे लिपि चिह्न भी उप्रयुक्त होते हैं जिनका उनकी वर्णमाला में स्थान नहीं है जैसे "फोरन" (ں , ڑ) में "न" ध्वनि के लिए ں चिह्न का प्रयोग किया जाता है। यहां (बिल्कुल) के लिए (बालकुल) लिखा जाता है, पढ़ा (बिल्कुल) जाता है।

मात्रा एवं वर्ण चिह्नों में भिन्नता हो–

नागरी लिपि एक ध्वन्यात्मक लिपि है। इसकी वर्णमाला बड़ी वैज्ञानिक है। इसमें स्वर की

मात्राएं अलग हैं। हृस्व और दीर्घ मात्राओं का भेद सुस्पष्ट है। यदि किसी स्वर को किसी व्यंजन के साथ मिलाकर लिखना है, तो उसकी मात्रा लगा दी जाती है। पूरा स्वर नहीं लिखा जाता। प्रत्येक व्यंजन के साथ अ स्वर मिला होता है। जैसे ज=ज्+अ। इस प्रकार यह आक्षरिक लिपि है। रोमन लिपि में लिखे स्वर Kamal को कमल, कमाल, कामल, कामाल, पढ़ा जा सकता है। नागरी में ऐसा नहीं होता। मात्राओं के कारण स्थान की भी बचत होती है। यदि नागरी लिपि में मात्राएं न होती तो कलम को (क्+अ+ल्+अ+म्+अ) की भांति लिखा जाता। अंग्रेजी में राम को **Rama** लिखा जाएगा, जो अधिक्‍ जगह घेरता है। अंग्रेजी में मात्राएं न होने से स्वर को पूर्ण रूप से लिखना पड़ता है। "अच्छा" शब्द रोमन में शुद्ध लिखना या पढ़ा जाना कठिन है। बेचारे रामनिरंजन (Ramniranjan) रोमन में "रमणी रंजन" हो जाते हैं। और खानदान (Khandan) "खंडन" बन जाता है।

वर्णमाला व्यवस्थित हो :-

नागरी वर्णमाला में ध्वनियों का मुख के उच्चारणोपयोगी स्थानों के आधार पर वर्गीकरण किया गया है। पहले स्वरों के लिए लिपि चिह्न है, बाद में व्यंजनों के लिए। स्वरों में भी हृस्व और दीर्घ स्वरों के लिए अलग-अलग वर्ण है, जैसे - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ। रोमन, अरबी, या फारसी लिपि में ऐसा नहीं है। वहां स्वर और व्यंजन प्रथक-प्रथक नहीं, बल्कि मिले हुए है। नागरी लिपि का प्रत्येक वर्ण चाहे वह स्वर हो या व्यंजन उसका निर्माण एक विशिष्ट स्थान तथा स्थिति में होता है। वर्णों को कंठ, तालु, मूर्धा, दंत, एवं ओष्ठ से निकलने वाली ध्वनि के आधार पर वर्गीकृत कर इसे पूर्ण वैज्ञानिकता प्रदान की गई है। देखे तालिका -

					नासिक्य	अंतस्थ	ऊष्म
कंठ्य	क	च	ग	घ	ङ		
तालव्य	च	छ	ज	झ	ञ	य	श
मूर्द्धन्य	ट	ठ	ड	ढ	ण	र	ष
दंत्य	त	थ	द	ध	न	ल	स
ओष्ठ्य	प	फ	ब	भ	म	व	

("ह", स्वर-यंत्रीय व्यंजन है)

इनके अतिरिक्त हिंदी में कुछ संयुक्त व्यंजन भी है, जिनका आधार वैज्ञानिक है। जैसे

क्ष - (क्+ष)
त्र - (त्+र)
ज्ञ - (ज्+त्र)
श्र - (श्+र)

मानकीकरण : देवनागरी लिपि आरम्भ से ही एक विकासशील लिपि रही है। समय-समय पर इसमें आवश्यकता अनुसार संवर्धन और परिवर्धन होता रहा है। नई ध्वनियों के अनुकूल ही इसके वर्णों में बदलाव आता रहा है। इसके कुछ वर्ण में पहले एक रूपता नहीं थी और वे कई प्रकार से लिखे जाते थे। अब उनका एक मानक रूप निश्चित कर दिया जैसे

पुराना रूप मान्य रूप

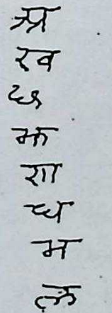

अ
ख
छ
झ
ण
ध
भ
ल

लिपि रारल और स्पष्ट होनी चाहिए -

एक वर्ण एक ही प्रकार से लिखा जाए। रोमन लिपि में लिखे जाने वाले और पुस्तकों के छपने वाले रूपों में भिन्नता है। दूसरे उनमें भी

छोटे (Small) तथा बड़े (Capital) लिपि चिह्नों में भिन्नता है। इस प्रकार 26 अक्षर चार गुणे अर्थात् 26x4 =104 हो जाते है।

लिप्यंतरण और प्रतिलेखन की दृष्टि से यह लिपि सबसे उपयुक्त है। इसमें निहित अपार संभावनाओं का उपयोग कर हम भूमंडलीकरण होते विव की संकड़ों भाषाओं के साथ न्याय कर सकेंगे। और देवनागरी लिपि विश्व की भाषाओं का माध्यम और उनकी कुंजी बन सकेगी। अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, इतालवी आदि सभी यूरोपीय भाषाआं के उच्चारण सुरक्षित रह सकते हैं। उच्चारण की भिन्नता को देखिए, अंग्रेजी में D और T की ध्वनि क्रम से ड और ट होती है। किंतु वही इतालवी में जाकर द और त हो जाती है। इस प्रकार **विश्व की भाषाओं के सही उच्चारण का एक मात्र उपाय उनका नागरी लिपि में लिप्यंतरण ही हो सकता है।** मानव कल्याण की दिशा मं यह प्रक्रिया निश्चय ही महत्वपूर्ण है।

देसी-विदेशी भाषाओं के शिक्षण की दृष्टि से भी इस लिपि के सामर्थ्य का उपयोग किया जाए, क्यों किरोमन जब लिप्यंतरण की दृष्टि से ही उपयुक्त नहीं है तब उसके ज़रिये किसी अन्य भाषा के शिक्षण की कल्पना ही कैसे संभव है?

आज कम्प्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी के युग में : विश्व की सक्षम लिपि के रूप में भी देवनागरी को उपयुक्त माना जा रहा है। अमेरिका, जापान, और जर्मनी में महत्वपूर्ण शोध चल रहा है। नासा के प्रसिद्ध वैज्ञानिक रिक ब्रिग्स ने तो यह घोषित किया है कि संस्कृत भाषा एवं देवनागरी लिपि की कम्प्यूटरीय आज्ञावानी की दृष्टि से आदर्श भाषा एवं आदर्श लिपि है। इसमें विश्व की किसी भाषा एवं ध्वनि को लिप्यांकन किया जा सकता है। भारत में "सी-डेक" ने कई सॉफ्टवियर तैयार किए है, जिसमें श्रुति-लेखन भी महत्वपूर्ण है। इसके द्वारा बोलकर भाषण लिखा जा सकता है। इसमें 80 प्रतिशत शुद्धता पाई गई है।

अपने ध्वन्यात्मक और वैज्ञानिक गुणों के आधार पर नागरी लिपि कुछ नए परिवर्तनों, **परिवर्धनों** के साथ एक "विश्व लिपि" बनने की क्षमता रखती है। इसीलिए बिनोवा जी ने "विश्वनागरी" के रूप में इसकी कल्पना की थी। एशियाई देशों की भाषाओं के लिए तो यह बहुत ही सुकर हैं, क्योंकि इनमें से अधिकांश की लिपियां तो ब्राह्मी से ही विकसित हुई है। वे चाहे थे कि नागरी लिपि की वैज्ञानिकता और सरलता को देखते हुए यदि पड़ोसी देश भी इस लिपि का प्रयोग करें तो अन्तरराष्ट्रीय सद्भावना में अवश्य वृद्धि होगी।

उन्होंने एक लेख में जापानी और नेपाली तथा चीनी आदि भाषाओं का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि पड़ोसी देश नेपाल की भाषा नेपाली है, किंतु इसकी लिपि नागरी है। इस प्रकार दोनों देशों की पारस्परिक सांस्कृतिक और सामाजिक सद्भावना का बहुत कुछ श्रेय इस लिपि को भी है। जापानी भाषा के संबंध में उन्होंने कहा, "जापानी भाषा की लिपि चित्रमय लिपि है, इसलिए इसके पास चित्रों की संख्या लगभग दो हजार है, जिसे सीखना सरल काम नहीं है। इसलिए वे लोग नई लिपि की खोज कर रहे है।" बिनोबा जी ने जापानी भाषा और उसकी संरचना के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा-जापानी वर्णमाला का क्रम ठीक संस्कृत वर्णमाला के क्रम पर बना है। वाक्य विन्यास और उच्चारण की दृष्टि से भी हिंदी और जापानी खूब मिलती-जुलती है। जापानी विद्वान क्यूबा दोई भी जापानी के लिए नागरी लिपि के पक्षधर थे।

यही बात चीनी भाषा के संबंध में भी है। मैं चीनी भाषा के संबंध में अपने एक मित्र द्वारा सुनाए गए एक संस्मरण का उल्लेख करना

शेष भाग पृष्ठ संख्या 17 पर

ईस्ट इंडिया कम्पनी शासन काल में देवनागरी लिपि स्थिति और विश्लेषण

-प्रो0 रामनिरंजन परिमलेन्दु

अंक 127 का शेष

उन्नीसवीं शती के प्रारंभ में सरकारी सेवा के लिए आवश्यक अर्हता के अन्तर्गत दो भाषाओं का अध्ययन अनिवार्य था जिनमें से एक भाषा फारसी अनिवार्य रूप से थी। इस प्रावधान के विरुद्ध फोर्ट विलियम कॉलेज पाठ्यक्रम में बंगला और हिन्दुस्तानी की अनुशंसा उक्त लेख में की गई थी।

फ्रेडरिक जौन शोर

फ्रेडरिक जोन शोर (31 मई, 1799 ई0-29, मई, 1837 ई0) ने भारत की कार्यपालिका एवं न्यायपालिका की भाषा और लिपि के प्रश्न पर अत्यन्त तर्कसम्मत, गहन, निष्पक्ष, न्यायपूर्ण एवं व्यापक ढंग से विचार किया। वे व्यवहार न्यायालय और दाण्डिक सत्र, फर्रूखाबाद (उत्तर प्रदेश) के न्यायाधीश थे। भाषा और लिपि विषयक उसका प्रथम लेख 29 मई, 1832 ई0 का है। इस विषय पर उन लेखों का लेखन-काल मुख्यतः 20 मई 1832 ई0 से 1 जून 1834 ई0 तक है। 25 महीने 13 दिनों की अल्पावधि में लिखित भाषा और लिपि विषयक उनके लेख अत्यन्त महत्पूर्ण हैं। भाषा और लिपि विषयक अपने प्रथम लेख "ऑन दि युज ऑफ दि हिन्दुस्तानी लैंग्बेज" (लेखन-तिथि 20 मई, 1832ई0) में फ्रेडरिक जोन शोर ने बताया कि भारत में शासक और शासितों की भाषा भिन्न है। उसने भारतीय न्यायालयों में प्रचलित फारसी भाषा के औचित्य का अत्यंत तार्किक ढंग से खण्डन किया। पढ़ दिए जाने पर अभ्यास के कारण थोड़ा समझने के बावजूद शासनाधिकारी और दंडाधिकारी भारत में ऐसे तीस भी नहीं थे जो फारसी भाषा सुगमतापूर्वक पढ़ सकते थे या पुलिस प्रतिवेदन का शुद्ध अनुवाद करने योग्य थे और आवश्यक आदेश शीघ्रतापूर्वक शुद्ध फारसी लिखने में वे सक्षम नहीं थे। भारत की बहुसंख्यक जनता अदालत की कार्यवाहियों को फारसी में लिखने में सक्षम नहीं थी। भारत की बहुसंख्यक जनता अदालत की कार्यवाहियों को फारसी भाषा और लिपि की दुर्बोधता एवं अज्ञानता के कारण नहीं समझती थी। फारसी उसके लिए विदेशी भाषा थी। यह न्यायालय की भाषा और लिपि थी। यह सत्य है कि ईस्ट इंडिया कम्पनी की सरकार फारसी भाषा सीखने वाले अंग्रेज पदाधिकारियों को प्रश्रय-प्रोत्साहन प्रदान करती थी। उनके लिए फारसी की जानकारी आवश्यक थी, क्योंकि फारसी कचहरी की भाषा थी। फारसी लिपि कचहरी-लिपि थी। किन्तु स्थिति कुछ और ही थी। कोलकाता से बाहर सम्राट के पदाधिकारियों के सेवकों को छोड़कर शायद ही ऐसा कोई देशीय व्यक्ति (नेटिव) था जो अंग्रेजी भाषा बोलता या समझता हो। उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारत की यह भाषागत स्थिति थी।

अंग्रेजी भाषा को न्यायालय-भाषा का स्तर दिए जाने के लिए उन्नीसवीं शताब्दी के चतुर्थ दशक के प्रारंभ में कतिपय चर्चा हुई थी। फ्रेडरिक जौन शोर ने इसका विरोध किया था।

उसने हिन्दुस्तानी को न्यायालय की भाषा बनाए जाने की सर्वोच्च एवं अत्यधिक अनुशंसा की और इसकी सर्वव्यापिनी उपयोगिता को रेखांकित किया वह प्रथम अंग्रेज पदाधिकारी था जिसने ऐसी अनुशंसा की।

फ्रेडरिक जौन शोर ने "वर्नाक्यूलर लैंग्वेज" अर्थात देशीय भाषा के रोमन लिप्यन्तरण के सुझाव की बड़ी तीखी आलोचना की और इस सुझाव को अमान्य कर दिया। रोमन लिपि भारत की लिपि नहीं है। यह विदेशी लिपि है। किसी अति विशाल जनसंख्या पर विदेशी लिपि को बलपूर्वक लादने के औचित्य को उसने अस्वीकार किया और कहा कि रोमन लिपि में देशीय भाषा अर्थात् हिन्दुस्तानी अर्थात् हिन्दी भाषा की ध्वनियों को पूर्णतया अभिव्यक्त करने वाले समुचित अक्षरों का अभाव है जिसके लिए नए अक्षरों का आविष्कार करना होगा। ऐसी स्थिति में सर्वप्रचलित और शताब्दियों से सर्वस्वीकृत देवनागरी लिपि, जो हिन्दुस्तानी भाषा की एकमात्र पूर्ण समर्थ लिपि है, को स्वीकार क्यों नहीं किया जाए? एक विदेशी लिपि के फलस्वरूप करोड़ो नेटिभ अर्थात् भारतीयों को असुविधा होगी। उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारत में सभी वर्गों, के अंग्रेजों की संख्या प्रायः तीस हजार ही थी। भारत की विशाल जनसख्या की तुलना में भारत में अंग्रेजों की संख्या नगण्य ही थी।

ऐसी स्थिति में देशीय भाषा के रोमन लिप्यन्तरण का प्रश्न सर्वथा अविवेकपूर्ण था। किसी सम्पूर्ण राष्ट्र की अपनी लिपि के परिवर्तन के लिए बाध्य करना एक कठिन कार्य है। उसने रोमन लिपि को भारत की न्यायालय – लिपि बनाए जाने का विरोध अत्यन्त तार्किक ढंग से अनेक बार किया।

हिन्दी–हिन्दुस्तानी की सम्पूर्ण ध्वनियों को व्यक्त करने वाली क्षमता के अभाव के कारण डेवी, विलियम्स, हाल्डेड, सर विलियम जोन्स, फार्स्टर, केरी, जौन शेक्सपीयर, हॉटन, आरनोट, फोर्बेस आदि अंगेज विद्वानों के हिन्दी भाषा के रोमन–लिप्यन्तरण प्रयास असफल ही सिद्ध हुए। एतदर्थ रोमन लिपि में पर्याप्त सुधार एवं संशोधन की आवश्यकता है।

फेडरिक जौन शोर ने डॉ0 जान गिलक्राइस्ट द्वारा प्रतिपादित "हिन्दी–रोमन आर्थोपिग्राफिकल अल्फावेट" की कटु आलोचना विभिन्न समुचित तथ्यों के आधार पर की। उन्होंने जान गिलक्राइस्ट द्वारा प्रतिपादित लिपि से क्लिष्टता, दुरूहता और अव्यावहारिकता आदि को रेखांकित किया।

रोमन लिपि में भारतीय भाषाओं का लेखन यूरोप में विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो सकता था क्योंकि उच्चारणों का प्रशिक्षण प्रारंभ करने के लिए वहाँ देशीय शिक्षकों का अभाव था। किन्तु भारत की विशाल जनता के लिए इसकी कोई सार्थकता उपयोगिता और प्रासंगिकता नहीं हो सकती।

कोई भी स्वतंत्र या परतंत्र या सभ्य देश जिसकी गौरवमयी लम्बी परम्परा हो और जिसका अपना समृद्ध साहित्य हो, अपनी लिपि का परिवर्तन नहीं कर सकता। फ्रेडरिक जौन शोर ने भी इस सिद्धान्त को स्वीकार किया।

फ्रेडरिक जौन शोर ने यह स्वीकार किया कि अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीयों में अत्यधिक उग्र पूर्वाग्रह हो जाने की आशंका थी। देवनागरी लिपि को अंग्रेजी भाषा में यथासंभव प्रस्थापित करने के सुझाव के कार्य कराने से देशीय लोगों को अंग्रेजी भाषा का कार्यसाधक ज्ञान संभाव्य है। जान गिलक्राइस्ट द्वारा प्रतिपादित हिन्दुस्तानी के रोमन लित्यन्तरण से अनेक लोगों का हिन्दुस्तानी का कार्य साधक ज्ञान हुआ। किन्तु उसका यह रोमन

लिप्यन्तरण का उत्साह मूर्खतापूर्ण ही था।

जन शिक्षा के लिए जौन फ्रेडरिक शोर ने तीन सुझाव दिए –

1. देशीय भाषाओं और देश की लिपि में ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के शिक्षण के लिए विद्यालयों की स्थापना की जाय।

2. विभिन्न विषयों पर सूचना प्रदायिनी उपयोगी पुस्तकों के अनुवाद देशीय भाषाओं और देश-लिपि में किए जाएं।

3. उच्चतर अध्ययन के प्रति विशेष अभिरूचि रखने वाले व्यक्तियों को अंग्रेजी भाषा का ज्ञान प्रदान किया जाए। मूल बंगाल के लिए बंगला और हिन्दुस्तान के लिए नागरी को चरितार्थ किया जना चाहिए।

इस सम्बन्ध में ध्यातव्य है कि भारतीय भाषाओं के रोमन लिप्यन्तरण की चर्चा विगत प्रायः दो सौ वर्षों से यदा-कदा होती रही है। इस चर्चा का प्रारंभ सन् 1788 ई0 में हुआ जब विलियम ज़ोन्स ने "ए" डिस्सर्टेशन ऑन दि आरथोग्राफी ऑफ एशियाटिक वर्ड्स इन रोमन लेटर्स" नामक महत्वपूर्ण निबन्ध लिखा। उन्होंने देवनागरी लिपि की वैज्ञानिक व्यवस्था को अन्य लिपियों की अपेक्षा सर्वाधिक श्रेष्ठ घोषित कर भारतीय भाषाओं के रोमन लिप्यन्तरण के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था।

ट्रेवेलियन, जे0 प्रिन्सेप आदि के द्वारा लिखित और सिरामपुर, कोलकाता से 1834 ई0 में प्रकाशित "दि अलिकेसन ऑफ दि रोमन अल्फावेट टू ऑल दि ओरिएन्ट लेंग्वेजेज (The application of the Roman Alphabet to all the Oriental Languages) नामक पुस्तक में सभी भारतीय भाषाओं के रोमन लिप्यन्तरण की वकालत की गई।

1854 ई0 में डब्लू0एन0लीस (W.N. Lees) ने "ऑन दि अप्लिकेशन ऑफ दी करेक्टर्स ऑफ दि रोमन अल्फोवेट टू ओरिएन्ट लेंग्वेजेज (On the application of the characters of the Roman alphabet of Origental Langauges) नामक निबन्ध में इस प्रश्न को पुनजीर्वित किया। कैप्टन लीस की दलील थी कि हिन्दुस्तानी की अपनी कोई लिपि नहीं है। अतएव हिन्दुस्तानी भाषा रोमन लिप्यन्तरण के सर्वथा अनुकूल है।

लीस ने एसियाटिक सोसाइटी की बैठक (1863 ई) में इस दलील की पुनरावृति की।

1867 ई0 में एफ0 ए0 ग्राउस (F.S. Growse) ने भारतीय लिपियों के रोमन लिप्यन्तरण के प्रस्ताव को अमान्य कर दिया। ग्राउस द्वारा भारतीय भाषाओं के रोमन लिप्यन्तरण के प्रस्ताव को अमान्य कर दिए जाने से ही देवनागरी लिपि-आन्दोलन के ईस्ट इंडिया कम्पनी काल का समापन हुआ।

सचिव, सदर बोर्ड ऑफ रेवेन्यु के नाम सम्बोधित पत्रांक 914 दिनांक 30 जून 1837 ई0 में सचिव, बंगाल सचिव ने यह स्पष्ट कर दिया था कि यूरोपीय पदाधिकारियां के पारस्परिक पत्राचार अंग्रेजी में और सदर बोर्ड ऑफ रेवेन्यु के प्रत्येक विभाग में जनता से सम्बन्धित सरकारी कार्य और आदेश देशभाषा और जनभाषा में निष्पादित किए जाएं।

सुदीर्घ अवधि से बहिष्कृत जनता की देशभाषा को समुचित स्थान प्रदान करना सरकार का लक्ष्य था।

किन्तु बंगाल संहिता के कतिपय पूर्व प्रावधानों ने न्यायिक एवं राजस्व कार्य-कलापों में फारसी भाषा और उसकी लिपि को स्थापित कर दिया था। अतएव, वाइसराय की व्यवस्थापक सभा में 4 सितम्बर 1837 ई0 को देशीय भाषा विषयक

विधेयक उपस्थापित-पारित किया गया। इसमें शासकीय स्तर पर फारसी के स्थान पर देशभाषा को प्रतिष्ठा प्रदान की गई। किन्तु सन् 1837 ई0 के राज्यादेश मात्र देशभाषा फारसी अथवा देवनागरी लिपि में लिखी जाए। इस सम्बन्ध में सरकार ने विचार अथवा निर्णय नहीं किया।

वाइसराइय की व्यवस्थापक सभा में 4 सितम्बर 1839 ई0 को देशीय भाषा विषयक विधेयक पारित किया गया। इसमें शासकीय स्तर पर फारसी के स्थान पर देशभाषा को प्रतिष्ठा प्रदान की गई।

4 सितम्बर, 1837 ई0 का यह संकल्प 20 नवम्बर 1837 ई0 को संविधान का एक अंग बन गया जो अधिनियम संख्या 29 सन् 1837 ई0 के नाम से प्रतिष्ठापित हुआ। अधिनियम संख्या 29 सन् 1837 ई0 1 दिसम्बर 1837 ई0 से प्रभावी हुआ।

सच तो यह है कि "हिन्दुस्तान (जिसके अन्तर्गत बिहार, पश्चिमोत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश का कुछ भाग है) की भाषा हिन्दी थी जो नागरी लिपि को उनके अन्य रूप में लिखी जाती है। परन्तु इस भाषा के बदले इन प्रान्तों की कचहरियों में उर्दू भाषा का प्रचार हुआ। इसका कारण यह हुआ कि कुछ यूरोपीय लेखकों ने इस उर्दू भाषा को "हिन्दुस्तानी" नाम दिया जिससे यह समझा गया कि जैसे बंगाल की भाषा बंगाली और गुजरात की गुजराती है वैसे ही हिन्दुस्तान की भाषा भी हिन्दुस्तानी है। इस भूल से उर्दू का हिन्दुस्तानी की कचहरियों में प्रचार हुआ।

बंगाल में बंगाल और उड़ीसा में उड़िया भाषा न्यायालय और राजस्व की भाषा और लिपि बन गई। किन्तु तत्कालीन पश्चिमोत्तर प्रदेश और अवध, बिहार और मध्य प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में न्यायालय और राजस्व की भाषा और लिपि के संबंध में न्यायसंगत निर्णय नहीं लिया जा सका। फारसी के स्थान पर उर्दू को उपर्युक्त प्रदेशों में स्थापित किया गया। इस सम्बन्ध में तर्क यह प्रस्तुत किया गया कि कुछ युरोपीय लेखकों ने उर्दू का नामकरण "हिन्दुस्तानी" किया था। बंगाल में बंगाली, गुजरात में गुजराती की पद्धति से उर्दू को हिन्दुसतान की भाषा का गलत अर्थ दे दिया गया।

सदर दीवानी अदालत के मतानुसार कचहरियों की कार्रवाई सरल, सुबोध और सुगम भाषा में की जाए। किन्तु हिन्दी की घोर उपेक्षा की गई। सुदीर्घ काल से फारसी से बोझिल उर्दू-लेखन के कारण कचहरियों के कर्मचारियों को लिपि-देवनागरी में लिखने से घृणा हुई जिसके फलस्वरूप कचहरियों में उर्दू भाषा और फारसी अक्षरों का प्रचार हुआ।

तत्कालीन पश्चिमोत्तर प्रदेश और अवध की जनभाषा या देशीय भाषा देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी रह गई। ईस्ट इंडिया कम्पनी और विक्टोरिया के शासनकाल में सरकार की ओर से भी यह तथ्य अनेक प्रतिवेदनों में और अवसरों पर स्वीकार किया गया। पश्चिमोत्तर प्रदेश और अवध सरकार के सचिव ने प्राचार्य, आगरा कॉलेज, आगरा को सम्बोधित पत्रांक 750 दिनांक 17 अगस्त 1844 ई0 में और पश्चिमोत्तर प्रदेश और अवध के विद्यालयों के महानिदेशक ने सन् 1854-55 ई0 के अपने प्रतिवेदन की पृष्ठ संख्या 38 पर तथ्य को स्वीकार किया था। पश्चिमोत्तर प्रदेश और अवध सरकार ने ज्ञापांक संख्या 4011 दिनांक 30 सितम्बर 1854 ई0 में समाहर्त्ताओं और आयुक्तों को यह निर्देश प्रदान किया था कि पटवारियों के अभिलेख उस भाषा और लिपि में लिपिबद्ध किए जायें जो बहुसंख्यक जनता के लिए सर्वाधिक सुपरिचित हो और उक्त भाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी ही हो सकती थी। राजस्व बोर्ड, पश्चिमोत्तर प्रदेश और अवध के

समाहर्त्ताओं और आयुक्तों को सम्बोधित अधिसूचना संख्या 8, 1857 में इसी निर्देश की पुनरावृत्ति की।

अनेक मान्य यूरोपीय और भारतीय हिन्दीतर विद्वानों ने ईस्ट इंडिया कम्पनी और विक्टोरिया शासन कालों में देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया था।

सदर दीवानी अदालत, पश्मिोत्तर प्रदेश अधिसूचना संख्या 33 दिनांक 19 अप्रैल 1839 ई0 में अदालतों की समस्त कार्यभाषा फारसी के स्थान पर 1 जुलाई 1839 ई0 से हिन्दुस्तानी में परिवर्तित करने का स्पष्ट आदेश प्रदान किया गया था। न्यायालयों की सम्पूर्ण कार्यवाही सरल, सुबोध उर्दू अथवा जहाँ प्रचलन हो वहाँ हिन्दी का व्यवहार करने का आदेश भी उक्त अधिसूचना में था।

किन्तु कचहरी के अमलों के प्रभाव से हिन्दी के व्यवहार के निर्देश की अवहेलना की गई। एक लम्बी अवधि तक फारसीपूरित उर्दू लेखन के अभ्यास के कारण कचहरी के अमले जनभाषा हिन्दी और देवनागरी लिपि को उपेक्षा, तिरस्कार एवं घृणा की दृष्टि से देखते थे।

फारसी लिपि में लिखित उर्दू कचहरी की भाषा बन गई थी। किन्तु सरकार सरल सुबोध उर्दू की पक्षधर थी, फारसीपूरित उर्दू नहीं।

सदर बोर्ड ऑफ रेवेन्यु, पश्चिमोत्तर प्रदेश अधिसूचना संख्या-3 दिनांक 28 अगस्त 1840 ई0 के अन्तर्गत न्यायालय और राजस्व विभाग की भाष ऐसी लिखी जाए कि एक कुलीन हिन्दुस्तानी फारसी से पूर्णतया वंचित रहने पर भी बोलता हो। न्यायालय और राजस्व विभाग का प्रत्यक्ष सम्बन्ध जनता से है। अतएव सरकार ने सुबोध जनभाषा की अनुशंसा की। किन्तु उपर्युक्त राजाज्ञाओं का परिणाम निष्फल हुआ। व्यवहार-न्यायालय दाण्डिक न्यायालय और राजस्व न्यायालय के व्यवहार की भाषा प्रायः फारसी ही थी, जनभाषा नहीं। अतः सरकार ने सदर दीवानी अदालत और राजस्व-पर्षद से उचित परामर्श कर न्यायालयों के पदाधिकारियों को यह आदेश दिया कि सभी देशीय भाषाओं के अभिलेख सुबोध जनभाषा में अभिलेखबद्ध किए जाएं।

किन्तु इस 28 अंगस्त, 1840 ई0 की अधिसूचना का कोई परिणाम अथवा प्रभाव नहीं हो सका। प्रायः इसके पन्द्रह वर्ष पश्चात् सरकार ने अनुभव किया कि दीवानी, फौजदारी और राजस्व न्यायालयों की कार्यवाही एक विशिष्ट और विदेशी भाषा में लिखी जाती है। अतएव अनुसंधान के बाद सरकार ने न्यायालय के पदाधिकारियों को निर्देश दिया कि सरकारी कागजात ऐसी भाषा में लिखे जायें कि जिन्हें जनसाधारण भली-भांति समझ सके। 9 मई 1854 ई0 का आग्रह-पत्र इसी आशय का था। परन्तु इसका भी कुछ प्रभाव नहीं हुआ। इस प्रकार 28 अगस्त 1840 ई0 और 9 मई 1854 ई0 के राज्यादेश ठंडे बस्ते में बंद कर दिए गए।

1854 ई0 में सरकार ने यह आदेश दिया कि पटवारियों के कागजात हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि में लिखे जाएं। यह निर्देश पत्र राजस्व पषद, पश्चिमोत्तर प्रदेश और अवध की संकल्प संख्या 4011 दिनांक 30 सितम्बर 1854 ई0 में इस दृष्टि से निहित हैं।

सन् 1856 ई0 में सरकार ने यह आज्ञा दी कि माल विभाग के कर्मचारी तहसीलदार आदि (जो उर्दू भली-भांति जानते थे) नागरी का अक्षर ज्ञान भी प्राप्त करें। उनके लिए देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी भाषा की परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त करना अनिवार्य कर दिया गया और यह

घोषणा की गई कि उक्त आदेश का उल्लंघन करने पर उन्हें सेवामुक्त कर दिया जाएगा।

सरकार के इस आदेश का वांछित परिणाम हुआ। अत्यन्त कम समय में, सभी राजस्व पदाधिकारीगण, मुसलमान तहसीलदारों आदि ने देवनागरी लिपि पढ़ने-लिखने का ज्ञान अर्जित कर लिया और निर्धारित देवनागरी परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त की।

किन्तु 1857 ई0 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दमन के बाद सरकार की मनोवृत्ति में परिवर्तन हुआ और उक्त नागरी विषयक आदेश के प्रति अवहेलना की नीति को स्वयं सरकार की ओर से प्रश्रय प्रदान किया गया।

सन् 1837 इ0 से 1900 ई0 तक कचहरी-भाषा में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया जा सका। डाक्टर फैलन, ग्राउस, फ्रेडरिक, पिंकौट आदि विद्वानों और भाषा तत्ववेत्ताओं ने इस कचहरी-भाषा की बड़ी निन्दा की थी।

देवनागरी लिपि की प्रतिष्ठा के बिना कचहरी-भाषा का सरलीकरण संभव नहीं था। अनेक सरकारी आज्ञाओं के बावजूद कचहरी भाषा में अति क्लिष्ट, दुर्बोध एवं जटिल अरबी और फारसी शब्दों का अनावश्यक बोझ था। अदालतों के कार्य फारसी लिपि में सम्पन्न किए जाते थे। अतएव कचहरी-भाषा की अति दुरूह एवं दुर्बोध थी। फारसी लिपि के स्थान पर देवनागरी लिपि को कचहरी-लिपि की अनिवार्य संवैधानिक स्वीकृति के पश्चात् सरल औश्र सुगम हिन्दुस्तानी अथवा हिन्दी का प्रचार अवश्यभावी था। यह अनुभव किया गया कि जब तक कचहरियों की कार्यवाही फारसी लिपि में लिखी जाएगी तब तक हिन्दुस्तानी भाषा में से अरबी और फारसी शब्दों का बहिष्कार अथवा सरल, सुबोध सुगम और सार्वजनिक कचहरी-भाषा की स्थापना कदापि संभव नहीं है।

तात्पर्य यह कि अधिनियम संख्या 29 सन् 1837 ई0 के पूर्व ईस्ट इंडिया कम्पनी सरकार ने जनसाधारण से सम्बन्धित अधिनियमों, अधिसूचनाओं, परिनियमों, अनुदेशों, संकल्पों, निर्देशपत्रों, शासनादेशों आदि में फारसी भाषा के अतिरिक्त हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के प्रचलन का प्रावधान किया। अधिनियम संख्या 22 सन् 1836 ई0 में मात्र अंग्रेजी, फारसी और बंगला भाषाओं को प्रश्रय दिया। गर्वनर जनरल इन कौंसिल फोर्ट विलियम के संकल्प दिनांक 4 सितम्बर 1837 ई0 में "वर्नाक्यूलर लैंग्वेज ऑफ दि डिस्ट्रिक्ट" अर्थात् जिले या जनपद की देशभाषा को प्रमुखता प्रदान की गई। 1809 ई0 से ईस्ट इंडिया कम्पनी के सिक्कों पर फारसी और देवनागरी लिपियाँ प्रतिष्ठित की गईं। 01 सितम्बर 1853 ई0 से उक्त सिक्कों से देवनागरी लिपि का उन्मूलन कर मात्र अंग्रेजी और फारसी को सिक्कों की भाषा और लिपि का गौरव प्रदान किया गया।

सन् 1837 ई0 के उपरान्त मुख्यतः 4 जुलाई 1851 ई0 से कम्पनी सरकार और विक्टोरिया शासन ने अंग्रेजी भाषा की अतिरिक्त "वर्नाक्युलर लैंग्वेंज ऑफ दि डिस्ट्रिक्ट, "लैंग्वेज ऑफ दि डिस्ट्रिक्ट", "वर्ताक्युलर लैंग्वेज ऑफ दी प्रिजाईडिंग ऑफिसर ऑफ प्रिंसिपल लैंग्वेज ऑफ दि डिस्ट्रिक्ट" का ही प्रावधान अपने विभिन्न अधिनियमों, अधिसूचनाओं और परिनियमों में किया। फारसी या उर्दू भाषा का स्पष्ट उल्लेख मात्र एक अपवाद को छोड़कर, अन्यत्र नहीं किया गया। मात्र अधिनियम संख्या 1 सन् 1867 ई0 में उर्दू भाषा का स्पष्ट उल्लेख किया गया। अधिनियम संख्या 7 सन् 1876 ई0 में "वर्नाक्युलर लैंग्वेज एण्ड करेक्टर ऑफ दि डिस्ट्रिक्ट" उल्लिखित हुआ अर्थात् लिपि का भी उल्लेख जानबूझ कर दिया गया।

सन् 1837 ई0 के पूर्व देवनागरी लिपि विभिन्न अधिनियमों, अधिसूचनाओं, परिनियमों और संकल्पां में मुख्य रूप से उल्लिखित की जाती रही। किन्तु इसके बाद सरकार ने लिपि के प्रश्न को गौण कर अधिनियम संख्या 7 सन् 1876 ई0 के अपवाद को छोड़कर, जिले की देशभाषा को प्रश्रय दिया। जिले की देशभाषा निःसन्देह हिन्दी ही थी जिसकी एकमात्र लिपि देवनागरी थी। किन्तु कर्मचारियों के परम्परागत स्वार्थवश इसे गलत ढंग से परिभाषित कर उर्दू भाषा और इसकी फारसी लिपि को मुख्य रूप से प्रश्रय प्रदान किया गया। भाषा और लिपि विषयक सरकार के अनुदेशों, अधिनियमों, कार्यपालक आदेशों निर्देशपत्रों और राज्यादेशों का अनुपालन न्याय और निष्ठा के आधार पर नहीं किय गया। सरकार की त्रुटि यह थी कि उसने "वर्नाक्युलर लैंग्वेज ऑफ दि डिस्ट्रिक्ट" को परिभाषित अथवा उसका स्पष्ट निर्देश प्रायः नहीं किया और अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार उसे परिभाषित करने की अनियंत्रित सुविधाएँ राज्यकर्मियों और राज्याधिकारियों को प्रदान कर दी। हिन्दी भाषा के पवित्र अधिकार को उसने विवाद का विषय बना दिया। कार्यालयों, न्यायालयों आदि के कर्मचारियों द्वारा पूर्व प्रचलित फारसी लिपि और उर्दू भाषा, शासकां और शासितों की लिपि अथवा भाषा नहीं रहने के बावजूद, क्लिष्ट उर्दू और फारसी लिपि को प्रयुक्त किए जाने को गलत और दुर्भाग्यपूर्ण निरन्तरता प्रदान कर दी। इसके सुदूरव्यापी प्रभाव से देवनागरी लिपि-आन्दोलन सम्पूर्ण हिन्दी भाषा और हिन्दी बहुल क्षेत्रों में हुआ और कचहरी-भाषा क्लिष्ट उर्दू के रूप में चलती रही। कचहरी की यह भाषा हिन्दी भाषा के स्वाभाविक संस्कार की सार्वजनिक हत्या ही थी।

पूर्व प्रोफेसर (हिन्दी), दक्षिण दरवाज़ा
गया-823001 (बिहार)

पृष्ठ संख्या 10 का शेष भाग

चाहता हूं, जिसमें उन्होंने बताया था कि जब चीन के प्रधानमंत्री श्री चाउ एन लाई भारत यात्रा पर आए थे, तो कहा जाता कि उन्होंने चीनी लिपि की जटिलता को देखते हुए चीनी भाषा के लिए नागरी लिपि अनाए जाने की संभावनाओं के संबंध में तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के सामने विचार रखे थे, किंतु इसकी औपचारिक अभिव्यक्ति आज कहीं नहीं मिलती।

नागरी लिपि हिंदी के लिए वरदान है, किंतु हम है कि आंख मूंद कर रोमन लिपि के पीछे भग रहे हैं। हमें नहीं भूलना चाहिए कि रोमन के कारण ही भारत में नगरों के नाम बिगड़े, व्यक्तियों और महापुरुषों के नाम विकृत हुए। जिनमें हम अब सुधार करने पर लगे हैं। यही नहीं सूरीनाम को ले लिजिए जहां हिंदी को रोमन में लिखा गया तो वह **'सरनामी हिंदी'** बन गई। भारत में ही हिंदी को रोमन में लिखने की आवाज यदा-कदा सुनाई पड़ती है। हिंदी को रोमन में लिखने से "हिंगलिश" जैसी एक नई भाषा बन रही है। जो हिंदी के हित में नहीं है। इतिहास साक्षी है कि जब हिंदी (हिन्दवी) को फारसी लिपि में लिखा जाने लगा तो वह उर्दू बन गई।

अतः मैं, मैं यह कहना चाहूंगा कि भारत के पास नागरी लिपि के रूप में एक अमूल्य धरोहर है जिसका प्रयोग विश्वनागरी के रूप में भी सरलता से किया जा सकता है। चीन, जापान, कोरिया जैसे देश जहां चित्रलिपि जैसी जटिल लिपि का प्रयोग होता है, वे भी यदि देवनागरी को अपना ले तो उनके लिए सुविधाजनक रहेगा।

आशा है कि हमारे आने वाली नई पीढ़ी नागरी की इस धरोहर को संभाल कर रखेंगी।

डॉ. परमानंद पांचाल
232-ए, पॉकेट-1, मयूर विहार, दिल्ली-110091
मो. 9818894001, घर : 011-22751649
का. : 011-23329841

देवनागरी की वैज्ञानिकता बनाम व्यावहारिकता

(लेखक के अनुस्वार सम्बन्धी विचार भारत सरकार द्वारा तैयार लिपि और वर्तनी से भिन्न हैं, जो संस्कृत के लिए तो मान्य हो सकते हैं, हिंदी के लिए नहीं।

-संपादक)

-मोहसिन ख़ान

लिपि मानव की सबसे अमूल्य निधि है, यदि यह निधि खो जाए तो जीवन के सोपानों, की श्रृंखलाभंग हो जाए। लिपि के माध्यम से मनुष्य ने अपनी भाषा को स्थायित्व प्रदान किया है, भाषा को कालजयी और गतिशील बनाए रखना लिपि के द्वारा ही सम्भव है। लिपि के स्थायित्व के कारण ही एक पीढ़ी के अनुभव और विचार दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते हैं। यदि लिपि का अभाव हुआ तो बोली क्रमशः समाप्त तक हो सकती है। मानव ने सभ्यता के विकास के साथ-साथ लिपि का विकास भी किया। प्रारम्भ में चित्रलिपि द्वारा वह अपने मनोभावों को प्रकट करता रहा। उसने चिन्तन और प्रयासों के फलस्वरूप सैकड़ों वर्षों बाद वह उसी चित्रलिपि के विकास से ध्वनिलिपि विकसित करने में सफल हुआ। आज जिस रूप में देवनागरी लिपि हमारे समक्ष है उसका उद्भव एक प्राचीन वैज्ञानिक लिपि 'ब्राह्मी' से हुआ है। ब्राह्मी की उत्तरी शैली से कुटिल लिपि विकसित हुई और इस कुटिल लिपि से ही नवीं शताब्दी के आसपास नागरी लिपि के प्राचीन रूप का विकास हुआ, जिसे प्राचीन नागरी कहते हैं। प्राचीन नागरी से पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी में आधुनिक नागरी विकसित हुई।

नागरी लिपि के लम्बे विकास के पश्चात् आज जिस रूप में नागरी विद्यमान है, उसकी अपनी निजी विशेषताएँ हैं। यह अपनी वैज्ञानिकता के कारण प्रसिद्ध है और इसी कारण यह आज सर्वव्यापी तथा राष्ट्रलिपि का दर्जा प्राप्त किए हुए है। यह सभी भारतीय भाषाओं में प्रचलित सभी ध्वनियों को अंकित करने की क्षमता रखती है। 'अ' को छोड़कर अन्य स्वरों की ह्रस्व और दीर्घ मात्राएँ अलग से विद्यमान हैं। स्वरों और व्यंजनों का क्रम वैज्ञानिक रीति से रखा गया है। स्वरों की ह्रस्वता, दीर्घता एक ही आकृति में थोड़ा सा अन्तर करके दिखा दी जाती है। इस लिपि में स्पर्श, अन्तःस्थ, ऊष्म आदि व्यंजनों को वैज्ञानिकता के साथ रखा गया है। प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग चिह्न और चिह्न की एक ध्वनि इस वैज्ञानिक लिपि की अन्यतम विशेषता है। ऐसा नहीं कि रोमन की तरह 'S' से ज, स, श जैसी कई ध्वनियों का संकेत होता है। इसी प्रकार एक 'क' ध्वनि के लिए रोमन में C, K, Q आदि का प्रयोग किया जाता है। नागरी लिपि का प्रत्येक वर्ण अपनी पूर्णता के साथ उच्चरित होता है। अंग्रेजी Half में L मूक है, इसी प्रकार Knife में K मूक है। ऐसे मूक वर्ण देवनागरी में नहीं हैं। देवनागरी वर्णों का लेखन कलात्मक, सुन्दर और सुगठित है। नागरी लिपि की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता उसके वर्गीकरण का वैज्ञानिक रूप है। नागरी वर्णों को मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित किया गया है, इसमें स्वरों को प्रारंभ में रखा गया है, व्यंज्जनों को अंत में।

स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

व्यञ्जन - क, ख, ग, ... ह।

रोमन लिपि में ऐसी वैज्ञानिक व्यवस्था नहीं

हैं, स्वरों को व्यञ्जनों के मध्य ही रखा गया है, जो अत्यन्त अवैज्ञानिक है। नागरी के स्वरों तथा व्यंजनों के वर्गीकरण भी वैज्ञानिक हैं।

(अ) मात्रानुसार व्यवस्था – नागरी में स्वरों के ह्रस्व और दीर्घ रूपों की भी वैज्ञानिक व्यवस्था की गई है –

ह्रस्व – अ, इ, उ

दीर्घ – आ, ई, ऊ

(आ) संयुक्ताक्षर व्यवस्था – स्वरों में ऐसी व्यवस्था रखी गई है, जिसे मूल और संयुक्त दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

मूल स्वर – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, (अ, इ, उ)

संयुक्त स्वर – ऐ (अ+इ), औ (अ+उ/अ+ओ)

(अ) स्थान के आधार पर वर्गीकरण

क-वर्ग – क, ख, ग, घ, ङ –
कण्ठ – उच्चरित कंठ्य व्यञ्जन हैं।

च-वर्ग – च, छ, ज, झ, ञ –
तालु – उच्चरित तालव्य व्यञ्जन।

मूर्धन्य ट-वर्ग – ट, ठ, ड, ढ, ण –
दन्त उच्चरित दन्त्य व्यञ्जन।

दन्त त-वर्ग – त, थ, द, ध, न –

प-वर्ग – प, फ, ब, भ, म, –
ओष्ठ – उच्चरित ओष्ठ्य व्यञ्जन।

इसके अतिरिक्त श, ष और स क्रमशः तालव्य, मूर्द्धन्य और दन्त्य वर्ग में आते हैं। 'ह' अंतिम ध्वनि स्वर यन्त्रमुख से उच्चरित है। अतः इसे स्वरयन्त्रमुखी नाम दिया गया है।

(आ) प्राणत्त्व के आधार पर वर्गीकरण –

नागरी लिपि में महाप्राण, अल्पप्राण ध्वनियों की अत्यन्त वैज्ञानिकता के साथ व्यवस्था की गई है। प्रत्येक वर्ग की पहली, तीसरी और पाँचवीं ध्वनियाँ अल्पप्राण हैं। इनके उच्चारण में वायु-प्रवाह मन्द होता है। प्रत्येक वर्ग की दूसरी और चौथी ध्वनियाँ महाप्राण हैं।

	अल्पप्राण	महाप्राण
क-वर्ग	क, ग, ङ	ख, घ
च-वर्ग	च, ज, ञ	छ, झ
ट-वर्ग	ट, ड, ण	ठ, ढ
त-वर्ग	त, द, न	थ, ध
प-वर्ग	प, ब, म	फ, भ

(इ) घोष के आधार पर वर्गीकरण

नागरी व्यञ्जन के प्रत्येक वर्ग के प्रथम हे, क्योंकि उनके उच्चारण में वायु स्वर-तंत्रियों से घर्षण कर बाहर आती हैं। इस प्रकार घोष-अघोष वर्णों की व्यवस्था पूर्णतः वैज्ञानिक है।

	अघोष	सघोष
क-वर्ग	क, ख	ग, घ, ङ
च-वर्ग	च, छ	ज, झ, ञ
ट-वर्ग	ट, ठ	ड, ढ, ण
त-वर्ग	त, थ	द, ध, न
प-वर्ग	प, फ	ब, भ, म

इस प्रकार देवनागरी लिपि का वर्गीकरण पूर्णतः वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया गया है। यह लिपि अपने में सर्वव्यापकता लिए हुए है। इसका पूरा गठन ध्वनि के आधार पर ही किया गया है और आज इस लिपि का साम्य कोई भी अन्य लिपि नहीं रखती। इस लिपि के पीछे वैयाकरणों की वर्षो की तपस्या है, साधना है, जिसके

परिणाम स्वरूप आज यह लिपि असीम संभावनाओं से युक्त अत्यन्त श्रेष्ठ लिपि है।

वर्तमान में देवनागरी लिपि में अनुस्वार को लेकर कुछ भ्रामक स्थितियों का जन्म हुआ है, जिसके कारण लिपि के पीछे वैज्ञानिक सत्य उपेक्षित हो रहे हैं। इस पक्ष को जानना भी अत्यावश्यक है। किस प्रकार से अनुस्वार का प्रयोग किया जाए? आज नागरी लिपि के प्रयोग में अनुस्वारों पर विशेष रूप से ध्यान न देकर उसकी वैज्ञानिकता को आघात पहुँचाया जा रहा है, जिसके कारण लिपि की एकरूपता मृत हो रही है तथा वर्ण शक्ति का लोप होता जा रहा है। वस्तुतः इसके कारण लिपि तथा उच्चारण की एकरूपता में भी कमी आती जा रही है। अनुस्वार की भ्रामक स्थिति के फैलने के पीछे कई कारण हैं -

1. मुख-सुख उच्चारण के कारण शब्दों में प्रयुक्त वर्णों को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया जाता है और फिर वैसा ही लिख दिया जाता है।
2. आलस्य तथा शीघ्रता के कारण शब्दों को पूर्ण उच्चारण न करके तथा लिखने की शीघ्रता के कारण कोई भी विकल्प प्रस्तुत कर दिया जाता है।
3. अज्ञान के कारण भी लिखते समय ध्यान नहीं दिया जाता है।

सामान्यतः नागरी में ङ, ञ, ण, न, म, अनुस्वार माने जाते हैं। ये अनुस्वार पाणिनि के 'अष्टाध्यायी' के महेश्वर सूत्र से लिये गये हैं। पाणिनि ने अनुनासिक का लक्षण दिया है - 'मुखनासिकावाचनोऽनुनासिकः।' (अष्टाध्यायी-1/1/8) अर्थात् जो वर्ण मुख के साथ ही नासिका की सहायता से उच्चरित होते हैं, उन्हें अनुनासिक कहते हैं। इस दृष्टि से व्यंजनों को दो भागों में विभक्त किया जाता है। 1. निरनुनासिक-जिनके उच्चारण में नासिका या नासाविवर की सहायता नहीं ली जाती है। जैसे - क्, ख् आदि स्पर्श व्यंजन। 2. अनुनासिक - जिनके उच्चारण में मुख के साथ ही नासिका या नासाविवर की सहायता ली जाती है। जैसे - वर्गों में पञ्चम वर्ण - ङ्, ञ्, ण्, न्, म्।

व्यंजनों के वर्ग के अनुसार नासिक्य व्यंजनों का प्रयोग किया जाना चाहिए, जो कि तर्कसम्मत और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है। 'क' वर्ग के किसी भी वर्ण से पूर्व यदि अनुस्वार आता है, तो वहाँ 'ङ' का प्रयोग होना चाहिए, जबकि वर्तमान समय में इस सिद्धान्त की अवहेलना की गयी है, उसके स्थान पर बिन्दु (ं) का प्रयोग किया जाता है, जो अनुचित है। जैसे - शुद्ध रूप 'गङ्गा' और अशुद्ध रूप - गंगा है। 'च' वर्ग के किसी भी वर्ण से पूर्व यदि अनुस्वार आता है, तो वहाँ (ञ) का प्रयोग किया जाना चाहिए, जबकि बिन्दु (ं) का प्रयोग किया जा रहा है। शुद्ध - पञ्चम, चञ्चल। अशुद्ध-पंचम, चंचल। यही बात ट, त और प वर्ग में देखी जा रही है। प्रायः अनुस्वाद के रूप में जो बिन्दु का प्रयोग किया जाता है, उसका वास्तविक प्रयोग 'मोऽनुस्वारः' पाणिनि, अष्टाध्यायी - 8/3/23 सूत्र के अनुसार 'प' वर्ग हेतु मान्य है तथा क, च, ट, त चारों वर्गों के वर्णों को छोड़कर अन्य सभी व्यंजनों के लिए किया जाना चाहिए। इस प्रकार देवनागरी लिपि की कई विशेषताएँ हैं और उसके वैज्ञानिक पक्ष हैं। (नोट - ये विचार लेखक के हैं जो हिन्दी के लिए अब मान्य नहीं हैं।)

देवनागरी लिपि के विकास के अपने चरण रहे हैं और उसकी वैज्ञानिकता भी विश्व की सभी लिपियों के समक्ष सिद्ध हो चुकी है, परन्तु आज देवनागरी लिपि संकट से मुक्त नहीं, वह जितनी

सैद्धान्तिक अथवा वैज्ञानिक स्तर पर स्थापित है। क्या वह व्यावहारिक स्तर पर भी उतनी ही सशक्त रूप में अपने को स्थापित कर पायी है? इसका उत्तर हाँ भी है और नहीं भी। वास्तव में आज देवनागरी लिपि का संकट उसकी वैज्ञानिकता को लेकर नहीं, बल्कि उसके व्यावहारिक पक्ष को लेकर कहीं अधिक है। देवनागरी लिपि को स्थापित करने में उसके दोनों ही पक्षों का समान रूप से महत्त्व है, वह है – उसकी सैद्धान्तिकता और व्यावहारिकता। लिपि वैज्ञानिक यद्यपि उसकी सैद्धान्तिकी पर बल देते हैं, उसकी वैज्ञानिकता को सिद्ध करते है, परन्तु इतनी ही निष्ठा लिपि प्रेम और परिश्रम की आवश्यकता उसे व्यावहारिकता स्तर पर लागू करने की है। व्यावहारिकता के अभाव में सिद्धान्तों का लोप होता है।

देवनागरी को लेकर कई संस्थाओं का गठन हुआ है, समितियाँ बनी हैं। उसके विषय में सभ्य समाज ने चिंता व्यक्त की है। अकादमिक स्तर पर प्रयास भी हो रहे हैं। आज देवनागरी की व्यावहारिक जर्जर अवस्था को पुनः सम्पुष्ट बनाने के लिए इन्हीं समितियों, सभाओं को व्यावहारिक स्तर पर बीड़ा उठाना होगा, जीवनपर्यंत अविराम संघर्ष करना होगा। सबसे पहले इसकी शुरूआत शैक्षिक स्तर से करनी होगी। विद्यालयों पर इस तरह का दबाव समूह बनाना होगा, जिससे विद्यार्थियों को प्रारभिक स्तर से ही देवनगारी का सही और वैज्ञानिक ज्ञान मिल सके, साथ ही समय-समय पर इसी परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों की गुणवत्ता भी परखी जाए, नहीं तो जैसी लिपि अशुद्धता और अवैज्ञानिकता का वे ज्ञान देंगे, वैसा ही विद्यार्थी-वर्ग ग्रहण करेगा।

आधुनिक युग में मुद्रण के आविष्कार ने पुस्तकों के क्षेत्र में क्रांति ला दी है और कम्प्यूटर पर देवनागरी लिपि के सॉफ्टवेयर ने पुस्तकों की बाढ़ ला दी है। पुस्तकों की अधिकता ने जहाँ ज्ञान के स्तर पर को ऊँचा उठाया है समुन्नत बनाया है, वहीं उसमें हुई मात्राओं की अशुद्धियों ने देवनगारी लिपि को गलत रूप में भी प्रसारित कर उसका अहित किया है। आज इस तरह की अशुद्धियों को समाप्त करना होगा, वरना एक समय ऐसा आएगा कि अशुद्धि के बढ़ते प्रचलन से अशुद्धियाँ ही मानक रूप धारण कर लेंगी और ध्वनियाँ भी परिवर्तित हो जाएँगी। इसलिए आज आवश्यक है कि इस तरह की कुशल संस्थाओं को पुस्तक मुद्रण का दायित्व सौंपा जाए, जो सावधानीपूर्वकः अशुद्धियों का निवारण करें तथा लिपि की वास्तविकता व गुणवत्ता का भी ध्यान रखें जाए।

शासन के सूचना और प्रसारण जैसे तमाम विभागों पर भी दबाव बनया जाए कि देशभर की जितनी भी सूचनाएँ हों, उनका यदि प्रसार हो तो आवश्यक रूप से देवनागरी का भी प्रयोग किया जाए। लोक व्यवहार में देवनागरी का प्रयोग दिन पर दिन क्षीण होता जा रहा है, जिसके लिए अतिरिक्त सजगता की आवश्यकता है। देवनागरी लिपि अपनी वैज्ञानिकता के कारण आज विश्व की एकमात्र ऐसी लिपि है, जिस पर किसी भी प्रकार से कोई आक्षेप या प्रश्नचिन्ह नहीं लगाया जा सकता, परंतु आज उसे व्यावहारिक स्तर पर प्रयोग करने तथा करवाने में शिथिलता बरती जा रही है, जो उसके सिद्धान्तों के लिए खतरा बन सकती है। नई पीढ़ी को इसकी वैज्ञानिकता की व्यावहारिक शिक्षा देना आवश्यक है, वरना नई पीढ़ी अपनी लिपि की श्रेष्ठ परम्परा से चिच्छिन्न हो जाएगी।

डॉ. मोहसिन खान (सहा. प्रा. हिंदी)
201 सिद्धांत अपार्टमेंट, विद्यानगर,
अलीबाग, पिन – 402201
जिला – रायगड़ (महा.)

सामाजिक समरसता के आविर्भाव और विकास में देवनागरी लिपि की भूमिका

-डॉ. तिलक सिंह

शासन, समाज, भाषा और लिपि का गहन और व्यापक संबंध है। शासन-पद्धति समाज-व्यवस्था को प्रभावित करती है। समाज-व्यवस्था भाषा-व्यववस्था को प्रभावित करती है। भाषा-व्यवस्था लिपि-व्यवस्था को प्रेरित और प्रोत्साहित करती है। अधिनायकवादी, सामन्तवादी, साम्राज्यवादी और पूँजीवादी राजनैतिक प्रणालियाँ समाजव्यवस्था को विषमतामूलक और विघटनकारी बनाती हैं। विषमतामूलक समाज भाषा संरचना को अनुदार और स्थिर बनाता है। अनुदार और स्थिर भाषासंरचना लिपि को असंगत, अनुदार, अव्यवस्थित और अवैज्ञानिक बनाती है। जिस भाषा की संरचना जितनी अधिक उदार, लचीलीं और उन्मुक्त होती है उस भाषा से सम्बद्ध लिपि सर्वाधिक वैज्ञानिक, लोकोपयोगी और भाषापरिवर्तनों को अपने में समाहित करती रहती है। समयानुकूल भाषा की परिवर्तित ध्वनियों को अपने में समाहित करके चलने वाली लिपि सदैव गतिशील, जीवन्त और विकसित बनी रही है। लिपि की वैज्ञानिकता वैज्ञानिक ध्वनिव्यवस्था का मापक है और वैज्ञानिक ध्वनिव्यवस्था भाषासंरचना के अद्‌भुत प्रभाव और भाषा की सम्प्रेषणीयता की क्षमता की मापक है। लिपि की वैज्ञानिकता और भाषा की क्षमता सामाजिक गतिशीलता और लोकतंत्रात्मक शासन-व्यवस्था की बोधक हैं। सर विलियम जोन्स ने विश्वभाषाओं की संरचना और सम्प्रेषण-क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला है कि संस्कृत भाषा की संरचना अद्‌भुत और संप्रेषण-क्षमता अद्वितीय है। ग्रीक भाषा अपनी संरचना में पूर्ण है और लैटिन भाषा का शब्दभण्डार समृद्ध है परन्तु संस्कृत भाषा की संरचना ग्रीक भाषा से अधिक पूर्ण और इसका शब्द भण्डार लैटिन भाषा के शब्दभण्डार की तुलना में अधिक सम्पन्न, समृद्ध और विकसित है। ग्रीक और लैटिन दोनों भाषाएँ परिमार्जित और परिष्कृत हैं। वैदिक भाषा, रामायण-महाभारत की संस्कृत भाषा, कालिदास, भवभूति, भास और भारवि की क्लासिकल संस्कृत की ध्वनि-व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करने वाली देवनागरी लिपि की लेखनव्यवस्था (लेखिम या वर्णिम व्यवस्था) विश्वलिपियों की लेखन-व्यवस्था की तुलना में अधिक क्रमबद्ध, तार्किक, व्यवस्थित, पूर्ण और वैज्ञानिक है। इस पूर्ण व्यवस्थित और वैज्ञानिक, नागरी लिपि से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक भाषा, लौकिक संस्कृत, प्राकृत-अपभ्रंश, हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएँ अपनी-अपनी संरचनागत और प्रकार्यगत व्यवस्थाओं में सर्वाधिक समान, पूर्ण, व्यवस्थित और विश्वसनीय हैं। इन भाषाओं की पूर्णता और विश्वसनीयता के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारत की शासन और समाजव्यवस्था वैदिककाल से आज तक सर्वाधिक जनतंत्रात्मक, प्रामाणिक, उन्मुक्त और विश्वसनीय रही है। स्वाधीनता और समानता सामाजिक समरता के आधार हैं। विश्वसमाज में देवनागरी लिपि ही सामाजिक समरसत्ता का आविर्भाव और विकास कर सकती है; रोमन और पर्शियन जैसी अपूर्ण, अल्पव्यवस्थित और अवैज्ञानिक लिपियाँ

नहीं। इन विश्वलिपियों ने अपनी अपूर्णता और अवैज्ञानिता के कारण विश्वसमाज में विषमता और अशान्ति का आविर्भाव और विकास किया है। दोनों विश्वसंदर्भी लिपियाँ उच्चारण, लेखन और पठन तीनों स्तरों पर असंगत, असमान और अव्यवस्थित परिलक्षित होती हैं। इन दोनों विश्वसम्पर्की लिपियों में बोला कुछ जाता है, लिखा कुछ जाता है और पढ़ा कुछ जाताहै। बोलने, लिखने और पढ़ने में एकरूपता न होने के कारण इन लिपियों का प्रयोग करने वाले समाजों में अविश्वसनीयता और अराजकता उत्पन्न हो सकती है। इन लिपियों की सदोषता और अव्यवस्था वक्ता और श्रोता में कटुता और वैमनस्य उत्पन्न कर सकती है। कटुता और वैमनस्य किसी भी समाज को बिखराव और विखण्डन की प्रक्रिया से जोड़ सकते हैं। डॉ0 रामविलास शर्मा ने 'भारतीय साहित्य की भूमिका' शीर्षक पुस्तक में पृष्ठ संख्या 236 और 237 पर रोमन लिपि की स्वच्छन्दता और देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता के संबंध में सर विलियम जोन्स के पक्षपातरहित और विद्वत्तापूर्ण मत का उल्लेख किया है। उन्हीं के शब्दों में विलियम जोन्स के लिए जैसे संस्कृत ग्रीक भाषा से श्रेष्ठ है वैसे ही उसकी लिपि और वर्णमाला यूरोप की वर्णमालाओं और लिपियों से बढ़कर है। यहाँ की वर्णमालाओं की विशेषता यह है कि व्यंजनों का उच्चारण कंठ से करते हैं और अन्त में ओठों तक आते हैं। वर्णों के प्रत्येक वर्ग में पहले एक अघोष ध्वनि होती है जैसे क, उसके बाद उसका महाप्राण रूप होता है ख, फिर सघोष ध्वनि जैसे ग, फिर उसका महाप्राण रूप घ। फिर उसी उच्चारण-स्थान से नासिक्य वर्ण ङ। यह विशेषता केवल भारतीय वर्णमालाओं में है यूरुप और एशिया की अन्य वर्णमालाओं में नहीं है। विलियम जोन्स इस व्यवस्था को परिष्कृत मानते हैं (ऐनीगेन्ट एरैन्जमैन्ट) और उसे प्रकृति के अनुरूप मानते हैं... जहाँ तक अघोष महाप्राण ध्वनियों का संबंध है विलियम जोन्स के विचार से ऐसी महाप्राण ध्वनियाँ केवल भारत में है। उनका आशय यह है कि ख, छ, थ, फ जैसे ध्वनियाँ केवल भारत में हैं। भारत से बाहर इनसे मिलती जुलती ध्वनियाँ संघर्षी हैं। जैसे अरबी-फारसी में ख़ या फ़। किसी भी लिपि में जब अनेक ध्वनियों के लिए एक ही चिन्ह से काम लिया जाये अथवा एक ध्वनि के लिए अनेक चिन्हों का प्रयोग हो तो यह बहुत बड़ा दोष होगा। इस तरह के दोष रोमन लिपि में हैं लेकिन देवनागरी इन दोषों से मुक्त हैं।

जैसे भारत में किसी निश्चित विचार के लिए एक निश्चित शब्द होना चाहिए वैसे ही ध्वनियों के लिए निश्चित चिन्ह होने चाहिए। अरबी वर्णमाला सभी मुसलमान सर्वत्र इस्तेमाल करते हैं। वह अरबी लिखने के लिए पर्याप्त मालूम होती है। उसमें एक अक्षर भी इधर से उधर हटाया जाये तो तुरन्त गड़बड़ पैदा हो जायेगी। निस्संदेह यह बात देवनागरी लिपि के बारे में कही जा सकती है। यहाँ वर्ण अन्य किसी भी लिपि की अपेक्षा अधिक प्राकृत रूप में व्यवस्थित किये गये हैं। इसलिए देवनागरी को आधार बनाकर वह भाषा के वर्णों के बारे में विचार करते हैं। जहाँ तक अंग्रेजी वर्णमाला और लिपि का संबंध है, वह बहुत ही अपूर्ण है, इतनी अपूर्ण और हास्यास्पद कि उस पर शर्म आनी चाहिए।

अंग्रेज भारत पर शासन करते थे। यहाँ की लिपि और वर्णमाला उन्हें पूर्ण दिखाई देती थी। जहाँ तक उनकी अपनी लिपि और वर्णमाला का संबंध है वह अपूर्ण थी। इस वर्णमाला में अर्थात् रोमन लिपि में भारतीय, ईरानी या अरबी शब्दों को लिखना बहुत ही कठिन होगा। उनका उच्चारण हम बहुत ही बेहूदे ढंग से करते हैं।

यानी यूरोप के लोग खास तौर से अंग्रेज यहाँ के शब्दों का सही उच्चारण नहीं कर पाते, इसलिए रोमनलिपि में विशेष चिन्हों का उपयोग करते हुए जोन्स ऐसी लिपि का चलन करना चाहते हैं जो एशियावासियों के लिए उपयुक्त हो और इतनी उपयुक्त हो कि स्पष्ट और नपी तुली होने में स्वयं देवनागरी की समता कर सके।"

देवनागरी लिपियों का मानदण्ड है। संस्कृत और हिन्दी आदि भाषाएँ ही नहीं एशिया की दूसरी भाषाओं के लिए भी देवनागरी को आधार बनाकर रोमन में ऐसे परिवर्तन करने चाहिए कि यह लिपि उन भाषाओं की ध्वनियों को व्यक्त करने में नागरी का मुकाबला कर सके।

जोन्स के उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है किं लिपि का आधार वर्णमाला या ध्वनिव्यवस्था है। भारतीय भाषाओं की ध्वनिव्यवस्था उच्चारण-स्थान और उच्चारण-प्रयत्न दोनों दृष्टियों से विश्व-भाषाओं की ध्वनिव्यवस्था से अधिक्रमबद्ध, तार्किक, स्पष्ट और व्यवस्थित है। भारतीय भाषाओं की व्यवस्थित ध्वनिव्यवस्था ने ही देवनागरी लिपि को विश्वलिपियों में सर्वाधिक मानक, स्तरीय और अनुकरणीय बना दिया है। जोन्स ने यह भी कहा है कि अरबियन लिपि रोमन लिपि की अपेक्षा अधिक व्यवस्थित और प्रामाणिक है परन्तु देवनागरी लिपि अरबियन लिपि से भी अधिक व्यवस्थित, वैज्ञानिक, पूर्ण और पारदर्शी लिपि है। जोन्स ने रोमनलिपि को अपनी संरचना और प्रयोग-प्रक्रिया में हास्यास्पद और लज्जास्पद लिपि कहा है। उनका कहना है कि रोमन लिपि में ध्वनियों का उच्चारण बेहूदा ढंग से किया जाता है। इस लिपि में अघोष महाप्राण और सघोष महाप्राण व्यंजन ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त और उचित लिपि संकेत ही नहीं है। ध्वनियों की अपूर्णता और उच्चारण के असंगतरूप ने रोमन लिपि को सर्वाधिक अवैज्ञानिक और अनुपयोगी लिपि बना दिया है। ध्वनियों की अपूर्णता, उच्चारण की असंगतता और अनेक लिपिचिन्हों का अभाव रोमन लिपि को सामाजिक अराजकता से जोड़ता है। इस विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि शासन, भाषा और लिपि समाज के संयोजन का कार्य करते हैं। ध्वनियों और उनको व्यक्त करने वाले लिपि चिन्हों की असम्बद्धता समाज को विषय और विषाक्त बनाते हैं। भाषा की व्यवस्थित संरचना और लिपि की वैज्ञानिकता विश्वसमाज को समतामूलक पारदर्शी मानवीय मूल्यों से जोड़ती हैं। समतामूलक मानवीय जीवनमूल्य सामाजिक समरसता का आविर्भाव करते हैं। वैज्ञानिक लिपि इस सामाजिक समरसता का प्रचार प्रसार करती है। भावबोध, विचारबोध और कर्मबोध को वैज्ञानिक लिपि पारदर्शी बनाती है। सामाजिक भौतिकवाद से विकृत विरूपित, कलुषित और विखण्डित हो जाती है। सदभाव, सदविचार और सदकर्मगत एकरूपता सामाजिक समरसता का आविर्भाव करते हैं। पूर्ण, प्रामाणिक और वैज्ञानिक लिपि इस समरसता का विकास करती हैं समाज और संस्कृति को विकृत, विरूपित, कलुषित और कलंकित होने से बचाती है। देवनागरी लिपि विश्वलिपियों में संरचना और प्रयोग-प्रक्रिया में सर्वाधिक व्यापक और वैज्ञानिक लिपि है। देवनागरी जिन ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करती है वे ध्वनियाँ भारत की प्राचीन भाषाओं, प्रादेशिक भाषाओं, विभिन्न बोलियों और उपबोलियों से आगत ध्वनियों के साथ विभिन्न भारतेतर भाषाओं से आगत ध्वनियों का भी प्रतिनिधित्व करती हैं। ध्वनि-विस्तारीकरण की प्रक्रिया ने देवनागरी लिपि को लिपि-विस्तारीकरण की प्रक्रिया से जोड़कर विश्वभाषाओं के लिए मानक, स्तरीय और अनुकरणीय लिपि बना दिया है। देवनागरी

लिपि ही विश्वभाषाओं को मानवतावादी जीवनमूल्यों से सम्बद्ध करती है। विश्वमानव-समाज में सदभावों, सदविचारों और सदकर्मों का संचार करती है। यही एक मात्र ऐसी व्यवस्थित और वैज्ञानिक लिपि है जो विश्वसमाज में शान्ति और समरसता की स्थापना कर सकती है। विश्वलिपियों की नियन्ता देवनागरी विश्वलिपियों को व्यवस्थित, वैज्ञानिक मानक, स्तरीय और अनुकरणीय लिपि बनने की प्रेरणा बनती है। विश्व के बहुचर्चित साहित्यकार, शिक्षाविद, दार्शनिक, वैज्ञानिक और भाषाविद अपने-अपने देशों की भाषाओं की लिपियों को देवनागरी के रचनाविधान के आधार पर 'व्यवस्थित और वैज्ञानिक लिपि बनाने के लिए व्याकुल, संघर्षशील और प्रयत्नशील रहे हैं। चाहे बर्नार्डशा रहे हैं चाहे सर जार्ज ग्रियर्सन रहे हैं और चाहे वर्णनात्मक और तुलनात्मक भाषाविज्ञान के जनक सर विलियम जोन्स रहे हों सभी ने रोमन लिपि को अव्यावहारिक, अव्यवस्थित, अवैज्ञानिक, वियोजनकारी, विस्मयकारी, लज्जास्पद और हास्यास्पद लिपि माना है और रोमन लिपि को देवनागरी लिपि के आदर्श का अनुवर्तन करने का सभी वर्गों और प्रकारों के विद्वानों से आग्रह और अनुरोध किया है। मानव-जीवन में भाषा और लिपि से बढ़कर कोई आदर्श नहीं है। शासन, समाज और संस्कृति का संचालन, नियमन और कार्यान्वयन भाषा करती है और भाषा का लेखनस्तर पर नियमन संयमन, सम्प्रसारण और व्यवस्थापन लिपि करती है। यदि समाज और संस्कृति की आधारभूमि भाष है तो भाषा की आधारशिला लिपि है। लिपि विश्व-भाषासंरचना को अनुप्रेरित और अनुप्राणित करती है। लिपि को विश्वसंदर्भी बनाती है। लिपिचिन्हों द्वारा ही भाषा लिखी और पढ़ी जा सकती है। यदि बोलना ही भाषा हे तो लिखना और पढ़ना भाषा सीखने-सिखाने के अद्‌भुत कौशल हैं। अनुवाद-विज्ञान, भाषाशिक्षण और पाठ्य पुस्तकों का निर्माण लिपि द्वारा एक देश की भाषा को दूसरे देश तक पहुँचाते हैं। देवनागरी लिपि अपनी संरचना में नितान्त मानक और वैज्ञानिक होने के कारण विश्वभाषाओं को संयोजनक़ारी बनाने के साथ-साथ विश्वसमाज में समरसता का आविर्भाव और विकास कर सकती है। देवनागरी विश्वलिपियों के लिए संचरना और प्रयोग के स्तर पर मानक, स्तरीय और अनुकरणीय प्रतिमान स्थापित करती है। इन प्रतिमानों को आधार बनाकर विश्वलिपियों के विचलन की प्रक्रिया को स्पष्ट किया जा सकता है। वर्तमान में देवनागरी लिपि के संदर्भ में विश्व-भाषाओं की लिपियाँ लिपि-विस्थापन की प्रक्रिया से जुड़ती जा रही हैं। विश्वभाषाओं की लिपियों के अनुरक्षण के लिए उन्हें देवनागरी लिपि के अनुकरणीय प्रतिमानों से जोड़ना आवश्यक है अन्यथा विश्वसमाज को विभाजन और विघटन से बचाना कठिन और दुस्साध्य बन जायेगा। विश्वसमाज समस्त विश्वभाषाओं की अभिव्यक्ति के लिए यदि देवनागरी लिपि को विश्वलिपि बना लेते हैं तो निश्चित रूप से विश्व-समाज में शान्ति और समरसत्ता के भाव स्थायी बन जायेंगे और विश्व-समाज तनाव, कटुता, टूटन, वैमनस्य और विखण्डन से बच जायेगा। विश्वलिपि देवनागरी विश्व-मानवसमाज को अजर और अमर बना सकेगी, यह अटल और शाश्वत सत्य है। विश्व-मानव-समाज को इसी सत्य का साधक बनना अपेक्षित है। विश्व-मानव-समाज का यही आदर्श है।

डॉ0 तिलक सिंह
प्रोफेसर
970, नई शिवपुरी, हापुड़ (उ0प्र0)
आवसीय फोन : 0122-2310871
मोबाइल : 09319285030

सूचना प्रौद्योगिकी और नागरी लिपि

–डॉ. हाशमबेग मिर्झा

विश्व में सबसे अधिक उपयोग में आने वाली लिपियाँ चार हैं – (1) रोमन (2) चीनी (3) नागरी (4) अरबी-फारसी इन चारों लिपियों का दायरा ग्रंथों से निकालकर कम्प्यूटर तक बढ़ गया है। कम्प्यूटर में इनके प्रयोग से वैश्विक स्तर पर सामंजस्य स्थापित होने में मदद हो रही है। यही स्थिति नागरी की है। अब इंटरनेट के पन्नों पर हिंदी भाषा को नागरी लिपि के माध्यम से आसानी से पढ़ा जा सकता है। भारत भर में इसके विकास के लिए कई संघटन कार्य कर रहे हैं। वैसे तो मानव संसाधन विकास मंत्रालय का यह महत्वपूर्ण कार्य ही है। इसके साथ ही केंद्रीय सूचना एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार की इकाई C.DAC इसमें अहम भूमिका निभा रहा है।

भारत में कम्प्यूटर का आगमन भारतीय सांखिकी संस्थान कोलकता में 1955 में हुआ। इसकी महत्ता को जानकर भारत सरकार ने अमरिकी सरकार से सूपर कम्प्यूटर की माँग की किंतु यह माँग अमरिका द्वारा ठुकराई गई। भारतीय वैज्ञानिकों ने रात दिन परिश्रम कर भारत का अपना सूपर कम्प्यूटर **परम** का निर्माण किया तब से कम्प्यूटर के विकास एवं निर्माण मं भारत ने अपनी धाक बिठाई है। कम्प्यूटर के विकास से तात्पर्य है मानव जीवन में कम्प्यूटर का अधिक से अधिक उपयोग करना, तथा अपना जीवन अधिक सूखमय बनाना है। कम्प्यूटर के विकास ने नये-नये सॉफ्टवेयरों का निर्माण कराया उन सबमें महत्वपूर्ण है नागरी लिपि में लेखन के विविध सॉफ्टवेयर। भारत सरकार ने हिंदी प्रेमियों के लिए www.ildc.gov.in तथा www.ildc.in इन वेबसाइटों पर हिंदी फॉट एवं सॉफ्टवेयर निशुल्क उपलब्ध कराए हैं इतना ही नहीं उन्हें मेल करने पर निशुल्क सॉफ्टवेयर C.D. घर पर प्राप्त कर सकते हैं। इसमें निम्नांकित सॉफ्टवेयर उपलब्ध है – टू टाईप हिंदी फॉट, टू टाईप फॉट के लिए बहु फॉट की बोर्ड इंजन, यूनिकोड समर्थित ओपन टाईप फॉट, यूनिकोड समर्थित की-बोर्ड फॉट, कोड परिवर्तक, वर्तनी संशोधक, भारतीय ओपन ऑफिस का हिंदी भाषा संस्करण, मल्टी प्रोटोकॉल हिन्दी मैसेंजन, कोलंबा, हिंदी ई-मेल क्लायंट, हिंदी ओ सी आर, अंग्रेजी हिंदी शब्दकोश, फायर-फॉक्स ब्राउजर, ट्रांसलिटरेशन, शब्द संसाधन, वर्तनी संशोधक आदि जैसे अनेक साफ्टवेयर हैं।

सी-डेक पुणे के हिंदी साफ्टवयेर –

जिस्ट कार्ड और जिस्ट शैल – इसके माध्यम से सभी अनुप्रयोग तथा कस्टम सॉफ्टवेयरों में अंग्रेजी के साथ-साथ सभी भारतीय भाषाओं में कार्य किया जा सकता है।

अल्प – यह डॉसं और यूनिक्स वातावरण में शब्द संसाधन संबंधी कार्य करता है।

आई.एम.एस. 2000– यह विंडोज आधारित यह सॉफ्टवेयर है।

लीप ऑफिस – इसके द्वारा पेजमेकर, एम.एस. ऑफिस, एक्सेल में टाईप करने का कार्य किया जा सकता है।

आई. लीप – इसके द्वारा हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में ई–मेल किया जा सकता है।

इसके अलावा भी सी–डैक पुणे का नागरी लिपि के विविध सॉफ्टवेयरों के विकास में योगदान है। नागरी का कम्प्यूटर प्रयोग अधिक से अधिक सरल हो यही इसका उद्देश्य हैं।

भारतीय वैब सर्च इंजन

www.searchindia.com
www.jadoo.com
www.khoj.com
www.iloveindia.com
www.123india.com
www.samilan.com
www.samachar.com
www.searchasjaco.com
www.rekha.com
www.sholay.com
www.locateindia.com
www.mapsofidia.com
www.webdunia.com
www.netal.com
www.indiatimes.com

हिंदी में ई मेल –

कुछ वर्ष पूर्व तक ई–मेल सिर्फ अंग्रेजी भाषा में ही किया जाता था। हिंदी में ई–मेल करने की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं थी किंतु अब इंटरनेट पर हिंदी में ई–मेल आसानी से भेज सकते हैं या प्राप्त कर सकते हैं। उसके पोर्टल है –

www.epart.com
www.mailjol.com
www.lahgoo.com
www.cdacinadia.com
www.bharatmail.com
www.webdunia.com
www.rediffmail.com
www.danikragran.com

हिंदी समाचार पत्र –

इंटरनेट के माध्यम से अब हिंदी समाचार पत्रों को कम्प्यूटर पर हिंदी में पढ़ा जा सकता है उसके कई पोर्टल वहाँ मौजूद है जैसे --

www.bbc.co.in
www.bhaskar.com भास्कर
www.amarujala.com अमर उजाला
www.haribhoomi.com हरिभूमि
www.navbharattimes.com नवभारत टाईम्स
www.rashtriyasahara.com राष्ट्रीय सहारा
www.webdumiya.com बेवदूनियाँ
www.jagran.com जागरण
www.hindinest.com हिंदी नेस्ट
www.anubhuti.com अनुभूति
www.ranchiexpress.com राँची एक्सप्रेस

आदि कई भारतीय तथा विदेशी समाचार पत्र इंटरनेट पर उपलब्ध है। जिसे पढ़ा जा सकता है। हिंदी की लगभग सभी छोटी–बड़ी साहित्यक पत्रिकाएँ हिंदी में उपलब्ध है। कई साहित्यिक ग्रंथ एवं ग्रंथकार को इंटरनेट के माध्यम से पढ़ा जा सकता है।

यूनीकोड प्रणाली –

नागरी लिपि का कम्प्यूटर में अधिक से अधिक प्रयोग करने हेतु यूनीकोड प्रणाली का जन्म हुआ है। जिस कम्प्यूटर में नागरी यूनीकोड के सॉफ्टवेयर हो वहाँ के अध्येता को अंग्रेजी पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है। पूरी की पूरी कम्प्यूटर संरचना इसी यूनीकोड पर आधारित होती है। जब हम कम्प्यूटर पर कार्य करते हैं

तब हमारे क्रिया कलाप को यूनीकोड कहा जाता है।

नागरी में लिप्यंतरण –

कम्प्यूटर द्वारा लिप्यंतरण का कार्य बेहद आसान हो गया है। **सेंटर वाटर एंड पावर रिसर्च स्टेशन के इन्स्ट्रमेंशन डिविजन** के एक रिसर्च अफसर ने रोमन देवनागरी लिप्यंतरण मशीन का निर्माण कराया है। इतना ही नहीं अब तो विश्व की किसी भी प्रमुख भाषा का हिंदी में लिप्यंतरण किया जा सकता है। इस तरह से कई सॉफ्टवेयर बाजार में उपलब्ध है।

मॉड्यूलर सिस्टम पुणे का योगदान –

श्रीलिपि– यह सुविधा कम्प्यूटर के विंडोज पर आधारित है इसमें कुंजिपटल और विभिन्न प्रकार के पैकेंजों की सुविधा है। स्पेल चेक वर्तनी सुधार की सुविधा भी इसमें मौजूद है यह कम्प्यूटर पर हिंदी लेखन करने वालों का लोकप्रिय सॉफ्टवेयर है।

अंकुर – यह विंडोज पर आधारित सॉफ्टवेयर है। इसमें लिपि संसाधन, शब्द संसाधन आदि की सुविधा उपलब्ध है।

सूचिका – इसमें रूपान्तरण की सुविधा उपलब्ध है। जिसका उपयोग अनुवाद के क्षेत्र में किया जा सकता हे। इस तरह के अन्य कई सॉफ्टवेयरों का निर्माण यहाँ पर किया गया है तथा और भी अध्ययन किया जा रहा है।

नागरी के अन्य महत्वपूर्ण सॉफ्टवेयर

ए.पी.एस. कारपोरेट 1.0 – इसके पाठय में प्रविष्टि, सामान्य कामकाज विकल्प है।

फैक्स – यह एक बहुभाषी व्यापार एकांउटिंग सॉफ्टवेयर है।

सुलिपि – एसके द्वारा **वर्तनी पर्ची, खाता लेखन** आदि कार्य द्विभाषी के रूप में किये जाते हैं। जैसे Excel

लीला–हिंदी प्रबोध डॉस – इसकी सहायता से हिंदी आसानी से सीखी जा सकती है।

बैंक–मित्र – इससे बैंक के सभी कार्य हिंदी में होते है। यह एक द्विभाषी बैंकिय सॉफ्टवेयर है।

गुरू – यह एक छोटा सा शब्दकोश है और इसके माध्यम से हिंदी में अनुवाद भी किया जा सकता है। इस तरह के अनुवाद संबंधी कई सॉफ्टवेयर बाजार में उपलब्ध है।

इस प्रकार के कई सॉफ्टवेयर बाजार में और इंटरनेट पर निशुल्क उपलब्ध है" जिनका विस्तार से विवेचन करना यहाँ संभव नहीं है। इन सॉफ्टवेयर के अलावा कई प्रकार के हिंदी पोर्टल (web) इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। जिनका उल्लेख करना आवश्यक है। यह सभी पोर्टल देवनागरी में होने से इसका सीधा संबंध हमारी आस्था से जुड़ जाता है क्योंकि ये भी हिंदी के विकास के साधन हैं।

इंटरनेट पर हिंदी के विशेष वेब –

www.rajabhasha.com-

इस साईट पर राजभाषा हिंदी संबंधित नियम, साहित्य, व्याकरण, शब्दकोश, पत्रकारिता तकनीकी सेवा, हिंदी संसार, पूजा अर्चना आदि संबंधित जानकारी मौजूद है।

www.indianlanguages.com-

इस साईट पर भारतीय भाषाओं का साहित्य, समाचार पत्र ई–मेल, सर्च इंजन आदि महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध है।

www.cdacindia.com - सीडीएसी इंडिया

यह वेबसाईट सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय भारत सरकार की है जिसमें तकनीकी विकास संबंधी जानकारी उपलब्ध है।

www.cdacnoida.com - सीडीएसी नोएडा

इस वेबसाईट पर **डिजिटल लाइब्रेरी** स्थापित है जिसमें 10000 से अधिक पुस्तकों को इलेक्ट्रानिक रूप में दर्ज कराया गया है।

www.indiangyan.com-/Hindi इंडियनज्ञन

साईट पर तुलसी कृत रामचरित मानस तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों की जानकारी दी हुई है।

www.vrhad.com - वरद

इस साईट पर हिंदी की लगभग सभी विधाओं की महत्वपूर्ण पुस्तकें उपलब्ध हैं। जिन्हें हम खरीद सकते हैं।

www.firstandsecond.com - फस्टएंडसेंकड

यह भी पुस्तकों की जानकारी प्रदान करने वाला पोर्टल है। जहाँ से पुस्तकें मँगवाई जा सकती है।

www.indianindian.com - इंडियनइंडियन

इस पोर्टल पर हिंदी के प्रसिद्ध कवि शायर, उपन्यासकार, संतकवि, लेखकों की जानकारी, ग्रंथ आदि की विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

www.jayprakashmanas.info.com -

इस साईट पर हिंदी के प्रमुख निबंधकारों की जानकारी उनकी जीवनी, रचनाएँ, रचनाओं के आयाम तथा समिक्षाएँ भी मौजूद है। जिन्हें पढ़ा जा सकता है। या फिर Copy पर प्रिंट भी लिया जा सकता है।

www.bharatdarshan.co.nz - भारतदर्शन

यह वेबसाईट न्यूजीलैंड में बसे भारतीय वंश के साहित्यकारों की है। जिस पर साहित्य व्याकरण, कविताएँ, लघुकविताएं, लघु कथाएं आदि की जानकारी के साथ वहाँ के रचनाकारों का परिचय भी दिया गया है। जिससे हिंदी की वैश्विक स्थिति समझने में मदत होगी।

www.cstt.nic.in -

यह पोर्टल वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग का है। जिस में प्रशासनिक के अलावा, तकनीकी शब्दकोश और हिंदी–अंग्रेजी की शब्दावलियाँ मौजूद है।

हिंदी की साहित्यिक पत्रिकाएँ –

इंटरनेट पर हिंदी की कई साहित्यिक पत्रिकाए मौजूद हैं। उन सभी का संदर्भ यहाँ दिया नहीं जा सकता किंतु कुछ महत्वपूर्ण पत्रिकाओं का उल्लेख बेहद आवश्यक है। जैसे – **वेब दुनिया, वागर्थ, हंस, साहित्य कुंज, हिंदी नेस्ट, हिंदी सेवा कॉम, कलायन पत्रिका, छाया, मधुमती, साहित्य–अमृत, हिंदी इलेक्ट्रानिक साहित्य मैगज़ीन, कृत्या, जागरण** आदि के अलावा भी कई साहित्यिक पत्रिकाएँ मौजूद है।

हिंदी प्रचार – प्रसार की संस्थाएँ –

1) नागरी प्रचारिणी सभा काशी
2) हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग
3) भारतीय भाषा सम्मेलन
4) म.गा. आंतरर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय
5) हिंदी साहित्य अकादमी
6) उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ
7) भारतीय भाषा परिषद कोलकता
8) आंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति, सेलम

शेष भाग पृष्ठ संख्या 46 पर

विश्वलिपि के रूप में देवनागरी लिपि

-प्रा. सुरेंद्र चंद्रकांत हेरकल

भाषा को समय और स्थान से पार ले जाने की शक्ति प्रदान करने वाले आधार को लिपि कहते हैं। लिपि का व्यवहार किसी विशिष्ट भाषा को स्थायी या लिखित रूप देने के लिए किया जाता है। अपनी निर्धारित सीमाओं में लिपि को भाषा का प्रतिनिधित्व करना पड़ता है। वही लिपि वैज्ञानिक और पूर्ण मानी जायेगी जो किसी भाषा का सच्चा प्रतिनिधित्व करने में समर्थ होगी।

एक श्रेष्ठ लिपि वही कही जा सकती है, जिसमें मात्रा, स्वर और बलाघात के लिए स्वतंत्र चिन्ह हों, ध्वनि और लिपि में भी पूर्ण साम्य हो और इस दृष्टि से नागरी लिपि दूसरी किसी भी लिपि की तुलना में निःसन्देह अधिक वैज्ञानिक एवं निर्दोष है। नागरी लिपि में मात्राओं का प्रयोग एक अनूठी प्रक्रिया है, जिससे संक्षिप्तता आती है, जबकि अन्य भाषाओं में पूर्ण स्वर का प्रयोग होता है, नागरी लिपि में स्वर चिन्ह मात्रा का बोधक होता है जिनका प्रयोग व्यंजन ध्वनियों के साथ किया जाता है। संयुक्ताक्षर प्रणाली भी नागरी लिपि की बहुत बड़ी वैज्ञानिक उपलब्धि है।

नागरी लिपि में सिंहली, इण्डोनेशियाई, जापानी, रूसी, इतालवी, आधुनिक अरबी-फारसी आदि भाषाएँ सीखी जा सकती है। अमरीकी अंतरिक्ष संस्था 'नासा' के वैज्ञानिक 'टिम ब्रिग्स' के अनुसार संस्कृत और पाणिनी का व्याकरण कम्प्यूटर के लिए श्रेष्ठ है। आशुलिपि के आविष्कारक आइजक पिटमैन के अनुसार संसार की कोई लिपि यदि सर्वाधिक पूर्ण है तो वह नागरी ही है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था - संसार की सभी लिपियों में, मेरी राय में देवनागरी ही सर्वोत्तम है।" इन्हीं मान्यताओं को लेकर चलने वाले महापुरुष आचार्य विनोबा भावे का मत है कि - "नागरी लिपि से बढ़कर वैज्ञानिक लिपि मैंने दुनिया में कोई नहीं पाई है।"

नागरी लिपि की इन्हीं विशेषताओं के कारण विदेशों में भी इसका पर्याप्त प्रचार-प्रसार हो रहा है। सुरीनाम में इसी लिपि का अधिकांश प्रयोग किया जाता है। मारिशस, नेपाल तथा विश्व के अनेक देशों में नागरी लिपि में पत्रपत्रिकाएँ प्रकाशित की जा रही है। देवनागरी लिपि आज संसार की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि मानी जाती है। इसमें संसार की लगभग सभी भाषा अव्यिक्तियों को उच्चरित कर सकने की क्षमता है। वैश्विक दृष्टि से देखा जाए तो लिपि के सर्वप्रथम चिह्न भारत में मिलते हैं। कम्प्यूटर में नागरी लिपि के चिह्न डाल दिए गये हैं।

विश्व में अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त लिपियाँ हैं। इन विश्वस्तरीय लिपियों में रोमन और पर्शियन लिपियाँ सर्वाधिक विख्यात हैं। ऐतिहासिक और तुलनात्मक भाषाविज्ञान के जनक

सर विलियम जोन्स ने नागरी लिपि की आधार भाषा संस्कृत की पूर्णता और उत्कृष्टता के साथ्ज्ञ साथ रोमन लिपि से नागरी लिपि की उत्कृष्टता और वैज्ञानिकता की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। उन्होंने रोमन लिपि बनाने का आग्रह किया है, साथ ही संचरना स्तर पर नागरी लिपि भी माना है।

हिंदी और उसकी विभिन्न बोलियों में एकल, विद्वत्व और संयुक्त तीन प्रकार की व्यंजन ध्वनियों का प्रयोग मिलता है। ऐसी ध्वनिव्यवस्था विश्वभाषाओं में दुर्लभ है। नागरी लिपि इन तीनों प्रकार की व्यंजन ध्वनियों को व्यक्त करने में पूर्णरूपेण सक्षम है। भारतीय आर्य भाषाओं में मात्रा के आधार पर मूल एकल और संयुक्त (अइ, अई, अउ) और अनुनासिकता के आधार पर मौखिक या निरनुनासिक और सानुनासिक स्वर ध्वनियों का प्रयोग मिलता है। इस समस्त स्वरध्वनियों को व्यक्त करने के लिए देवनागरी लिपि में नितान्त उपयुक्त और उचित चिन्हों का प्रयोग विद्मान है। इंडोयुरोपियन परिवार की समस्त भाषाओं में विशेषकर भारतीय आर्यभाषाओं में निम्नलिखित तीन प्रकार की ध्वनियों का प्रयोग मिलता है।

1. मौखिक ध्वनियाँ
2. नासिक्य ध्वनियाँ
3. अनुनासिक ध्वनियाँ

ऐसी अद्भूत ध्वनि-व्यवस्था अन्य विश्वभाषाओं में उपलब्ध नहीं है। भारत की जनजातियों की लोक भाषाओं और लोक बोलियों में ड और त्र नासिक्य व्यंजन ध्वनियों का प्रयोग मिलता है। दक्षिण भारत की भाषाओं में और उत्तर भारत की भाषाओं में नासिक्य ध्वनियों का प्रयोग मिलता है। इस आधार पर नागरी लिपि समस्त विश्वभाषाओं की ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करती है। विश्व जनजातियों की मौखिक या अलिखित भाषाओं और बोलियों की ध्वनियों को मूलरूप में व्यक्त करते में नगारी लिपि ही सक्षम है। यही कारण है कि नागरी विश्वलिपियों का मापक या मानदण्ड है।

देवनागरी लिपि विश्व की 740 लिपियों के मध्य सम्राज्ञी के आसन को अलंकृत कर रही है। विश्वभर की विकसित-अविकसित 2796 भाषाओं को विश्व-कुटुम्ब का अव्दैत मूलक मन्त्र दे रही है - "यत्र विश्वं भवत्येक नीड्म।" आज देवनागरी विश्वनागरी की भूमिका की ओर अग्रसर है।

छोड सभी, दिल खोल अपनाओ देवनागरी बर्तनी।
हर संकेत चिन्ह है जैसा बोलो वैसी लिखती नागरी।
और लिपियों में क्षमता नहीं, बने जो विश्व नागरी।
ऐसे गुणों से सम्पन्न है, सुघड लिपि विश्वनागरी।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!

डॉ. मुमताज अहमद खान शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, मंचर, ता. आंबेगाव, जि. पुणे-410503

दक्षिण भारत की प्रादेशिक लिपियाँ

–डॉ0 इसपाक अली

भारत की सभी लिपियाँ (उर्दू, फारसी, अरबी) को छोड़कर ब्राह्मी से ही विकसित हुई है। दक्षिण भारत की द्रविड़ भाषा परिवार की लिपियाँ भी ब्राह्मी से विकसित हुई है। कुछ विद्वान तो ब्राह्मी लिपि के आविष्कार को द्रविड़ियन ही मानते हैं। इनमें एडवर्ड थामस मुख्य है। ब्राह्मी के उद्गम का स्वरूप और काल भले ही विवादास्पद हों, किन्तु सुविधा के लिए हम इन्हें ब्राह्मी की उत्तरी और दक्षिणी शैलियां कह सकते हैं। ब्राह्मी की उत्तरी शैली से देवनागरी, गुजराती, बंगाली, आसामी, उड़िया, कश्मीरी और गुरूमुखी लिपियां निकली हे। और उसकी दक्षिण शैली से तमिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़ की लिपियां बनी है। यह एक ऐसा सत्य है जिसके सम्बन्ध में कोई मतभेद नहीं है।

दक्षिण भारत में पल्लवों का शासन लगभग 300 ई0 से शुरू हुआ था। इनके आरम्भिक दान पत्र प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि की दक्षिणी शैली में है। फिर इन पल्लवों के दान पत्र संस्कृत भाषा में मिलते हैं। ईसा की पाँचवी सदी के पल्लव अभिलेख जिस ब्राह्मी लिपि में लिखे गये हैं, उसका भारतीय पुरालिपि के इतिहास में बड़ा महत्व है। लगभग इसी प्रकार की लिपि को पल्लव लिपि कहते हैं। पल्लव नरेश सिंह वर्मन के पीकिरिया दान पत्र का एक अंश निम्न प्रकार से है। आगे चलकर इस पल्लव लिपि का और विकास हुआ इस विकसित पल्लव लिपि को पल्लव ग्रन्थ लिपि नाम दिया गया।

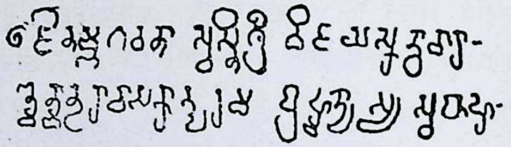

दक्षिण भारत की द्रविड़ भाषा परिवार की भाषओं के लिए जब तेलगू, कन्नड़ और तमिल मलयालम लिपियां अस्तित्व में आयीं तो संस्कृत के ग्रन्थ लिखने के लिए एक स्वतन्त्र लिपि की आवश्यकता थी। संस्कृत ग्रन्थों की लिपि को ही ग्रन्थ लिपि कहते हैं। पिछली सदी तक दक्षिण भारत में संस्कृत के ग्रन्थ इस ग्रन्थ लिपि में लिखे जाते रहे हैं। इस ग्रन्थ लिपि का विकास पल्लव लिपि से हुआ। इसलिए आरम्भिक पल्लव लेखों की लिपि को पल्लव ग्रन्थ लिपि नाम दिया गया है।

पल्लव ग्रन्थ लिपि के लेख ईसा की सातवीं सदी से मिलते हैं। नरसिंह वर्मन के समय के मामल्पुरम के लघु लेख, कांचीपुरम के कैलाश नाथ मन्दिर के शिलालेख तथा परमेश्वर वर्मन के कूरम दान पत्र पल्लव ग्रन्थ लिपि में है।

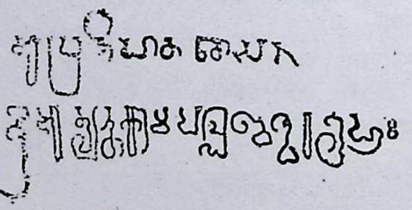

केरल प्रदेश की मलयालम लिपि का जन्म ग्रन्थ लिपि से ही हुआ है। तुळू लिपि का विकास भी ग्रन्थ लिपि से हुआ है। दक्षिण कर्नाटक की तुळू भाषा के लिए इस लिपि का प्रयोग हुआ है और

तुळू भाषियों ने इस लिपि में संस्कृत के ग्रन्थ भी लिखे हैं।

वर्तमान तेलगू और कन्नड़ लिपियों का उद्गम एक साथ हुआ है। इसलिए इन दोनों लिपियों में विशेष अन्तर नहीं है। दक्षिण के चालुक्य राजाओं के अभिलेखों में इन लिपियों का आरम्भिक रूप देखने को मिलता है।

ईसा की छटी सदी से कन्नड़ और तेलगू भाषा के लेख मिलने लग जाते हैं। कन्नड़ भाषा का सबसे पुराना लेख बादामी की वैष्णव गुफा के बाहर चालुक्य राजा मंगलेख (598-610 ई0) का है।

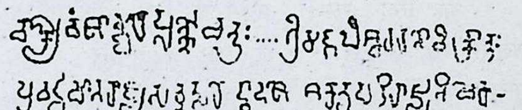

केरल प्रदेश की मलयालम लिपि का जन्म ग्रन्थ लिपि से ही हुआ है। तुळू लिपि का विकास भी ग्रन्थ लिपि से हुआ है। दक्षिण कर्नाटक की तुळू भाषा के लिए इस लिपि का प्रयोग हुआ है और तुळू भाषियों ने इस लिपि में संस्कृत के ग्रन्थ भी लिखे हैं।

वर्तमान तेलगू और कन्नड़ लिपियों का उद्गम एक साथ हुआ है। इसलिए इन दोनों लिपियों में विशेष अन्तर न ही है। दक्षिण के चालुक्य राजाओं के अभिलेखों में इन लिपियों का आरम्भिक रूप देखने को मिलता है।

ईसा की छठी सदी से कन्नड़ और तेलगू भाषा के लेख मिलने लग जाते हैं। कन्नड़ भाषा का सबसे पुराना लेख बादामी की वैष्णव गुफा के बाहर चालुक्य राजा मंगलेश (598-610 ई0) का है।

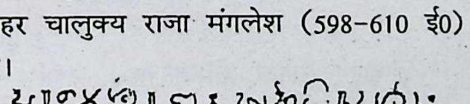

काकुस्थ वर्मन का हलेबीद लेख कन्नड़ में है। कन्नड़ भाषा की सबसे पुरानी उपलब्ध हस्तलिपि 'कवि-राजमार्ग' 877 ई. की है।

ईसा की छटी सदी से तेलगू भाषा के भी लेख मिलने लग जाते हैं। ईसा की आठवीं सदी के बाद तेलगू लिपि कन्नड़ लिपि से कुछ स्वतन्त्र होती जाती है। तेरहवीं सदी में ये दोनों लिपियाँ एक दूसरे से स्पष्ट रूप से भिन्न हो जाती है। तेरहवीं सदी के तेलगू कवि 'मंचन' अपनी लिपि को आंध्र लिपि का नाम देते है।

इसके बाद इन दोनों लिपियों का अलग अलग विकास हुआ। कन्नड़ में स्वरों की मात्राएँ लम्बी होकर व्यंजनों के दायीं ओर रखी जाने लगी। अक्षर अधिकाधिक गोलाकार होते गये। विजयनगर राज्यकाल में ये दोनों लिपियाँ पूर्ण रूप से एक दूसरे से अलग हो गई थी। पिछली सदी में जब इन लिपियों के टाइप बने, तो इन्हें वर्तमान स्थाई रूप मिला। फिर भी इन दोनों लिपियों में बड़ी समानता है। कन्नड़ जानने वाले व्यक्ति तेलगू अक्षरों को सहज ही पढ़ लिख सकता है।

दक्षिण भारत की तमिल भाषा बहुत पुरानी है। ईसा की आरम्भिक सदियों से तमिल का साहित्य मिलने लग जाता है। तमिल के अभिलेख भी लगभग इतने ही पुराने हैं। सुदूर दक्षिण भारत की कुछ गुफाओं से तमिल भाषा के लेख मिलते हैं। सित्तनवासल का एक गुफालेख :

(ब्राह्मी लिपि और प्राचीन तमिल भाषा)

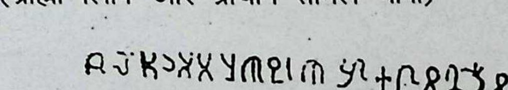

जो दो हजार साल पुराने हैं। परन्तु इनकी लिपि ब्राह्मी है। अन्तर केवल इतना है कि तमिल लेखों की इस ब्राह्मी लिपि में कुछ अक्षर विशेष हैं, जो तमिल भाषा की कुछ विशिष्ट ध्वनियों के लिए बनाये गये थे। फिर ईसा की सातवीं सदी तक हमें तमिल भाषा का कोई लेख नहीं मिलता। बीच में इस काल के दक्षिण भारत से जो लेख मिले हैं वे प्राकृत और संस्कृत भाषाओं में है, ईसा की सातवीं सदी में ब्राह्मी की एक शैली पल्लव ग्रन्थ लिपि अस्ति।त्व में आ चुकी थी। इसी पल्लव ग्रन्थ लिपि से आधुनिक तमिल लिपि अस्तित्व में आई है।

वर्तमान तमिल लिपि में 12 स्वराक्षर हैं। इनमें भी ए और ओ के लिए उच्चारण भेद के कारण दो–दो अक्षर हैं। तमिल लिपि में व्यंजनाक्षर 18 हैं। इनमें व्यंजनाक्षर 14 यह है कि, ङ, च, ञ, ट, ण, त, न; प, म, य, र, ल, व। इससे स्पष्ट है कि पर्ग के व्यंजनों का काम लिया जाता है। इन 14 व्यंजनांक्षरों भाषा की चार विशिष्ट ध्वनियों के विशेष व्यंजनाक्षर है। तमिल भाषा में ग, ज, ड, द त तथा ब की ध्वनियां हैं। परन्तु इन्हें क्रमशः क, च, ट, त,· त तथा प से ही व्यक्त किया जाता है। तमिल लिपि में श्री, क्ष, ह, स, ष जैसी कुछ ध्वनियों के लिए ग्रन्थ लिपि के अक्षरों का इस्तेमाल होता है।

वर्तमान ग्रन्थ लिपि पल्लव ग्रन्थ लिपि से विकसित हुई है। पुरालिपिविदों का मत है कि परमेश्वर्मन के सातवीं सदी के कूरम दानपत्र में ग्रन्थ लिपि का आरम्भिक रूप देखा जा सकता है।

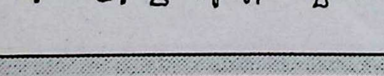

पल्लव के कुछ लेख तमिल भाषा में भी मिलते हैं। जैसे दांत वर्मन का तिरू वैल्लेरे लेख। इस लेख में हमें आरम्भिक तमिल लिपि के दर्शन होते हैं।

सुदूर दक्षिण के पाण्डय प्रदेश में तमिल भाषा के लिए वट्टेलुन्तु लिपि का विकास हुआ। यह लिपि भी ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई थी। इस वट्टेलुन्तु लिपि के अक्षर गोलाकार थे।

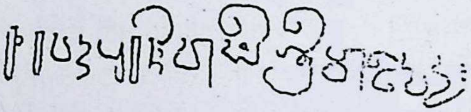

यह लिपि ग्रन्थ लिखने के लिए तो सुविधा जनक थी, परन्तु पत्थरों पर गोलाकार अक्षर सुविधा से नहीं खोदे जा सकते थे। इसलिए चौड़ नरेश राजराज ने इस लिपि के स्थान पर इसके सीधे अक्षरों वाली कोल–एलुत्तु लिपि को पसन्द किया। फिर भी सुदूर दक्षिण में पिछली सदी तक वट्टेलुन्तु लिपि का प्रयोग होता रहा।

पल्लवों के बाद दक्षिण भारत में शक्तिशाली चौड़ नरेशों का शासन शुरू हुआ था। इन चौड़ नरेशों के लेख तमिल व संस्कृत दोनों ही भाषाओं में मिलते हैं।

पन्द्रहवीं सदी से तमिल लिपि लगभग वर्तमान रूप धारण करती है। पिछली सदी में इस लिपि के मुद्रणाक्षरों को स्थाई रूप मिला। दक्षिण भारत में संस्कृत के ग्रन्थ 'ग्रन्थ लिपि' में लिखे जाते रहे। अब ग्रन्थ लिपि का स्थान नागरी लिपि ने ले लिया है।

प्राचार्य
लाल बहादुर शास्त्री शिक्षा महाविद्यालय
113/114, एस.सी. रोड, शेषाद्रिपुरम
बैंगलूर–560020 कर्नाटक

नागरी संरक्षण देश हित में

–डॉ0 राज सक्सेना

हमारी भाषा के साथ जन्म से ही यह स्थिति रही है कि वह 'गरीब और जोरू' सरीखी है। उससे कभी भी और कहीं भी किसी को भी मज़ाक कर लेने का खुला अधिकार प्राप्त है। वर्ष 1931 में तत्कालीन परिस्थितियों के अधीन प्रगतिशील लेखक संघ ने यह प्रस्ताव किया था कि हिन्दी की लिपि रोमन लिपि स्वीकार कर ली जाय। विकट विरोध हुआ और इस अव्यवहारिक प्रस्ताव को कोई समर्थन न मिल सका तब से कभी न कभी इस प्रस्ताव को किसी न किसी मंच या व्यक्ति द्वारा उठाया जाता रहा है। हद तो तब हुई जब स्वयं हिन्दी के विद्वान प्रोफेसर स्तर के लोग इसकी खुला समर्थन करने और समाचार पत्रों में जनसमर्थन के लिए लेख छपवाने लगे। गत वर्ष इस प्रकार के कई लेख प्रकाशित हुए कि हिन्दी को रोमन लिपि में लिखना व्यवहारिक और समयानुकूल होगा।

यहाँ यह बतलाना समीचीन होगा कि रोमन अक्षरों को ढ़ाई हज़ार वर्ष पूर्व सेमेटिक लोगों से ग्रीक लोगों ने अपनाया था। स्वयं इस लिपि को प्रयोग करने वाले अनेक विद्वानों ने इसकी कमियों -को उजाकर किया है। डॉ0 आर्थर मेक्नाल्ड ने संस्कृत साहित्य के इतिहास में लिखा है", 400 ई0पू0 पाणिनी के काल में भारत ने अपनी लिपि को वैज्ञानिक रूप से समृद्ध कर विकास के उच्चतम स्थान पर प्रतिष्ठित कर लिया था। जबकि हम यूरोपियन लोग इस वैज्ञानिक युग में भी ढ़ाई हजार वर्ष बाद भी उस वर्णमाला को गले लगाए हुए हैं। जिसे ग्रीकों ने पुराने सेमेटिक लोगों से अपनाया था, जो हमारी भाषाओं के समस्त ध्वनि समुच्चय का प्रकाशन करने में असमर्थ हैं। हम तीन हजार साल पुराने अवैज्ञानिक स्वर व्यंजन मिश्रण का बोझ आज भी पीठ पर लादे हुए हैं।" यह तो एक उदाहरण मात्र है अनेकों यूरोपियन विद्वानों ने रोमन लिपि की अपूर्णता सिद्ध की है और उसमें संशोधन या अन्य लिपि के प्रयोग पर बना दिया है। कुछ प्रमुख विद्वान सर–ईसाक पिटमैन, हुक्स मैकडानल थामस, एफ एस ग्राउसु, व्युकर हार्नले, जान शोर तथा आइजैक–टेलर सरीखे विद्वान इस कमी को उजागर करते रहे हैं। यहाँ तक कि सर बर्नाड शॉ जैसे विद्वान ने यह वसीयत तक की कि, "अंग्रेजी भाषा में होने वाले 42 उच्चारणों के लिए जो व्यक्ति 42 अक्षरों की एक पूरी वर्णमाला तैयार कर देगा उसे वे अपनी सम्पत्ति का एक बड़ा हिस्सा प्रदान करने को तैयार है।" और भारत में जार्ज बनार्ड शॉसे बड़े हिन्दी विद्वान हिन्दी की लिपि रोमन करने की वकालत में जुट गए हैं।

एक बहुत बड़ी विडम्बना यह भी है कि समय समय पर गठित शिक्षा आयोगों की सबल शिफारिसें कि "शिक्षा का माध्यम" भारतीय भाषाओं को ही बनाया जाए। बच्चे की प्राथमिक शिक्षा का माध्यम उसकी मातृ भाषा को ही बनाया जाए।" को दर किनार करते हुए हमारी अंग्रेजी मानसिकता की गुलाम सरकारें काले अंग्रेज नौकरशाहों के दबाब में इन शिफारिसों को लागू नहीं कर रही हैं। फलस्वरूप सरकारों का प्रश्रय पाकर अंग्रेजी खूब फल फूल रही है अपनी जन्मजात कमियों के बावजूद भी। सरकारों के अंग्रेजी मोह और इसे नौकरी परक रूप देने तथा परीक्षाओं का माध्यम बनाये रखने के कारण "कोढ़ में खाज' की स्थिति आतीजा रही है। आज

गली-गली खुलने वाले अंग्रेजी के अतिरिक्त स्कूल कैम्पस में कोई अन्य भाषा विशेष रूप से हिन्दी बोलने पर जुर्माना ढोकने वाले स्कूलों की संख्या लगातार बढ़ रही है। बच्चे अंग्रेजी प्रेमी और हिन्दी विमुख हो रहे हैं। रही सही कसर हिन्दी मीडिया के काण्वेन्टी प्रोडक्ट हिन्दी को हिंग्लिंश बनाने की सुपारी ले चुके प्रस्तोता व्यक्ति पूरी कर रहे हैं। आज स्थिति यह है कि पूरे भारत के मध्यम और निर्धन वर्ग के कुछ हिस्से में अपने बच्चे को हिन्दी में बोलते देख कर शर्म आनी प्रारम्भ हो चुकी है। अस्तु -

यह स्थिति तब है जब विश्व के भाषाविद और विद्वान देवनागरी लिपि के ध्वन्यात्मक और सम्पूर्ण वैज्ञानिक गुणों के आधार पर नागरी लिपि को सर्वोत्तम मान रहे हैं। जो बहुत थोड़े से परिवर्द्धन और परिवर्तन से 'विश्व लिपि' बनने की पूर्ण क्षमता रखती है। यह स्मरणीय है कि प्रतिलेखन और लिप्यंतरण के दृष्टिकोण से देवनागरी लिपि उपलब्ध अन्य लिपियों से बहुत ऊपर है, रोमन और फारसी लिपियाँ तो इसके समक्ष कहीं भी नहीं ठहरतीं। जहाँ तक देवनागरी में जटिलता की दुहाई का प्रश्न है, मात्र समझाने के लिये रोमन में 26 अक्षर हैं। वास्तव में यदि कैपीटल और स्माल आदि पर विचार करें तो ये 26x4 = 104 अक्षर बनते हैं। जो सर्वाधिक हैं और इतनी संख्या होने पर भी "जो बोला जाय वही लिखा जाए" उक्ति पर खरे नहीं उतरते। जबकि देवनागरी लिपि में आज जो सोचते हैं, जो बोलते हैं या जो चाहते हैं वही लिखकर वही पढ़ भी सकते हैं। है किसी अन्य लिपि में यह विशेषता। जबकि देवनागरी लिपि संसार की किसी भी भाषा में जो बोला जाय वही लिख सकने में पूर्णतया सक्षम है।

हिन्दी और देवनागरी लिपि की दुर्दशा के लिए हम भी कम जिम्मेदार नहीं हैं। अपने बच्चों को रोजगार परक भाषा के रूप में मानकर हम अंग्रेजी को जो तरजीह दे रहे हैं। उसके दुष्परिणाम भारत की अगली पीढ़ी भुगतेगी। जब देश में देवनागरी में हिन्दी लिखने वालों की संख्या अत्यल्प रह जाएगी। आने वाली नस्ल कभी कभार हिन्दी बोल तो लेगी मगर लिखेगी रोमन में ही क्योंकि उसे देवनागरी में लिखने की आदत ही नहीं रहेगी। फिर हिन्दी की जो दुर्दशा होगी वह हृदय विदारण का पर्याय बन जाएगी। देहरादूरन -डेहराडून हो जाएगा। दिल्ली - डिल्ली हो जायेगी। रामदेव रैमडेव हो जाएँगे। हरिद्वार-हरिड्डआर हो जाएगा। गहलौत जी - गेहलोट हो जाएंगगे। अंग्रेजी की दरिद्रता के कारण बलसाड़-बलसाड हो जाएगा। अहमदाबाद - एहमद्राबाड हो जाएगा। सोनभद्र - सोनभड्र बोला जाने लगेगा। ऐसे बहुत से उदाहरण दिए जा सकते हैं। स्थिति आज यह है कि जनता के अन्धानुकरण और शासन की हिन्दी विद्वोषी और अंग्रेजी समर्थक नीति के चलते, सौम पित्रोदा जैसे अंग्रेजी भक्तों के, जो पहली कक्षा से अंग्रेजी पढ़ना अनिवार्य कर चुके हैं के रहते हिन्दी और विशेष रूप से देवनागरी पर इस समय संकट छाया हुआ है। इससे बहुत निराश होने की आवश्यकता नहीं है। अधिक से अधिक 20-25 साल यह संकट चलेगा। मगर इस 20-25 साल के संक्रमण काल से हिन्दी को प्रदूषित होने से बचाना अब पहली प्राथमिकता हो गई है। अगर अगले 25 साल हमने अपनी शब्द सम्पदा को अंग्रेजी गिद्ध का कौर बनने से बचा लिया तो हिन्दी बचेगी वरना इसे हिंग्लिश बनने से कोई नहीं रोक पाएगा।

आखिर कैसे बचे हमारी शब्द सम्पदा और शब्दों का शुद्ध उच्चारण। इसके लिए मैं अंग्रेजी के दो अक्षरों का मुख्य रूप से उदाहरण दूँगा। वे हैं टी और डी। टी अक्षर त और ट दोनों के लिए समान रूप से प्रयोग होता है। तो डी अक्षर द, ड और ड़ तीन अक्षरों का उच्चारण व्यक्त करके हिन्दी को प्रदूषिल कर रहा है। अन्य उदाहरण तो गौण हैं यहाँ यह भी बता देना उचित होगा कि हमने अंग्रेजी के अक्षर को हिन्दी या देवनागरी के अक्षर का आधा मान कर उसके

साथ ए (a) अक्षर जोड़ने की परम्परा डाल कर हिन्दी का रूप स्वयं बिगाड़ दिया है। फलस्वरूप वेदा, योगा, पतांजलि, कुन्दना, नैनीटाल, छट्टीसगढ़, बलसाड़ सा उट्टराखण्ड कोलाकाटा आदि लाखों नामों का उच्चारण प्रदूषित हो जाएगा और सही नाम हिन्दी की देवनागरी लिपि की डिक्शनरी में मन-समझाने और प्रदर्शन के लिए अलगली नस्ल को दिखाना पड़ा करेगा। तो आखिर इस अंग्रेजी की पूर्ण यौवनावस्था में चल रही महामारी से बचाव कैसे हो। क्या व्यवस्था की जाय कि हिन्दी बचे। इतिहास में इसका नाम विलुप्त भाषा के रूप में दर्ज होने से बचाने के लिए सबसे पहले हमें यह नियत करना होगा कि अंग्रेजी (रोमन) का एक अक्षर देवनागरी के एक पूर्ण अक्षर के बराबर है। हमें स्कूल (School) को S जो आधी ध्वनि देता है को पूर्ण अक्षर उसी प्रकार मानना होगा जैसे इसी शब्द का अंतिम अक्षर एल (l) पूर्ण ल की ध्वनि देता है। आग्रही अंग्रेजी परस्त तो रोमन के अक्षरों में कुछ घटा बढ़ा नहीं करेगें। वे तो चाहते ही हैं कि हिन्दी भ्रष्ट हो। मगर हमें रोमन के प्रत्येक अक्षर को पूर्ण हिन्दी अक्षर मानना ही होगा। आप कहेंगे कि इससे बड़ी हास्यास्पद स्थिति पैदा हो सकती है। उदाहरण स्वरूप बरेली शब्द को इस स्थिति में लिखेंगे तो इस प्रकार बी आर ई एल आई या वाई (यहाँ हम छोटी ई के लिए आई और बड़ी ई के लिए वाई अक्षर नियत कर सकते हैं। इसी प्रकार हिन्दी का हलन्त लगाकर यथ अक्षर को ह्रस्व या दीर्घ प्रदर्शित किया जा सकता है। बड़ी ई के लिए डबल ई (ee) भी निश्चित किया जा सकता है। अब इस प्रकार हम बरेगली लिखें तो वह हों BRELY या BRELEE. आप कहेंगे यह कितना अटपटा लगेगा। हमारा कहना यह है कि यह BAREILLY से कम अटपटा लगेगा। इसी प्रकार लखनऊ के लिए LKHNAU लिखना LUCKNOW से कम अटपटा और सरल लगेगा आदत पड़ जाने पर यह बी यू टी - बट और पी यू टी - पुट से कम अव्यवहारिक लगेगा। अब लेते हैं T का उदाहरण टी को हम जब त के लिए प्रयोग करें तो उसके नीचे डैश लगा कर त का उच्चारण निश्चित कर दें तो T कविता डैश प्रयोग स्वमेव ट के लिए निर्धारित हो जाना माना जाएगा। अब आए डी (D) पर D स्वयं में तीन ध्वनियों द, ड और ड़ उच्चारण के लिए प्रयोग होता है। यदि D के नीचे डैश लगा कर D̲ द, डी के नीचे बिन्दु लगा कर Ḍ - ड़ निश्चित कर दिया जाए तो D स्वयमेव ड के लिए बच जाएगा और इसे ड के लिए ही निर्धारित किया जा सकता है। अब देखें क्या स्थिति बनती है। अहमदाबाद लिखने के लिए हम निःसंकोच A H M D̲ A B A D̲ लिख व पढ़ सकेंगे। बलसाड़ के लिए B L S A D लिखा जाएगा तो मुलुण्ड के लिए M U L U N D की ही ध्वनि देगा। है ना कितना सरल मगर यह सब हमें करना अपनी इच्छा शक्ति के दम पर ही बिना सरकारी मदद के हिन्दी को बचाने के लिए हिन्दी वालों को ही कण पड़ेगा। ध के लिए D̲H, ढ के लिए DH और ड़ के लिए ḌH का प्रयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार न के लिए N और ण के लिए N के नीचे डैश लगाकर N̲ का प्रयोग सटीक रहेगा। मात्राओं के लिए छोटी इ के लिए i, बड़ी ई के लिए ee, ए के लिए e और एं के लिए ey का प्रयोग उचित रहेगा। इसी प्रकार अन्य विसंगतियों और उच्चारण दोष के समाप्त करने के लिए इस प्रकार के छोटे छोटे संशोधन करके अपने स्तर से ही शुरूआत करके हमें हिन्दी को बचाना होगा। तभी दूसरों से हमारे आग्रह करने पर यह किया जाना सम्भव होगा। और फिर दीप से दीप जलेगा। पूरे देश में यह प्रयोग सफल होगा। हिन्दी बचेगी देवनागरी बचेगी और सबसे बड़ी बात हिन्दी बची तो भारतीयता बचेगी। राष्ट्र बचेगा। संस्कृति बचेगी वरना सब कुछ मटियामेट हो जाएगा। कोई नहीं बचा सकेगा।

धनवर्षा, हनुमान मन्दिर,
पीलीभीत रोड, खटीमा-262308
(उत्तराखण्ड)

नागरी-संगम लेखानुक्रमणिका

श्रीमती अरूणा पाठक

(अंक 126 से अंक 129 तक)

लेखक का नाम	अंक	लेख का विषय
डॉ. अकेला भाइ	127	पूर्वोत्तर भारत में नागरी लिपि की आवश्यकता
श्रीमती अरूणा पाठक	127	नागरी संगम लेखानुक्रमणिका
डॉ. अशोक द्रोपद गायकवाड़	127	विनोबा जी और नागरी लिपि प्रचार
डॉ. आनन्द स्वरूप पाठक	127	लिपि सुधार, लिपि निर्माण और व्यावहारिकता
	128	संख्या तथा अंक - पद्धति का इतिवृत्त
डॉ. इसफाक अली	127	नागरी अंकों की ऐतिहासिकता व स्वरूप
डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया	126	रोमन बनाम नागरी लिपि
श्री गफूर स्नेही	128	नागरी लिपि और हमारी भाषा (कविता)
चवाकुल नरसिंह मूर्ति	126	नागरी लिपि की वैज्ञानिकता
चित्तरंजन भारती	126	असमिया और नागरी लिपि का संबंध
डॉ. चन्द्रलेखा डिसूजा	126	नागरी और कोंकणी
डॉ. चौदते प्रदीप कुमार	128	नागरी लिपि-उद्भव, विकास और स्वरूप
डॉ. जगन्नाथन वी. आर.	126	देवनागरी लिपि स्वरूप और समस्याएँ
डॉ. जफर कॉझी निहकत	129	सूचना प्रौद्योगिकी और देवनागरी लिपि भविष्य की आशा
डॉ. तिलक सिंह	128	विश्व लिपियों का मानदण्ड है नागरी लिपि
डॉ. परमानन्द पांचाल	126	हिन्दी को रोमन लिपि अपनाने की सलाह देने वालों के नाम
	127	विश्व में नागरी लिपि का वर्चस्व स्थापित
	129	राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द और नागरी लिपि
डॉ. बदरीनाथ कल्ला	128	काश्मीर की शारदा लिपि
श्री बी. एन प्रसाद	126	पूर्वोत्तर की भाषाएँ और नागरी लिपि

डॉ. भगवान शरण भारद्वाज	128	देवनागरी की राष्ट्रनागरी से विश्वनागरी तक की यात्रा
डॉ. मीनू शर्मा	129	हिन्दी भाषा को सम्बोध्य और सम्प्रेष्य बनाने में देवनागरी का योगदान
डॉ. मोहसिन खान	127	हिन्दी भाषा देवनागरी लिपि अन्तः सम्बन्ध प्रचार एवं प्रसार
डॉ. श्री भगवान शर्मा	129	बाबू गुलाबराय का 133वाँ जयन्ती समारोह
डॉ. योगेन्द शर्मा अरूण	127	देवनागरी अनुपम प्यारी
श्री रामपाल पांचाल	129	देवनागरी के प्रथम प्रचारक श्री गौरीदत्त
डॉ. राम मनोहर लोहिया	126	वर्णमाला भाषा और शिक्षा
डॉ. राखी सिंह	127	सूचना प्रौद्योगिकी में नागरी लिपि का उपयोग
डॉ. राम गोपाल शर्मा 'दिनेश'	127	देवनागरी के अधिवक्ता, तुम्हें प्रणाम
डॉ. रामनिरंजन 'परिमलेन्दु'	127	ईस्ट इण्डिया कम्पनी शासनकाल में देवनागरी लिपि
डॉ. राम प्रकाश कुलश्रेष्ठ	128	टाकरी लिपि का उद्भव और विकास
डॉ. रामनिवास 'मानव'	128	देवनागरी लिपि
डॉ. विजय लक्ष्मी ई.	127	पूर्वोत्तर की लिपियों के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग–मणिपुर के विशेष संदर्भ में
श्री सन्तोष कुमार	128	सूचना प्रौद्योगिकी और नागरी लिपि का मानकीकरण
डॉ. सुरैया यूसुफअली शेख	128	सूचना प्रौद्योगिकी और नागरी लिपि
डॉ. शशिकला निगम	126	देवनागरी तुम्हें प्रणाम (कविता)
डॉ. शीला मिश्र	126	भारतीय बाङ्मय में लिपि
डॉ. शहाबुद्दीन नि. मौ. शेख	129	33वें अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन का विवरण
डॉ. हणमन्त राव पाटिल	129	आदर्श लिपि की कसौटी पर देवनागरी लिपि का मूल्यांकन

डी–106, पुष्पांजलि एन्क्लेव

पीतमपुरा, दिल्ली–110034

फोन : 65586968

सूचना प्रौद्योगिकी में नागरी लिपि के फिसलते कदम

-डॉ. ओम विकास

1983 में तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन दिल्ली में हुआ था। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने इसका उदधाटन किया था। हिन्दी में कंम्प्यूटर के प्रयोग की संभावनाएं दिखाने के लिए कार्य का समन्वयन दायित्व भारत सरकार के इलेक्ट्रोनिकी विभाग को मिला। श्री मधुकर राव चौधरी और प्रो. रवीन्द्र श्रीवास्तव का प्रोत्साहन मिला। भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिकी विभाग ने सम्मेलन में प्रतिभागियों के रजिस्ट्रेशन की शोध परियोजना BITS पिलानी को दी। वैज्ञानिकों ने उस समय सारा रजिस्ट्रेशन कार्य हिन्दी में कर दिखाया। सम्भावना को सकारात्मक अभिव्यक्ति दी। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पिछले दो दशक में बहुत तेजी से विकास हुआ है - कई नए समर्थ ऑपरेटिंग सिस्टम, विश्व भाषायी यूनीकोड, ओपेन टाइप फोंट, ऑफिस सूट, विश्व व्यापी वेब, मानव भाषा संसाधन की प्रगत प्रविधियां, मशीनी अनुवाद, ओ सी आर, टेक्सअ टू स्पीच, इत्यादि।

छह दशक पहले स्वराज में अपनी भाषा और संस्कृति को समृद्ध और व्यापक बनाने का लक्ष्य था। अतीत पर गर्व था, और जनशक्ति पर भरोसा था। गूढ़ ज्ञान को खोजते हैं तो संस्कृत वाङ्मय में चले जाते है, देवनागरी लिपि में प्रचुर साहित्य भी मिल जाता है। 21वीं सदी का एक दशक बीत गया है, लेकिन पहले जैसा सकरात्मक संकल्प संशय में बदलता जा रहा है। "सूचना प्रौद्योगिकी और देवनागरी लिपि" चर्चा और मंथन का विषय बन गया है। अभीष्ट लक्ष्य पाने में संशय और विलम्ब से प्रबुद्ध वर्ग चर्चा करता है जिससे लोक कल्याणकारी लक्ष्य को भुला न दिया जाए।

संकल्पनाओं और विचारों के आदान-प्रदान के लिए भाषा जन्म लेती है। भाषिक आदान-प्रदान तत्काल मौखिक संभव है। कालांतर में इसे लिपि के माध्यम से सुरक्षित रखा जा सकता है। अतीत में लोग दूर-दूर बसे थे सो उनकी भाषाएं अलग-अलग थी। सभ्यता के विकास और आवागमन के बढ़ने से भाषाएं और लिपियां एक दूसरे से प्रभावित हुई। पाणिनी जैसे मनीषियों ने ध्वनि एवं लेखन मं ऐक्य पर बल देते हुए ध्वनियों का स्वर एवं व्यंजन में वर्गीकरण किया, उच्चारण स्थान और विधि के आधार पर लिपि संरचना सारणी बनायी। लिपि-व्याकरण भी दिया। अन्य सभी लिपियों की अपेक्षा इसका ध्वन्यात्मक, वैज्ञानिक आधार है। इसे देवनागरी कहा गया। आजकल संक्षेप में इसे 'नागरी लिपि' कहते हैं। इसकी आधार संरचना 'पाणिनी-सारणी' है।

पाणिनी सारणी (Panini Table)

P = (P1, P2, P3, P4, P5), M = (M1, M2, M3, M4, M5, M6)

		व्यंजन						स्वर					स्वरांत
		अप्र-अघ	मप्र-अघ	अप्र-घ	मप्र-घ	नासिक्य	अलि जिह्वा	व्युत्पन्न	व्युत्पन्न	व्युत्पन्न	मूल	मूल	
		M1	M2	M3	M4	M5	M6	व्यंजन स्वर	दीर्ध	हृस्व	हृस्व	दीर्ध	मात्रा
कंठ	P1	क	ख	ग	घ	ङ	ह	-	-	-	अ	आ	- ा
तालु	P2	च	छ	ज	झ	ञ	श	य (इ+अ)	ऐ	ए (अ+इ)	इ	ई	ि ी
मूर्ध	P3	ट	ट	ड	ढ	ण	ष	र (ऋ+अ)	-	-	ऋ	ॠ	ृ ॄ
दंत	P4	त	थ	द	ध	न	स	ल (लृ+अ)	-	-	लृ	लॄ	--
ओष्ठ	P5	प	फ	ब	भ	म	-	व (उ+अ)	औ	ओ (अ+उ)	उ	ऊ	ु ू ो ौ

P : उच्चारण स्थन, M : उच्चारण विधि

प्रौद्योगिकी में बहुत शक्तिशाली मशीनें बनीं। मशीनों से जोखिम भरे खतरनाक काम, भारी भरकम काम और सूक्ष्मतर कामों को नियमित रूप से बिना थके, बिना रूके किया जाना संभव हुआ। बुद्धिपरक कामों को करने के लिए कंम्प्यूटर विकसित हुए। पहले संस्थाआं पर गणना के लिए, बाद में मानव भाषाआं को समझकर विविध संसाधन कार्यों के लिए। कंम्प्यूटर पर कार्य कने की मूल प्रक्रिया 0–1 के कोड समूहों पर होती है। भाषा के स्वर–व्यंजन, अक्षरों, संख्याओं, विशेष चिह्नों, संचार चिह्नां आदि को 0–1 के कोड समूहों पर होती है। भाष के स्वर–व्यंजन, अक्षरों, संख्याओं, विशेष चिह्नों, संचार चिह्नों आदि को 0–1 के बाइटों में कोडित करते हैं। कंम्प्यूटर का प्रथम आविष्कार और तदनन्तर विकास रोमन लिपि पर आधारित अंग्रेजी भाषी देशों में हुआ। कंम्प्यूटर और कम्यूनिकेशन प्रौद्योगिकियों के संयोग से सूचना का संसाधन और संचार व्यापक हुआ। विश्व व्यापी वेब ने *वसुधैव समीपं* को साकार किया। दूरियां कम हुई। सूचना की खोज, संक्षेपण, भाषान्तरण संभव होने लगे हैं।

विकास की यात्रा का निष्कर्ष है कि सूचना प्रौद्योगिकी का विकास सैद्धांतिक रूप से लिपि या भाषा-परक नहीं है। जो रोमन लिपि में अंग्रेजी आदि में संभव है, वह नागरी लिपि में भी संभव है।

नागरी लिपि के संदर्भ में प्रौद्योगिकी विकास तो किए गए हैं। लेकिन उनका प्रयोग व्यापक नहीं हो पा रहा है। आओ विचार करें, क्या है, और क्या नहीं है?

फोंट : पहले टू टाप फोंट विकसित किए गए। तदनन्तर ओपेन टाइप फोंट प्रचलन में आए। प्राइवेट स्तर पर और सरकारी अनुदान से बनाए गए। कई फोंट मुफ्त में डाउनलोड किए जा सकते हैं।

अड़चन कहा है? फोटों के संरचना आधार अलग-अलग होने से फाइल खोलने के लिए वह फोंट लोड किए जाने की आवश्यकता पड़ती है। माइक्रोसॉफ्ट विन्दोज़, एप्पिल का मेक ओएस, लाइनेक्स आदि ऑपरेटिंग सिस्टम प्रचलन में है। लेकिन उन पर नागरी फोंट का अलग प्रावधान लेने पर एक दो फ़ोंट ही मिलते है और उनमें भी पारस्परिक समानता नहीं। इन ऑपरेटिंग सिस्टमों के आधार पर ऑफिस सूट में कम से कम 10 (ओपेन टाइप फोंट) उपलब्ध कराए जाएं। एक प्रकार के फोंट सभी पर उपलब्ध होने पर फाइल की सूचना का आदान-प्रदान आसान होगा। भारत सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग ने हिन्दी सी.डी. में मुफ्त प्रयोग के लिए कई फोंट दिए हैं लेकिन उनके व्यावसायिक प्रयोग पर रोक लगी है। इनमें से कम से कम 10 सुंदर फोंट व्यावसायिक प्रयोग के लिए भी मुफ्त मुक्त किए जाएं। यह जनता के हित में होगा, इससे नागरी लिपि का प्रयोग संवर्धन होगा, भारतीय भाषाएं समृद्ध होंगी। सकल भारतीय फोंट को भी देने से सभी भारतीय भाषाओं को लाभ होगा।

फोंट कन्वर्जन यूटिलिटी : फोंट विविध हैं। इन्हें आपस में बदलने के लिए और इन्हें यूनीकोड में परिवर्तन करने के लिए फोंट कन्वर्जन यूटिलिटी प्रोग्राम बनाए गए हैं। ये भी व्यावसायिक प्रयोग के लिए मुफ्त मुक्त उपलब्ध हों। जनहित में भारत सरकार पहल करे।

इनपुट : इनपुट के लिए की-बोर्ड ड्राइवर सॉफ्टवेयर ऑपरेटिंग सिस्टम का अभिन्न अंग है। रोमन के लिए QWERTY की बोर्ड सर्वाधिक प्रयोग में है। नागरी लिपि में इनपुट के लिए कई प्रकार के की बोर्ड बनाए गए हैं - इंस्क्रिप्ट, फोनेटिक, रेमिंग्टन, इत्यादि। इन्हें अलग से लोड करना पड़ता है। भारत की राजभाषा नागरी लिपि में हिन्दी है। विडम्बना है, शासकीय मान्यता, जनसंख्या की बहुलता होते हुए भी सरकारी विभागों, उपक्रमों और सरकारी वित्त पोषित परियोजनाओं में नागरी की-बोर्ड ड्राइवर के पूर्व लोडित होने की अनिवार्यता नहीं है। शायद एक प्रतिशत से भी कम, संभवतः नगण्य, कंम्प्यूटरों पर ऐसी सुविधा होगी। नागरी की-बोर्ड INSCRIT मानक के अनुसार TVS ने बनाया। विडम्बना है कि सरकारी विभागों में भी खरीददार नहीं मिले। इसलिए TVS ने इनको बनाना बंद कर दिया।

स्टाफ सलेक्शन कमीशन (SSC) की टंकण परीक्षा में INSCRIPT नागरी की-बोर्ड पर टैस्ट की अनिवार्यता अथवा वरीयता नहीं है।

कोडिंग : 1980 के दशक में ISCII कोड भारतीय भाषाओं की लिपियों के लिए बनाया गया। परिवर्धित देवनागरी को अन्य भारतीय लिपियों के लिए आधार बनाया गया। कुछ प्रचलन में आया भी। दशक के अंत तक UNICODE का प्रचार-प्रसार बढ़ा। वैश्विक स्तर पर वेब पर बने रहने के लिए UNICODE का प्रयोग सर्वमान्य हो गया है। (संदर्भ : www.tdil.mit.gov.in)

नागरी लिपि ध्वन्यात्मक है। इसका लिपि व्याकरण भी है। व्यंजनों के अंत में स्वर के साथ स्वतंत्र ध्वनि को अक्षर (Syllable) कहते है। व्यंजन का तात्पर्य स्वर विहीन शुद्ध व्यंजन से हैं। देवनागरी कोड हिन्दी, संस्कृत, नेपाली, कोंकणी,

कश्मीरी, डोंगरी आदि के लिए और वैदिक संस्कृत के लिए भी प्रयुक्त होता है।

फोनीकोड : अब तक कोडिंग का आधार रेखीय रूप में पृथक रूप (0..9 संख्या, a....z, A....Z वर्ण रूपिम;............? पंचच्युएशन चिह्न आदि हैं। पाणिनी सारणी से ध्वनि लिपि का परस्पर प्रभाव समझा जा सकता है। स्वतंत्र स्वर रूपिम है, व्यंजन के अंत में स्वर का रूप बदल कर मात्रा बन जाता है जो ध्वन्यात्मक इकाई अक्षर (Syllable) है। V (स्वर), CV (व्यंजन-स्वर) CCV (व्यंजन-व्यंजन-स्वर) आदि अक्षर हैं। मूल अक्षर (Syllable) को कोड करने फोनीकोड सभी भाषाओं के लिए उपयुक्त होगा। भाषा के अनुसार इनके इनपुट-आउटपुट निश्चित किए जा सकते हैं। 'फोनीकोड' भारत का विशिष्ट योगदान होगा।

लिप्यंतरण : परिवर्धित देवनागरी वर्णमाला से विश्व भाषाओं की अधिकांश ध्वनियों को अभिव्यक्त किया जा सकता है। जैसा लिखों वैसा बोलो। यह स्वनिम-रूपिम की समानता अन्य किसी लिपि में नहीं है। INSROT लिप्यंतरण मानक बनाया गया था। लेकिन प्रयोग में विविध प्रकार की लिप्यंतरण तालिकाएं मिलती है। (संदर्भ : www.tdil.mit.gov.in)

वेब पर आधारित नागरी लिपि

वेब पर सूचना का आदान-प्रदान तीव्रतर और सुगमता से हो रहा है। 2010 में इंटरनेट यूज़र (प्रयोक्ता) संख्या क्रम में 10 प्रमुखतम भाषाएं हैं - इंग्लिश, चाइनीज, स्पैनिश, जापानी, पुर्तगीज, जर्मन, अरबी, फ्रैंच, रशियन और कोरियन। हिन्दी-भाषी जनसंख्या (1.2 बिलियन) विश्व में तीसरे स्थान पर है, लेकिन इंटरनेट पर हिन्दी का स्थान बहुत नीचे है।

(संदर्भ : http://www.internetworldstats.com/stats7.htm)

नागरी लिपि में सुगमता के लिए कतिपय सुन्दर मानक फोंट व्यावसायिक दृष्टि से सभी IT उद्योगों को मुफ्त और मुक्त उपलब्ध है।

डोमेन नेम URL, e-mail ID नागरी लिपि में अभी तक नहीं है। औपचारिक चर्चाएं तक दशक से हो रही हैं। अरबी लिपि में डोमेन नेम हैं, यह बहुत जटिल लिपि है। विश्व स्तर की यह पहल सरकार ही कर सकती है।

नागरी OCR

ओ.सी.आर. पर शोध कार्य दो दशकों से चल रहा है। लेकिन किसी सरकारी विभाग में भी नागरी ओ.सी.आर. नहीं मिलता। सभी ओ.सी. आर. द्विलिपिक-रोमन एवं नागरी में - और अन्य भारतीय भाषा लिपियों के विकल्प के साथ भी उपलब्ध कराए जाएं।

W3C में नागरी मानक

W3C (World Wide Web Consortium) वेब पर सूचना के सुगम आदान-प्रदान, रख-रखाव के लिए विविध प्रकार के मानक बनाता है जिन्हें IT कंपनियां स्वीकार कर तदनुसार सुविधा प्रदान करती है। HTML, XML, CSS इत्यादि में नागरी का स्पष्ट प्रावधान नहीं है।

नागरी में यूटिलिटी सॉफ्टवेयर

लाइब्रेरी, एकाउंटिंग, स्कूल-कॉलेज, प्रबंधन, ट्रांसपोर्टेशन, पाठ-लेखन, ऑथरिंग आदि सॉफ्टवेयर नागरी लिपि में मुफ्त, मुक्त सर्वसुगम हों। 'जनकल्याण सॉफ्टवेयर' के अंतर्गत सरकार उन्हें उपलब्ध कराए। सरकारी की "वन लेपटॉप पर चाइल्ड" (OLPC) परियोजना में भी प्रत्येक लेपटॉप

पर नागरी का भी प्रावधान हो।

नागरी लिपि और भाषा

नागरी लिपि का प्रयोग भाषायी जनसंख्या के हिसाब से बहुत कम है, नगण्य है। अंग्रेजी के मोह में भारतीय भाषाओं को राजाश्रय के बजाय राज-उपेक्षा मिलने से नागरी लिपि का प्रयोग शिक्षा, व्यापार, मीडिया में घटता जा रहा है।

कुछ लोग ब्लॉग आदि बना लेने से अपनी-अपनी पीठ ठोंक लेते हैं, लेकिन वस्तुसिथिति है कि समाज में नागरी लिपि का प्रयोग हेयकर बनता जा रहा हैं। इंडेन गेस के बिल, ट्रेन रिजर्वेशन के ई-टिकिट, CGHS के मेडीसिन प्रिस्क्रिप्शन डिटेल आदि जन सेवाओं में देवनागरी में कोई सुविधा नहीं है। ई-गवर्नेंस में छुट-पुट हिन्दी का दिखावा है। क्यों न हो? आम आदमी की जुबान ऊपर के चन्द लोगों ने कुर्सी मोह मं दबाए रखी है।

संक्षेप में – समस्या टैक्नोलोजी की नहीं, प्रत्युत राजनीतिक इच्छा शक्ति की है। नीति का प्रभावी अनुपालन हो। नीति है, पर अनुपालन नहीं होता है। मात्र शृगाल-विलाप है।

कतिपय सुझाव इस प्रकार हैं –

1. नागरी लिपि ध्वन्यात्मक लिपि है। विज्ञान-सम्मत सर्वध्वनि-लिप्यंकरण पाणिनी-सारणी का आंधार है। भाषा विषयक मानकीकरण में पाणिनी-सारणी को ध्यान में रखा जाए।
2. नागरी-रोमन परिचय चार्ट पर्यटन केन्द्रों और एयरपोर्ट आदि पर उपलब्ध हों।
3. टी.वी. चैनलों पर आधारित फोनीकोड का विकास किया जाए।
4. नागरी लिपि पर आधारित फोनीकोड का विकास किया जाए।
5. नागरी लिपि के कम से कम दस सुंदर मानक ऑपेन टाइप फोंट व्यावसायिक प्रयोग के लिए भी मुफ्त, मुक्त ओपेन डोमेन में सर्वसुलभ कराए जाएं। यह जनहित में दूरगामी कदम होगा।
6. स्कूलों-कॉलेजों में नागरी **OCR, Open Office,** Library Info System, Accountig Software, School Management Software आदि उपलब्ध कराए जाएं।
7. **नागरी में कंटेट क्रियेशन** और Web Service इंटीग्रेशन और XML आदि मानकों पर भी काम किया जाए।
8. वेब पर डोमेन नेम नागरी में भी स्वीकार्य हों।
9. नागरी लिपि के बारे में जागरूक संस्थाएं एक जुट होकर तत्काल इन सिफारिशों को कार्य रूप देने के लिए भारत सरकार के संबंधित विभागों से संपर्क करें। निगरानी के लिए **watch-dog** संस्था बनाएं जो समय समय पर नागरी प्रयोग स्थिति और समस्याओं पर सव्रे कर परिणाम प्रकाशित करे, नीति अनुपालन के लिए दबाव डाले।
10. **'नागरी सांसद ग्रुप'** का गठन हो। प्रबुद्ध सांसद सदस्य इस मंच से नागरी लिपि और संस्कृति के संरक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।

विश्वलिपि के रूप में देवनागरी लिपि

–शिवाक्षमाला जानकीराम सुरंगे

'वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्तते'

आचार्य दण्डी

इस विश्व में सभी को भाषा जोडती है! सभी सजीव अपने विचारों को भाषा के माध्यम से जोडते हैं। भाषा यह आपसी मेल मिलाप का साधन है। जब यह भाषा लिखित स्वरूप में होती है। तो यह लिपि कही जाती है।

माना जाता है कि प्रथम भाषा विकसित हुई उसके पश्चात् लिपि का उदय हुआ! लिपि यह अपने विचारों को लिखित स्वरूप में सबसे जुड़ने का प्रभावी माध्यम होता है! काल और स्थान की इस सीमा के बंधन से भाषा को निकालने के लिए लिपि का जन्म हुआ।

यह लिपि किसी ईश्वर या देवता द्वारा निर्मित है यह माना जाता था। लेकिन सच तो यह है कि भाषा और लिपि का निर्माण इन्सान ने स्वयं किया है। देवनागरी लिपि की जन्म की अनेक कहानियाँ बताई जाती हैं। देवनागरी लिपि की व्युत्पत्ती का प्रश्न अभी तक अनिर्णीत है।

विश्व में देवनागरी लिपि से साधर्म्य रखने वाली अनेक भाषाएँ हमें दिखाई देती हैं।

★ **आचार्य विनोबा भावे :–** नागरी लिपि से बढ़कर वैज्ञानिक लिपि मैंने दुनिया में नहीं पाई।

(21 सितम्बर 1974)

देवनागरी लिपि संसार की सभी भाषाओं की वर्णाक्षरी के मुकाबले ज्यादा वर्णाक्षरों से बनी है। इसमें कुल मिलाकर 55 वर्णाक्षर है जो विश्व में सबसे अधिक पायी जाती है। देवनागरी में जो लिखा जता है वैसे ही पढ़ा जाता है यह विशेषता अन्य भाषा और लिपि में कम ही पाई जाती है।

★ **विल्यम जोन्सः–** देवनागरी अन्य किसी भाषा की तुलना में अधिक व्यवस्थित हैं। हमारी भाषा अंग्रेजी की वर्णमाला तथा वर्तनी बहुत ही अवैज्ञानिक तथा किसी रूप में हास्यस्पद भी है।

एक और ऐसा देखा गया हैं कि वैज्ञानिक पद्धति में मात्राए लगाई जाने के कारण देवनागरी के शिक्षंण में अधिक समय नहीं लगता। पोलिश, फ्रेंच और फिन्नी के विद्यार्थी कुछ दिनों में ही देवनागरी लिखना और पढ़ना सिख सकते हैं।

एशियायी भाषाओं में नेपाली ने तो देवनागरी लिपि को अपनी लिपि के रूप में स्वीकार किया हैं। जापानी, चीनी, कोरियन, बहसा, इन्डोनेशिया, मलाय आदि बर्मी भाषाओं की स्वनाओं को नागरी लिप्यंतरण में ठीक ठीक पठा जा सकता है। इन एशियायी भाषाओं की श्रेष्ठ रचना है देवनागरी में प्रस्तुत किए जाए तो एशियायी संपर्क साहित्यबन सकता है।

विदेशी भाषाओं के शिक्षण में भी देवनागरी अत्यंत सहायक सिद्ध होती दिखाई देती है। खास कर चीनी जापानी, रूसी भाषाएं तथा लिपियां सिखने के लिए देवनागरी यह महत्वपूर्ण कार्य करती है।

★ **महावीर प्रसाद द्विवेदी :–** देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता स्वंयसिद्ध है।

देवनागरी लिपि सरलता के कारण जनसंचार के लिये उपयोगी सिद्ध हो रही है। क्योंकि देवनागरी लिपि व्यावहारिक एवं गतिशील है। इस लिपि में आवश्यकतानुसार नवीन चिन्हों का विकास तथा समावेश सरलता से हो सकता है।

हमें अंग्रेजी तथा फारसी सिखना हो तो हर शब्द देवनागरी लिपि में लिखा जा सकता है। किन्तु संस्कृत और हिन्दी के कई शब्द है जो रोमन लिपि में लिखे जा सकते हैं।

जिस प्रकार हमने देवनागरी में जो लिखा है व्रैसे ही पढ़ सकते हैं ऐसा अरबी, रोमन तथा फारसी में नहीं होता इन लिपियों में लिखने और उच्चारण में अंतर दिखाई देता है।

राहुल सांस्कृत्यायन :– देवनागरी दुनिया की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है।

जावा, सुमात्रा, बाली आदि द्वीपों की लिपियाँ चिरकाल तक नागरी लिपि का ही विकसित रूप चिरकार से रही हैं। ब्रह्मा (म्यामनार), श्याम, कम्बोज (कम्पूचिया) आदि की लिपियाँ भी ब्राह्मी की पुत्रियां होने के कारण देवनागरी की बहिनें हैं। ऐसी जानकारी प्रसिद्ध विद्वान डॉ. कैलाश चंद्र भाटियाँ ने दी है। किन्तु हमारी लिपि को प्रचार की उदासीनता के कारण इन्डोनेशिया ने भाषा इन्डोनेशिया के लिए रोमन लिपि का स्वीकार किया है।

नागरी लिपि का प्रयोग करके हम बरमी भाषा सीख सकते हैं। तथा बरमी भाषा को नागरी लिपि जाने वालों के लिए उपयोगी बना सकते है।

देवनागरी लिपि को विश्व की लिपि बनाने के लिए जिस प्रकार के प्रयासों की आवश्यकता है उस प्रकार यह कार्य नहीं हो रहा है सरकार भी इस स्थिति उदासीन दिखाई देता है अगर यह उदासीनता कम होगी तो विश्व में देवनागरी लिपि का प्रसार और प्रचार तेजी से होगा। और हम और भी ज्यादा गर्व से कह सकते हैं कि देवनागरी लिपि यह भारत की सारे जगत को देन है।

शिवाक्षमाला जानकीराम सुरंगे
प्रा. वंदना दामोदर आरक.

पृष्ठ संख्या 29 का शेष भाग

9) हिंदी साहित्य सभा टोरंटो
10) नेपाल हिंदी साहित्य परिषद

आदि जैसी अनेक संस्थाएँ देश विदेश में हिंदी के प्रचार–प्रसार में जूटी हुई है। यह भाषा के साथ नागरी लिपि का प्रचार–प्रसार भी करती है।

उपरोक्त सभी जानकारी का इस्तेमाल करने के लिए हमारे कम्प्यूटर में यूनीकोड होना जरूरी है। वर्ना हिंदी का समग्र साहित्य हम नहीं देख पाते। यूनीकोड साफ्टवेयर इंटरनेट पर निशुल्क उपलब्ध कराया गया है। इसके अलावा भी कई **हिंदी टूल** मौजूद हैं जिनका हम अपने कम्प्यूटर में इस्तेमाल कर सकते हैं। यूनीकोड का **मंगल** या **रघु** फॉट अपने कम्प्यूटर में डाऊनलोड करने पर सारी सामग्री **copy** कर उसे प्रिंट करवा सकते हैं। या फिर उसे साफ्टवेयर में परिवर्तित (Convert) कर उसमें अन्य जानकारी जोड़ सकते हैं।

नागरी लिपि का यह विकास सूचना प्रौद्योगिकी के कारण हो पाया है। यह विकास देश की गरिमा को बढ़ाने वाला है। भारतीय लोगों में एकता निर्माण करने वाला है। यही नहीं इस कारण भारत के कई लोगों को रोजगार उपलब्ध हुआ है। अर्थात् हिंदी भाषा और नागरी लिपि केवल पढ़ी पढ़ाए जाने वाली भाषा नहीं है वह रोजगार निर्माण कर पेट की भूख मिटाने वाली बन गई है।

डॉ. हाशमबेग मिर्झा
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय
नलदुर्ग जि. उस्मानाबाद–413602 महा.
मोबा. 09421951786
ई–मेल : drmizrahm@gmail.com

आन्तर भारती

मूल तेलुगु

व्यथ

नीवु क्रोत्त युगपु युवकुडवि।
प्रियरालि, ज्ञापकाललो गानि, आमे चपलत्वं चूसि गानि कंट तडि पेट्टट नीकु शोभिंचदु।
नल वैपुला मब्बुलुमुडुतुन्नाई। मधुवसतंतपु वायुवु मेल्लमेल्लगा पयनिस्तोन्दि।
वेन्नल नलुवैपुला व्यापिंचिवुन्दि। नीवेमो प्रियरालिकि दूरगावुन्नावु, लेदा।
प्रियरालु, नीवु तट्ठकोलेनि विश्वासघातं चेसिवुण्डालि।
नी हृदयं लो प्रेम कोर्केलुन्नाइ सुखानि कोरटं
ओक क्रोत्तरकमैन नव्वुलु विरजिम्मुतुनत्र कल मात्रमे।
कानी, नेडु अवन्नी चेजारि, धर्मामीटरु
बण्ड राइ पैन पडि मुक्क मुक्कलु अइनट्ठ अइपोयाइ।
अश्रुवुलु पादरसं ला द्रोल्लि पोतुन्नाइ। इवेवी नी वंश लो लेवु।
आलोचिंचकु दीपं आरि पोतुन्दि। ज्ञापकाल पदुन्नैन मुल्लमोनलवले ग्रुच्चु कुन्टुन्नाइ।
इन्टिकप्पु पैन मौनं गा कूर्चुन्न ई पावुरालु एप्पुडैना एवरिनैना इला ज्ञापकं चेसुकुन्टाया?
-श्रीमती पारानंदी निर्मला

हिन्दी रूपांतर

व्यथा

तुम नये युग के तरुण हो, है नहीं देता तुम्हें शोभा, बहाना अश्रु
प्रिय की याद में, या बेवफाई में कि बदली घिर रही है,
वायु मंथर मधु बसंती बह रही है, चाँदनी आकाश में छिटकी हुई है।
और तुम हो दूर प्रिय से या कि प्रिय ने है किया विश्वासघाट कठोर तुमसे।
सरल तुम भावुक हृदय के जीव हो, दिल में तुम्हारे प्यार है, अरमान है,
है चाहना सुख की नई सुवर्णिमा बिहँसती जिन्दगी के स्वप्न है।
पर, आज चकनाचूर हो, ज्यों गिर पड़ा हो हाथ से
पाषाण पर जा ताप-मापक-यंत्र, बहते अश्रु,
पारे के सदृश, मानों रहा ही अब नहीं
कोई तुम्हारा वश न सोचो - दीप
बुझता जा रहा है, और बीती याद का
तीखा, नुकीला शूल चुभता जा रहा है ये कबूतर
जो कि छत पर मौन बैठे है, किसी की क्या कमियों याद करते हैं।

-श्रीमती पारानंदी निर्मला

नये साथी (आजीवन सदस्य)

1143 सुश्री उर्मिल मेहता
जे. के. प्रशिक्षण महाविद्यालय
कुजबानी (जम्मू)-18001

1144 श्री विजय कुमार मल्होत्रा
डब्ल्यू डब्ल्यू 167/S-F
मालिबु टाउन, सोहना रोड़
गुड़गाँव, हरियाणा-120018

1145 प्रा. सौ; शाहीन जमादार
हिन्दी विभागाध्यक्ष मिरज महाविद्यालय
मिरज जिला सांगली (महाराष्ट्र)

1146 जी तिरूपति राव
रामभद्रापुरम मंडल
भूशाया बलसा विलेज, विजय नगरम
आन्धप्रदेश

1147 श्री बी. आर राल्ते
Director Universal Hindi
Communication Centre
A-3/8, Chringn Veng Aizol
आइजोल (मिजोरम)

1148 Dr. Ashok Marde
Vivekanand Nagar, Tuljapur-413601
Osmanabad

1149 श्री गुलाम सूल कटटू भाई शेख
मार्डन कन्या माध्यमिक विद्यालय
भूषण नगर हिन्दू राष्ट्र चौक
गारखेड़ा परिसर, औरंगाबाद-431005

1150 प्रो. डॉ. लियाकत मियाँ भाई शेख
अखिलेश नगर प्लाट नं. 11
नये वस स्टैण्ड के पास - गंगापुर-431009
जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

1151 डा हनुमन्त राव ज्ञानदेव पाटिल
ऐशो प्रोफेसर हिन्दी विभाग
डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर
मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद-431001

1152 डॉ. राम अवतार शर्मा (पूर्व कुलसचिव)
5-6 शुभम् एन्क्लेव, सेन्ट एन्ड्रयूज स्कूल
रोड, बल्केश्वर - आगरा-4

1153 श्री लोचन मखीजा
(प्रबन्धक हिन्दी) भारतीय लघु उद्योग
विकास बैंक NA VARD सिडबी
जीवन श्री बिल्डिंग भूतल
पुणे सेन्ट्रल माल के गणेशखिंड मार्ग
शिवाजी नगर - पुणे-411005

1154 डॉ. बी सत्यनारायण
13-6-434/C/69 मारूति नगर
हैदराबाद-500008

1155 ठा. लक्ष्मण सिह
24-50/10, आकाश दीप ऊपर वल्ली
P.O. हैदर गुड़ा - हैदराबाद-50048

1156 श्री धर्मपाल नागरी
13-2-369/1, रहीमपुरा, हैदराबाद

1157 प्रिन्सीपल
गार्डियन कालेज ऑफ एज्यूकेशन
I.B.M. क्रासिंग, मैंन कोडवा रोड,
ज्योति रेस्टोरेन्ट के पास, कोडवा खुर्द
पूणे - 411048

1158 डॉ. श्रीमती सादका असलम नवाब 'सहर'
प्लैट नं. 2, प्रथम तल, मोहसिन मंजिल,
शास्त्री नगर, खोपोली-40203
जिला रायगढ़ (महाराष्ट्र)

1159 श्री बालासुब्रह्मणयन
776, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-1
दिल्ली-110091

1160 डॉ0 विनोद बब्बर
ए-2/9ए, हस्तशाल रोड
उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

नागरी लिपि संगोष्ठी रायपुर का विवरण

नागरी लिपि परिषद, नई दिल्ली एवं पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में **"राष्ट्रभाषा के संवर्धन में नागरी लिपि का योगदान"** विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 8 मार्च, 2011 को साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला में आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम के मुख्य-अतिथि माननीय श्री बद्रीधर दीवान, विधयक एवं अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ राज्य औद्योगिक विकास निगम, छत्तीगगढ़ शासन, रायपुर थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रो. शिव कुमार पांडे ने किया। प्रमुख-वक्ता के रूप में प्रो. राजेन्द्र मिश्र, वरिष्ठ साहित्यकार एवं समीक्षक उपस्थित थे। विशिष्ट-अतिथि के रूप में पदम्श्री डॉ. महादेव प्रसाद पांडे एवं वरिष्ठ पत्राकार श्री रमेश नैयर, अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ हिंदी-ग्रंथ अकादमी, रायपुर उपस्थित थे।

अतिथियों का स्वागत वैदिक मंत्रोच्चारण एवं शंख-ध्वनि से किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ उपस्थित अतिथियां द्वारा माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप-प्रज्वलित कर किया गया।

अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान शॉल एवं श्रीफल भेंटकर किया गया। तत्पश्चात कार्यक्रम की रूपरेखा संयोजक डॉ. व्यास नारायण दुबे ने प्रस्तुत किया। इसके पश्चात विषय-प्रवर्तन डॉ. तिर्थेश्वर सिंह एवं डॉ. शैल शर्मा ने किया।

प्रमुख-वक्ता प्रो. राजेन्द्र मिश्र ने अपने सारगर्भित उद्‌बोधन में विस्तार से भाषा और लिपि को स्पष्ट करते हुए कहा कि भाषा मौखिक अभिव्यक्ति है और लिपि उसको स्थाईत्व प्रदान करती है। भाषा और बोलियों के भेद को स्पष्ट करते हुए आजादी के आंदोलन से लेकर राष्ट्रभाषा हिंदी के स्वरूप को विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट करते हुए उन्होंने बताया कि लिपि भाषा को संरक्षित करती है। साथ ही उन्होंने नागरी लिपि की विशेषताओं पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। इसी संदर्भ में विशिष्ट-अतिथि पद्मश्री डॉ. महादेव प्रसाद पांडे ने कहा कि मैं तो आयुर्वेदिक का छात्र रहा हूँ, किंतु भाषा और साहित्य से विशेष लगाव होने के कारण भाषा और लिपि के रहस्यों को समझने में मुझे आसानी हुई। उन्होंने कहा कि भावनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम लिपि है। भाषा 'शरीर' है औश्र लिपि उसकी 'आत्मा' है।

वरिष्ठ पत्रकार एवं अध्यक्ष, श्री रमेश नैय्यर, छत्तीसगढ़ हिंदी-ग्रंथ अकादमी, रायपुर ने कहा कि आजादी की लड़ाई में अहिंदी भाषियों ने हिंदी को आधार बनाकर संघर्ष का शंखनाद किया था और पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोने का प्रयास किया था, जो आगे चलकर राष्ट्रभाषा का आधार और देवनागरी लिपि ने तात्कालिक स्थिति में सभी भाषियों को जोड़ने का कार्य किया है। आज हम सब आजादी का उपयोग कर रहे हैं, वह इन्हीं तपस्यिों का योगदान हैं, जो हिंदी और देवनागरी के रूप में हमें प्राप्त हुआ है।

मुख्य-अतिथि के आसंदी से बोलते हुए श्री बद्रीधर दीवान ने कहा कि आजादी की लड़ाई के समय स्वतंत्रता प्राप्ति के तत्काल बाद ही यदि भारत में राष्ट्रभाषा हिंदी की घोषणा हो जाती, तो

शेष भाग पृष्ठ संख्या 51 पर

पुस्तक समीक्षा

पगडंडिया पहाड़ की

लेखक : डॉ0 अकेलाभाइ

प्रकाशक : पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी शिलांग 793006 (मेघालय)
पृष्ठ : 144, मूल्य : 125 रू0

'पगडंडिया पहाड़ की' डॉ0 अकेलाभाई द्वारा सम्पादित और पूर्वोत्तर अकादमी, शिलांग द्वारा प्रकाशित 44 रचनाकारों द्वारा रचित ऐसा अनूठा काव्य संग्रह है, जो पूर्वोत्तर की संस्कृति को प्राकृतिक पृष्ठभूमि में अपने प्रभावशाली चित्रण से पाठकों को 144 पृष्ठों तक रमाता रहता है। इस आलोच्य काव्य संग्रह में पूर्वोत्तर के रचनाकारों की हिंदी के प्रति जागरूकता और सहजता को सहज ही देखा जा सकता है। सभी कवियों ने हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि के माध्यम से प्रकृति के नए नए रंग रूपां को रमणीय व चिचाकर्षण दृश्यों को सीधी सरल शैली में जन जन तक पहुँचाने का जो भागीरथ प्रयास किया है, वह अद्वितीय है। काव्य संग्रह का आरम्भ श्री रंजन की 'आदर्श शुभ कामनाएं' तथा 'फांग रची सृष्टि' से होता है। इन कविताआं में प्रकृति को नये रूप, रंग में देखा गया है, जो मन की सहज अनुभूतियों को समेटकर पाठक के मन में प्रभावशाली वातावरण की सृष्टि करती है। अतुल कुमार माथुर की 'परिवर्तन' कविता भी नये प्रतीकां व विम्ब विधान और नई कल्पना शक्ति से पाठक को बाँधे रखती है। प्राश की फसल को कवि ने प्राकृतिक चित्रण द्वारा सींचा है।

पर्वतों के शिखरों से घिर लोकताल झील (मणिपुरी स्थल) अहिन्दी भाषी कवि पी.के मिश्रा ने प्रकृति के विविध चित्रों के साथ सामाजिक संबंधों का तादात्म्य तथा झील की दुर्दशा व व्यवस्थाओं का यथार्थ चित्रांकन इस काव्य संग्रह की अविस्मरणीय कविता है।

डॉ0 सुशील कुमार की धुमिल होती मानवता में गिरते हुए मानव मूल्यों का यथार्थ चित्रांकन जिस प्रभावशाली ढंग से किया गया है, वह इस काव्य-संग्रह का आकर्षा है। किशनी पंडिता की 'मेरा वतन कश्मीर' कविता में स्मृतियों की पृष्ठ भूमि में पाठक खो जाता है और आंतकवाद पर प्रा. बी. पी. सिंह की कविता, मंजुगुप्त की 'दुःख' शीर्षक में दुखकी नई परिभाषा नारी को अपनी शक्ति पहचाने की प्रेरित करती है। व्यक्तिगत जीवन पर मधु मोह भाव उड़ान डॉ0 प्रबांध झिंगन का नया काल्पनिक चिन्तन है, वही अनीता पंडा ने प्राकृतिक अंचल की पृष्ठ भूमि में परिवर्तित वातावरण को नए स्वर दिये हैं। 'अकेलापन' कविता में डॉ0 शिप्रावस ने जीवन के निराश पलों के भीतर आशा की किरण का संदेश पाठकों को नई प्रेरणा देता है अपनी प्रतीकात्मक शैली में।

काव्य संग्रह के अंत में डॉ0 अकेलाभाई की 'वह' और 'मुखौटा' शीर्षक से दो कविताएँ संकलित है। अपनी लाक्षणिक और प्रतीकात्मक शैली में कवि ने बड़े ही सुन्दर ढंग से प्राकृतिक अंचल से दिए गए संदेश कविता के प्राण हैं। राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक दृष्टि वाले व्यक्ति जातीयता, धर्म आदि की संकीर्णता पर मौन रहना ही उचित समझता है। कवि की यह रचना अपनी व्यंजना शैली में बहुत कुछ कह जाती है सिकी गूंज ही कवित का मूल उद्देश्य है, काव्य का प्रयोजन है।

आलोच्य पुस्तक की सभी रचनाएं पूर्वोत्तर अचंल के मानव मन के भीतर व प्रकृति के विविध रंग रूपों का यथार्थ चित्रांकन करती है। मेघालय राज्य जहां हिंदी का कम्पोजिटर और प्रूफ रीडर का मिलना असम्भव सा है, वहाँ देवनागरी लिपि में काव्य संग्रह का प्रकाशन डॉ0 अकेलाभाई ने कर हिंदी भाषा और देवनागरी के विकास में जिस लगन, निष्ठा, साहस से परिश्रम किया है, सम्पादक सभी कवि निश्चित रूप से प्रशंसा के पात्र हैं। पूर्वोत्तर अचंल के नवोदित कवियों की प्रतिमा को उभारने का इस संग्रह में सम्पादक जी ने जो प्रयास किया है इसके लिए डॉ0 अकेलाभाई के इस प्रकाशन पर बार बार धन्यवाद। यह आलोच्य पुस्तक निश्चय ही पाठकों को पसन्द आएगी। जो प0 ही नहीं अपितु संग्रहणीय भी है।

डॉ0 ज्ञान प्रकाश सैनी

पृष्ठ संख्या 49 का शेष भाग

हमें यह दिन देखना नहीं पड़ता। छत्तीसगढ़ सरकार ने छत्तीसगढ़ी को राज्यभाषा का दर्ज़ा दिया है, किंतु छत्तीसगढ़ी को जो सम्मान मिलना चाहिए था, वह आज तक नहीं मिला, जबकि छत्तीसगढ़ी छत्तीगढ़ के जन-जन की भाषा है।

कार्यक्रम के प्रेरणा-स्रोत एवं अध्यक्ष, कुलपति प्रो. शिवकुमार पांडे ने कहा कि मैं तो विज्ञान का विद्यार्थी हूँ। आज मैं इस कार्यक्रम में नहीं होता, तो भाषा के स्वरूप से अनजान रह जाता। मुझे खेद है कि आज विद्यार्थी हिंदी में ही असफल हो रहे हैं। यह संतोषजनक परिणाम नहीं है। कार्यक्रम का आभार डॉ. कौस्तुभ मणि द्विवेदी प्रस्तुत ने किया।

भोजनावकाश में पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय अतिथि-गृह में अतिथिगण एवं प्रतिभागियों ने भोजन के साथ छत्तीगढ़ी व्यंजन का आनंद लिया।

द्वितीय सत्र् के अध्यक्ष रहे डॉ. तिर्थेश्वर सिंह और आधार वक्तव्य डॉ. फिरोजा जाफ़र अली, डॉ. सुधीर शर्मा, डॉ. शैल शर्मा, डॉ. मधुलता बारा, डॉ; आरती पाठक, डॉ. कौस्तुभ मणि, डॉ. सोनल मिश्र ने दिया। इस कार्यक्रम में डॉ. गिरीजा शंकर गौतम, पंकज पांडे, डॉ. जया सिंह, डॉ. मोतीलाल साकार, डॉ. रश्मि यदु, डॉ. मेठराम थडानी, आर्ची दुबे, दुर्गा शर्मा, सुनयना ब्रजपुरिया, वशिष्ट प्रधान, संगीता आदित्य, श्रीमती माधुरी व्यवहारे, श्रीमती शुचिता देशमुख, सरिता भगत, मीना बंजारे, लता मारकंडे, आशिका बोरकर, रोशन केरकेट्टा, बबीता यादव, आरती पांडे, पुष्पा चेलक, रूबी पांडे, मोहिनी सत्यभामा, कुल चालीस प्रतिभागियों ने अपने शोध-आलेख पढ़े। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

समाचार सार

★ संरक्षित होंगी देश की सौ दुलर्भ भाषाएं

अंग्रेजी सीखने-सिखाने के इस दौर में परंपरागत भाषाएं और बोलियां खत्म नहीं हुई हैं, बल्कि उन्हें बोलने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। ये भाषाएं क्षेत्र विशेष की सांस्कृतिक पहचान भी हैं। इसलिए इनके संरक्षण के लिए राजनीतिक तौर पर भी मांग उठती रहती है। इसी के चलते केंद्र सरकार ने ऐसी 100 दुर्लभ भाषओं को चिन्हित किया है, जिन्हें दस हजार या इससे अधिक लोग बोलते हैं। इन भाषाओं के संरक्षण और विस्तार के लिए भाषा विकास योजना को अंतिम रूप दिया जा रहा है। भविष्य में अरबी, पस्तो, काबुली के साथ-साथ झारखंड के आदिवासियों की खाड़िया जैसी भाषाओं के संरक्षण पर भी काम होगा।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अनुसार, झारखंड और उड़ीसा में खाड़िया बोलने वाले करीब ढाई लाख लोग हैं। हिमाचल में 23 हजार लोग लाहौली और एक लाख लद्दाखी बोलते हैं। उप्र और बिहार में अरबी बोलने वाले करीब 52 हजार हैं, जबकि दिल्ली और जम्मू-कश्मीर में काबुली या पस्तो बोलने वालों की संख्या 11 हजार से अधिक है। इसी प्रकार झारखंड व उड़ीसा में 'हो' भाषा जानने वाले दस लाख, कुरुख जानने वाले साढ़े सात लाख व मुंदरी का ज्ञान रखने वाले एक लाख से ऊपर हैं। लाहंदा भाषा को हरियाणा और कश्मीर में करीब 92 हजार लोग बोलते हैं।

संविधान क आठवीं अनुसूची में सिर्फ 22 भाषाएं हैं। और उनके संरक्षण के उपाय किए जाते हैं। इन सौ चुनिंदा भाषाओं को अब भाषा विकास योजना के जरिए संरक्षित किया जाएगा।

मानव संसाधन मंत्री कपिल सिब्बल सात जून को राज्यों के शिक्षा मंत्रियों के सम्मेलन में इस प्रस्ताव को मंजूरी के लिए रखेंगे। पहले चरण में इसमें से 20 भाषाओं के संरझण के लिए कदम उठाए जाएंगे।

★ प्रेमचंद : कहानी रचनावली (6 खंड) का लोकार्पण

कमल किशोर गोयन का के सम्पादन में तथा साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'प्रेमचंद : कहानी रचनावली' (6 खंड) का लोकार्पण अकादमी के सभागार में 28 अप्रैल, 2011 को सम्पन्न हुआ। इसके लोकार्पण का कार्य किया – महीपसिंह विश्वनाथप्रसाद तिवारी, गोपालराय, देवेन्द्र दीपक और भारत भारद्वाज ने। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष महीपसिंह तथा अन्य सभी वक्ताओं ने कमल किशोर गोयन का के आधी शताब्दी के प्रेमचंद सम्बन्धी कार्यो की प्रशंसा के साथ उन्हें 'प्रेमचंद विशेषज्ञ' की मान्यता दी और रचनावली की मौलिकता, समग्रता एवं प्रामाणीकता की भरपूर प्रशंसा की। गोयनका ने अपनी इस प्रेमचंद -यात्रा में आये संकटों की चर्चा के साथ रचनावली की विशिष्टता का समप्राण विवेचन किया। डॉ. ब्रजेन्द्र त्रिपाठी (उपसचिव, साहित्य अकादमी) ने कार्यक्रम का संयोजन किया और सबका धन्यवाद किया।

(डॉ0 देवेन्द्र कुमार देवेश)

★ भारतीय भावधारा के कथाशिल्पी – प्रेमचंद्र पुस्तक का लोकार्पण

दिनांक 18 मई को साहित्य अकादमी के सम्मेलन कक्ष में मुंशी प्रेमचन्द की रचनाओं पर एक विवेचनात्मक कृति **भारतीय भावधारा के कथाशिल्पी प्रेमचन्द** का लोकार्पण साहित्य अकादमी के मान्य विद्वान **श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी** के करकमलों द्वारा हुआ। इस कृति की रचनाकार मिजोरम निवासी वर्तमान में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान दिल्ली में सेवारत **प्रो. सी. ई. जिनी** हैं। सुखद प्रसंग यह है कि इस समारोह का प्रारंभ और अंत मिजो गीतों से हुआ जिन्हें कलकण्ठी **डॉ. ईवालिन ललरेम सांगी** ने प्रस्तुत किया। प्रारंभ में पादरी **श्री खियाङते** ने मिजो भाषा में ईश वन्दना करते हुए मंगलाचरण किया।

उक्त कृति पर बोलते हुए हिन्दी जगत के सुख्यात हस्ताक्षर एवं प्रेमचन्द साहित्य के प्राधिकारी विद्वान **डॉ. कमल किशोर गोयनका** ने प्रेमचन्द्र के विषय विवेचन प्रस्तुतीकरण और शब्दों के निहितार्थ पर विशिष्ट प्रकाशप्रक्षेप किया। **डॉ. रामजन्म शर्मा** ने अनेक कहानियों का अपना विवेच्य बनाते हुए प्रेमचन्द की वर्तमान सन्दर्भो में प्रासंगिता को निर्धारित किया। नागरी लिपि परिषद के महामंत्री **डॉ. परमानन्द पांचाल** ने शिक्षा क्षेत्र में गृहीत कहानियों से उदाहरण देते हुए उनकी सामाजिक आर्थिक संदर्भो में व्याख्या की। **प्रो. वी. आर. जगन्नाथन** ने प्रेमचदंद के कथा साहित्य के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला। **श्री बल्देवराज कामराह** तथा **श्री कृष्णा' कुमार ग्रोवर** ने प्रो. जिनी की कृति की सराहना करते हुए उन्हें शुभाशीष दिया।

आकाशवाणी दिल्ली की **श्रीमती ललरिन सांगी रालते** ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन केन्द्रीय हिन्दी संस्थान दिल्ली में रीडर डॉ. अपर्णा सारस्वत ने क्रिया।

अतिथि सत्कार श्री पंकज गुप्ता ने सुरूचिपूर्ण व्यञ्जनों तथा पनीर पकोडे, समोसे, काजू बरफी आदि का प्रबंध किया। फ्रूटी पेय की मधुरता से आप्यायित उपस्थित जनों ने मधुरेण समापयेत की स्वानुभुति पर साधुवाद व्यक्त किया।

★ बर्मिंघम (इंग्लैंड) में आयोजित यू. के. क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन – 2011

इंग्लैंड के प्रसिद्ध नगर बर्मिंघम में दिनांक 24 जून से 26 जून 2011 तक एस्टन विश्वविद्यालय के ग्रेट हॉल में "विश्व में हिंदी की दश और दिशा" विषय पर एक भव्य सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें इंग्लैंड के हिंदी लेखकों और साहित्यकारों के अतिरिक्त कई देशों से प्रतिनिधि लेखक सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन का उद्घाटन ब्रिटेन में भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री नलिन सूरी ने किया। इस सम्मेलन में प्रमुख रूप से दो बीज भाषण हुए। पहला बीज भाषण "हिंदी कीं दशा और दिशा" पर दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल ने दिया और दूसरा बीज भाषण नागरी लिपि परिषद् के महामंत्री डॉ. परमानंद पांचाल ने दिया, जिसका विषय था "विश्व की सर्वोत्तम लिपि, देवनागरी लिपि। डॉ. पांचाल ने पावर पाइंट की सहायता से अपने विषय कों चित्रात्मक" और रोचक ढंग से प्रस्तुत किया।

सम्मेलन में देश-विदेश से आए अनेक विद्वानों प्राध्यापकों और मनीषियों ने हिंदी की वर्तमान स्थिति और उसे नवयुवकों में लोकप्रिय

बनाने के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किए। श्री जनार्दन अग्रवाल, श्रीमती कादम्बरी मेहरा, श्री ऐश्वज कुमार, श्रीमती जय वर्मा, श्री गगन शर्मा (दिल्ली), श्री ज्ञानसिंह मान (लुधियाना), श्री वेद मित्र, श्री मेहन्द्र वर्मा, श्रीमती लुटमीला खोखलोया (रूस), डॉ. बोरिस जाखारीन (रूस), कु. येकातेरीना पनिना (रूस), डॉ. अर्चना पैन्थूली (डेनमार्क), डॉ. लोम्पेर (इज्राइल), डॉ. श्रीराम परिहार, श्रीमती बन्दना मुकेश, डॉ. कविता वाचकनवी, श्री मोहन लाल गौतम (हालैंड), फेचस्का ओरसिनी, श्रीमती उषा राजे सक्सेना (लंदन), श्री राकेश दुबे, श्रीमती पुष्पा सिंह बिसेन, श्रीमती शिखा वार्ष्णय प्रभृति विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अन्य वक्ताओं में प्रमुख थे प्रो. कृष्ण कुमार, श्री आलिफ इब्राहीम (मंत्री), स.के.बी. एल सक्सेना, श्री पवन बुधवार डॉ. श्याम मनोहर पांडेय (इटली), श्री राकेश पांडेय (दिल्ली), सुश्री राकेश शर्मा (उपसचिव विदेश मंत्रालय, भारत), श्री तेजेन्द्र शर्मा (लंदन), श्री आनन्द कुमार (सांस्कृतिक अताशे), श्री केशरीनाथ त्रिपाठी (पूर्व विधान सभा अध्यक्ष उत्तर प्रदेश) आदि। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम और कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता श्री केशरीनाथ त्रिपाठी ने की। भारत के उप उच्चायुक्त श्री राजेश एन. प्रसाद के समापन भाषण के बाद तीन दिवसीय हिंदी समारोह सम्पन्न हो गया।

इस सम्मेलन की प्रमुख विशेषता यह रही कि युवापीढ़ी को हिंदी और भारतीय संस्कृति के साथ जोड़ने का सार्थक प्रयास किया गया। भारतीय उच्चायोग लंदन के सहयोग से डॉ. कृष्ण कुमार के कुशल नेतृत्व में बर्मिंघम का यह आयोजन अत्यन्त सफल रहा।

★ आस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में हिंदी सम्मिलित

हिंदी के लिए यह गौरव की बात है कि आस्ट्रेलिया में भारतीयों के बढ़ते हुए महत्व को देखते हुए, विक्टोरियन राज्य सरकार ने आस्ट्रेलिया सरकार के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में हिंदी को शामिल करने का निर्णय किया है। वहां की 11 भाषाओं में भारत की राष्ट्र भाषा हिंदी को भी स्थान दिया जा रहा है, यह विश्व में हिंदी के बढ़ते वर्चस्व का ही परिणाम है।

★ चीन में संस्कृत भाषा के प्रति रूचि फिर से बढ़ी

बौद्ध धर्म के माध्यम से चीन में पहुंची संस्कृत भाषा के लगभग 200 हजार वर्ष बाद चीन में फिर से बौद्ध शास्त्रों के अध्ययन में रूचि उत्पन्न हुई है, और बौद्ध धर्म से सम्बन्धित अनेक केन्द्रों से तथा तिब्बत में विद्यमान लम्बे समय से विस्मृत पाण्डुलिपियों के हाल ही में प्राप्त होने पर चीन विद्वानों में इस प्राचीन भाषा के अध्ययन के प्रति पुनः जागृति पैदा हुई है। बीजिंग के पीकिंग विश्वविद्यालय ने स्नातक और स्नातकोतर दोनों स्तरों पर प्रतिवर्ष 60 से अधिक चीन छात्रों को प्रशिक्षण देने का एक महत्वकांशी कार्यक्रम तैयार किया है, जिससे कि सैकड़ों पाण्डुलिपियों के अनुवाद में सहायता देने के लिए शोधार्थियों का एकदल तैयार किया जा सकें।

पीकिंग विश्वविद्यालय में संस्कृत के अध्ययन का एक लम्बा इतिहास रहा है। 1960 में स्थापित इस विभाग में प्रसिद्ध भारत विद्याविद् श्री जीक्शानलिन स्वयं ही दर्जनों ग्रंथों का अनुवाद किया और चीन में भारतीय सांस्कृतिक का दीप पुनः प्रज्वलीत किया।

आपके पत्र

● महोदय,

नगारी लिपि परिषद के 33वें अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन के आयोजन की रिपोर्ट प्राप्त हुई। रिपोर्ट से ज्ञात हुआ कि सम्मेलन में नागरी लिपि के बारे में काफी गंभीर विचार-विमर्श हुआ है और सम्मेलन सफल रहा है। कृपया इस सफल आयोजन के लिए बधाई स्वीकार करें।

भारतीय भाषाओं के बीच अंतसंबंधों को सुदृढ़ बनाने और भाषायी सौहार्द के लिए जिन भाषाओं और बोलियों की स्वयं की कोई लिपि नहीं है, उनको नागरी लिपि अपनाने हेतु तैयार करने के काम को एक चुनौती के रूप में लेना होगा। यह सच है कि नागरी लिपि को स्वीकार करने से इनके अस्तित्व को समाप्त होने से बचाया जा सकता है।

कैलशचन्द्र पन्त

● हिन्दी प्रदेशों में भी नागरी प्रचर आवश्यक है।

मान्यवर,

नागरी संगम के अंक 129वें अवलोकन से परिषद के बृहद कार्यक्षेत्र एवं कार्यक्रमों की विपुलता का आभास मिला। गत वर्ष में शिलांग (मेघालय) पाटोदा (महा.) जम्मू औरंगाबाद, हैदराबाद, भुवनेश्वर (उड़ीसा) गंगटोक (सिक्किम) एवं रायपुर (छत्तीसगढ़) की नागरी संगोष्ठियों की सूचना मिली तथा कोरापुट (उड़ीसा) औरंगाबाद आदि में आयोजित प्रशिक्षणों का विवरण पढ़ा। साथ में तेतीसवें नागरी लिपि सम्मेलन की सविवरण वृत्त ज्ञात हुआ।

नागरी लिपि और हिन्दी भाषा राष्ट्रीयता का प्रतीक हैं। विगत वर्षों में अहिन्दी भाषा भाषी क्षेत्रों में आयोजित कार्यक्रम परिषद के प्रशंसनीय प्रयास हैं बंगलौर, अहमदाबाद, शिलांग और लोणावला सम्मेलन परिषद के कार्यकर्ताओं के विशिष्ट परिश्रम के प्रतिफल हैं।

भारत के अहिन्दी भाषी प्रदेशों में नागरी प्रचार एवं कार्यक्रम करते हुए हिन्दी प्रदेशों में नागरी की स्थिति के प्रति भी सजगह रहें। हिन्दी भाषी प्रदेशों के नगरों और महानगरों की स्थिति में आज बड़ा बदलाव आ रहा है। **आज का शिक्षार्थी रोमन के प्रति** आकर्षित है नागरी के प्रति अनासक्ति और नौकरी के मोह ने उसे रोमन भक्त बना दिया है। स्थिति इतनी असह है कि वे अपना नाम भी नागरी में शुद्ध लिखने में असमर्थ हैं। नागरी लिपि के क्षेत्र की परिषद की उपेक्षा बहुत मँहगी पड़ सकती है। यह हमारे शिक्षाथियों को नागरी लिपि से असम्पृक्त रखने में सहायक हो रही है।

मेरा विनम्र निवेदन है कि हिन्दी भाषी और अहिन्दी भाषा भाषी दोनों ही हमारे क्षेत्र में हमें दोनों में ही नागरी कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए और नवीन पीढ़ी को नागरी प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

डॉ. वनवारी लाल पाठक

● 'नागरी संगम' जनवरी-मार्च, 11 के अंक में आपका सम्पादकीय तर्कसंगत हैं और व्यावहारिक भी। आपने नागरी लिपि को लिपि की सर्वश्रेश्ठ लिपि कहा है, जो वास्तव में है। महात्मा गांधी ने इस सत्य को बार-बार कहा था कि नागरी लिपि सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है। आपने इसे राष्ट्र-लिपि तथा लिपि बनाने का जो प्रस्ताव किया है मैं उसा स्वागत करता हूँ और चाहता हूँ इस ओर आप की संस्था प्रयास करती रहे। स्वस्थ होंगे।

डॉ. कमल किशोर गोयनका

● नागरी लिपि परिषद की सुन्दर और प्रतिष्ठित पत्रिका **'नागरी संगम'** का अंक 129 मिला। धन्यवाद।

मैंने इसे भी आद्योपांत देखा। आप लोगों ने बड़ी मेहनत से इसे तैयार किया है। सभी लेख आदि रोचक और ज्ञानवर्धक लगे। विभिन्न चित्रों और लेखों आदि से परिषद की गतिविधियों की झलक भी मिली। मार्च, 2011 में आपने लोनावाला में अपना सम्मेलन भी आयोजित किया। इस सम्मेलन के अवसर पर परिषद द्वारा प्रकाशित 'स्मारिका' की एक प्रति मुझे भी भिजवाने की कृपा करें।

कृष्ण कुमार ग्रोवर

● देवनागरी के प्रथम प्रचारक, आराधक, उन्नायक के द्वारा भरे गये हुँकार कि - "देश की सभी भाषायें नागरी लिपि में लिखे जायें" पढ़कर लगा कि आज भी नागरी लिपि परिषद निःसंकोच उन्हें हमारे "देश के लौह-पुरुष" की आख्या से विभूषित करे तो पं0 गौरीदत्त के प्रति रामपाल पांचाल के मनोभावों का समुचित मूल्यांकन माना जायेगा। इसे वास्तविक अमली जामा पहनाने की सक्रियात्मक सहयोग मेरे विचार से नागरी परिवार के प्रत्येक सदस्यों को समेकित रूप से विचार एवं मंथन करना चाहिये-क्योंकि यही उनके प्रति नागरी परिवार की सच्ची सद्भावना एवं सम्मानपूर्ण श्रद्धांजली होगी हमें केन्द्र सरकार से भी उनके अवदानों का संस्करण कर उन्हें भी "भारत-रत्न" की उपाधि दिलवाने के विषय में गम्भीरता पूर्ण विवेचन एवं प्रभावी कदम उठाना भी नागरी परिवार की नैतिक जिम्मेदारी कही जायेगी।

आपकी 'सम्पादकीय उद्गार' 'सितारे हिन्द' राजा शिव प्रसाद पाटिल जी द्वारा कसौटी पर देवनागरी का मूल्यांकन, जफर साह सूचना और देवनागरी के प्रति उनकी भविष्य की उम्मीदें, सप्तभगिनी प्रदेश की 'आन्तर भारती' समाचार सारों की सारगर्भित प्रयासों के सक्रियात्मक रूपों ने मुझे आगत भविष्य में एक नवीन परिवर्तनों का मार्ग प्रशस्त कर अग्रसर होकर नागरी के उद्देश्यों को आगे से आगे ले जाने में काफी सहायक होगी।

आगरा में गुलाब राय की जयन्ती, बर्धा का इकत्तीसवाँ सम्मेलन, बालकवि बैरागी का संदेश, नव-लेखक शिविर, समीक्षायें, संगोष्ठियाँ जो विभिन्न स्थानों पर हुई है उनसे मुझे ऐसा लगता है कि गणेश शंकर विद्यार्थी जी के मनोभावों को अत्यंत ही गम्भीरतापूर्वक लेकर ठोस एवं समय की मांग के मद्देनजर वाजिब कदम आगे बढ़ाये जाने चाहिये। समय-समय पर प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन भी विशिष्ट प्रभावशाली होता है क्योंकि यह भी एक "ध्रुव-सत्य" प्रयास कहा जाता है।

देवेश मिश्र
आचार्य एवं सचिव

नागरी लिपि परिषद के प्रकाशन

1.	भाषा इण्डोनेशिया	श्री चन्द्रदत्त पालीवाल	रू० 20/-
2.	हिन्दी चीनी प्राइमर	श्री हरप्रसाद राय	रू० 25/-
3.	इतावली भाषा प्रवेश	श्री मदन लाल (सजिल्द)	रू० 100/-
		(अजिल्द)	रू० 60/-
4.	रूसी भाषा प्रवेशिका	श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा	रू० 40/-
5.	सिंहल स्वयं शिक्षक	कु० बी० एम० दशनायक	रू० 20/-
6.	जापानी भाषा प्रवेशिका	क्यूबा दोई	रू० 20/-
7.	फारसी भाषा प्रवेशिका	श्री आचार्य धमेन्द्रनाथ	रू० 80/-
8.	कन्नड़ भाष प्रवेशिका	डॉ० एम० रामचन्द्र	रू० 40/-
9.	तेलगु भाषा प्रवेश	डॉ० भीमसेन निर्मल	रू० 50/-
10.	कश्मीरी भाषा प्रवेश	प्रो० चमनलाल सप्रू	रू० 50/-
11.	आधुनिक अरबी	प्रो० एम० ए० रहमान	रू० 20/-
12.	नागरी लिपि की वैज्ञानिकता सं०	डॉ० मलिक मौहम्मद	रू० 80/-
13.	त्रिभाषा बोधनी (पूर्वांचल की, खामति, देउरी) और मिसिग आगम भाषाएं)	डॉ० कोण्डिन्य	रू० 60/-
14.	भारतीय भाषाओं की सहलिपि नागरी	(सजिल्द)	रू० 100/-
	सं० डॉ० रमेश भारद्वाज	(अजिल्द)	रू० 50/-
15.	नागरी संगम (विनोबा जन्मशताब्दी विशेषांक) (आजीवन सदस्यों के लिए 25/- रूपये मात्र)		रू० 50/-
16.	नागरी संगम - त्रैमासिक (नागरी लिपि परिषद् की मुखपत्रिका) (एक प्रति 20/- रूपये - वार्षिक शुल्क 75/- रूपये)		

R.No. 45855/78

सन् 1968 - पंजीकृत विद्यापति संस्थान द्वारा संचालित
दिल्ली विद्यालयों के अतिरिक्त भारत व हरियाणा
सरकार से मान्यता प्राप्त

गुडगाँवा स्थित के० आई० आई० टी० (KIIT)

(KAMRAH INTERNATIONAL INSTITUTE OF TECHNOLOGY)
M. D. UNIVERSITY-AFFILIATED REGULAR COLLEGES

हरियाणा राज्य को एक उत्कृष्ट शिक्षा संस्थान की सेवाएँ प्रदान करने के प्रयासरत हैं।

KIIT GURGAON

with FOLLOWING REGULAR AFFILIATED COLLEGES

KIIT College of Engineering
B.Tech (ECE, CSE, IT EE) & MBA.

KIIT College of MCA & MBA

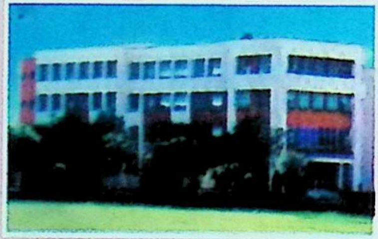

KIIT College of Higher Education
(BBE, BBA, BCA)

KIIT College of Education
(B.Ed., B.El, Ed & MEd)

Address : KIIT Campus, Sohna Road, (Near Bhondsi), Gurgaon. (Haryana)
Phone : 0124-2265266, 2265265, 0124-3949342, 09811626767, Fax : 0124-2265249
Visit us at www.kiit.in or write to info@kiit.in

Vidyapati Sansthan (New State Academy)
Zone H-4, Pitam Pura, Near Telephone Exchange
Saraswati Vihar, Delhi-110034
Phone : 011-27011619, 27016744, 27028105
Fax : 011-27029156

नागरी लिपि परिषद् के लिए डॉ० परमानन्द पांचाल मंत्री द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा
गुप्ता इंटरप्राइजेज 2023, कूचा चेलान, दरियागंज, नई दिल्ली-2 द्वारा मुद्रित